# समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

सितम्बर २००४ ♦ वर्ष ५४ ♦ अंक ९ ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए

● अपेक्षाएं : युवागण ● शिक्षा व संस्कार ● बढ़ते कदम ● नई संस्कृति ● चोखाराम चोलको
कृष्णदिवानी मीरा ● नैतिकता की क्रूरता ● उड़ीसा में प्रहार १९८० ● सहनशीलता

नई अखिल भारतीय समिति
कार्यकारिणी व स्थायी समिति

प्रादेशिक सम्मेलनों की
सक्रियता व अन्य अनेक

*Insync with Nature...*

# RUNGTA MINES LIMITED

**Mine Owners, Exporters & Sponge Iron Manufacturer**
**(A Pioneer House for Minerals)**

- ***IRON ORE** – BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE** – BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON** – LUMPS & FINES*

## *CORPORATE OFFICE*

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA – 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 – 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

## *CENTRAL MINES OFFICE*

BARAJAMDA – 833221, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06596- 262221/262321; Fax: 91-6596-262101;GRAM: "RUNGTA"

## *SPONGE IRON DIVISION*

BARBIL – 758035, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 276891; Telefax: 91-6767-276891

# इस अंक में


| | |
|---|---|
| अनुक्रमणिका | ३ |
| जनवाणी | ४ |
| सम्पादकीय / *नन्दकिशोर जालान* | ५-६ |
| अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान* | ७ |
| हमारे बढ़ते कदम / *भानीराम सुरेका* | ८ |
| हमारी नयी संस्कृति / *श्री बालकृष्ण गोईन्का* | ९-१० |
| कर्महीन और कापुरुषों..., वाह भाई फूसाराम... / *कविताएं* | १० |
| कृष्ण दीवानी भक्तिमती मीरांबाई / *जुगलकिशोर जैथलिया* | ११-१२ |
| उत्तर-पूर्वांचल के वनवासियों का धर्मान्तरण / *डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध'* | १३ |
| नैतिकता को नकारती क्रूरता / *कोमल अग्रवाल* | १४ |
| सम्मेलन के इतिहास के पन्नों से (उड़ीसा- १९८०-८१) | १५-१६ |
| हमारा मारवाड़ी समाज / *युगल किशोर चौधरी* | १७ |
| उस लड़की ने इतना आकर्षित किया कि... / *डॉ. गुलाबचन्द कोटाड़िया* | १८-१९ |
| पुरानी बात / अपने भीतर (कविता) | १९ |
| चोखाराम रो चोळको / *निर्मोही व्यास* | २०-२१ |
| अभेद्य कवच है सहनशीलता / *पुष्करलाल केडिया* | २१-२२ |
| गजल, नव-नूतन शृंगारिक बेला (कविता) | २२ |


## युग पथ चरण


★ कार्यकारिणी व स्थायी समिति सदस्य गठन

★ अखिल भारतीय समिति सदस्यगण केन्द्रीय सम्मेलन ० श्री शीशराम ओला के साथ

बिहार, पूर्वोत्तर, उत्कल प्रादेशिक सम्मेलन, महिला सम्मेलन, युवा मंच की रिपोर्टें एवं अन्य विशेष

२३-३४


*कुछ विशेष परिस्थितियों के कारण कार्यक्रमों की जो रिपोर्ट इस अंक में प्रकाशित नहीं हुई है, वे अक्टूबर अंक में प्रकाशित होगी। - सम्पादक*


## समाज विकास

सितम्बर, २००४

वर्ष ५४ ● अंक ९

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.


## समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

***प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।***


***स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता- ७०००१३ में मुद्रित।***

***संपादक-नंदकिशोर जालान***

# ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है। - सम्पादक

आपके द्वारा बड़ी विद्वतापूर्ण और कुशलतापूर्ण ढंग से संपादित तथा सफलता से संचालित और सुचारू रूप से प्रकाशित समाज विकास पत्रिका को गौरव प्राप्त हो रहा है। निसन्देह मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। परिस्थितिवश वह चाहे एकाकी हो जाए। फिर भी आधुनिक प्रगति की दौड़ में सम्मिलित होने की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उसे समाज का सहारा लेना ही पड़ता है। इस संबंध में मानव मात्र को जागरुक करने के लिए समाज का विकास नितांत अनिवार्य है। यह हर्ष एवं गौरव का विषय है कि समाज विकास के माध्यम से आप मनुष्य की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करके बड़े उपकार का काम कर रहे हैं। आपने मेरी मानवीय भावनाओं को समुचित सम्मान एवं महत्व दिया है। 'समाज विकास' पत्रिका का मुखपृष्ठ हर बार नये चित्रों से सुसज्जित, चित्ताकर्षक, रंगीन और सूचनात्मक रहता है तथा इसकी पठनीय सामग्री प्रेरणापूर्ण और संग्रहणीय होती है। कृपया इस जनोपयोगी प्रकाशन के लिए मेरी बधाई एवं शुभकामनाएं लें।

**- पण्डित बी.एन. मुदगिल**
**प्रधान संपादक 'समाचार संघ'**
**रोहतक (हरियाणा)**

समाज विकास पत्रिका बराबर समय से मिल रही है तथा घर बैठे हर प्रकार की जानकारी प्राप्त हो रही है। अपने समाज में कई प्रकार की बातें तथा कार्यक्रम केवल पत्रिका के ही माध्यम से जानकारी प्राप्त होती है। अपने लोग नेगाचार, विवाह इत्यादि कार्यक्रमों में भी दिखावटी खर्च काफी करते हैं, समाज के नाम पर समाज के व्यक्ति पर सामाजिक कर (टैक्स) की व्यवस्था करें।

**- अशोक कुमार अग्रवाल**
**खेतराजपुर, सम्बलपुर**

अखिल भारतीय समिति की बैठक में सम्मिलित होकर आप सबने हमारा आतिथ्य स्वीकार करते हुए इस बैठक को अभूतपूर्व सफलता प्रदान की इस हेतु धन्यवाद।

**- विश्वनाथ मारोठिया**
**अध्यक्ष, उत्कल प्रा. मारवाड़ी सम्मेलन, राउरकेला**

'समाज विकास' पत्रिका एक मनोरंजक ज्ञानवर्धक पत्रिका है। यह फोल्ड करके स्टीच हो तो डाक में शॉर्टिंग करने में पत्रिका खराब नहीं होगी और सीधे सुरक्षित धारक को पते पर आएगी।

**- डॉ. विमला रानी**
**बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश**

राउरकेला में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अखिल भारतीय समिति की बैठक में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महामंत्री आदि द्वारा दिए गए उद्बोधन एवं दिशा निर्देश से हम सभी कार्यकर्ता बहुत ही प्रफुल्लित एवं उत्साहित हैं एवं बलांगीर जिला सम्मेलन को दिए गए सम्मान से इन सभी का उत्साह और बढ़ा है।

**- गौरीशंकर अग्रवाल**
**अध्यक्ष, बलांगीर शाखा, उत्कल**

आपसे कोलकाता में मिलकर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन और बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति के जन्म के इतिहास जानकर काफी ज्ञान हमें हुआ। आपने शिक्षा के बारे में दिशा-निर्देश दिया वह हमारी शिक्षा समिति के लिए अत्यन्त ही लाभदायक सिद्ध होगी। हमारी समिति भी यथासाध्य प्रयासरत है और आपके आशीर्वाद से हमें सफलता अवश्य मिलेगी।

**- प्रह्लादराय शर्मा, महासचिव**
**बिहार मा.स. शिक्षा समिति, पटना**

आपके द्वारा सम्पादित समाज विकास पत्रिका का नियमित पाठक हूं। पत्रिका में अपने समाज सम्बन्धित बहुत सी जानकारियां पढ़ने को मिलती है।

**- तुलसी जैन**
**अध्यक्ष, खरियार शाखा, युवा मंच**

'समाज विकास' का मैं नियमित पाठक हूं तथा इसके प्रत्येक अंक को मैंने पठनीय पाया है। उत्कृष्ट सम्पादन हेतु आप बधाई के पात्र हैं। पत्र के साथ मैं असम के अन्यतम साहित्यिक, समाजसेवी व मारवाड़ी सम्मेलन को समर्पित कार्यकर्ता स्व. छगनलालजी जैन के जीवन पर आधारित गुवाहाटी विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त प्राध्यापक प्रो. (डॉ.) विमान कर का आलेख संलग्न कर रहा हूं।

**- डॉ. प्रदीप जैन, गुवाहाटी**

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की प्रथम बैठक राउरकेला में हुई। उक्त बैठक में बलांगीर, कालाहांडी और सम्बलपुर से २३ सदस्यों की उपस्थिति रही। उत्कल सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विश्वनाथजी मारोठिया द्वारा घोषणा की गई कि आगामी उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन बलांगीर में होगा।

**- वेद प्रकाश अग्रवाल, बलांगीर**

बजरंगलालजी तुलस्यान रे कार्यालय में जुलाई २००४ रो 'समाज विकास' देख्यो। ओ जुलाई २००४ को अंक, प्रथम दर्शन पर ही इतणो मनाहारी अर भव्य हे के बांचण रो मन कर। सामग्री रो चयन अर प्रस्तुति भी अत्यन्त श्रेष्ठ है। आश्चर्य है कि १९५५ में तो आप युवक हा स्फूर्ति स्यूं भरेड़ा सो असम (तिनसुकिए) में बड़ों श्रेष्ठ सम्मेलन (तृतीय) जोड़ लियो। पछें भी सम्पूर्ण भारत में कितणां ही सम्मेलन जोड़या सो सम्मेलन अर आप पर्यायवाची हो। वर्तमान में इतणी बड़ी अवस्था में भी आप 'समाज विकास' रे ईर्ष्या लायक सम्पादन ने समय दे सको हो। प्रति दिवस दस-वीस व्यक्तियां स्यूं पत्राचार कर लेवो हो। संपादन को कार्य सम्हाल लेवो हो। सो आपरी ऊर्जा महान है। आपने वारम्वार नमन।

**- अम्बू शर्मा**
**सम्पादक- नैणसी, कोलकाता**

# आशाएं, उपेक्षाएं, अपेक्षाएं... आज का युवा समाज

✍ नन्दकिशोर जालान

हमारा समाज इस देश का वह अंग है जिससे इतर समाज के लोग बहुत कुछ अपेक्षाएं रखते हैं, साथ ही वे इसे आज भी एक प्रकार की उपेक्षा की दृष्टि से देखने में चूकते नहीं। दान-धर्म या रुपयों-पैसों का सवाल उठता है, तो हर प्रदेश का व्यक्ति इस समाज के हर व्यक्ति को कुबेर की खान समझता है और उसी रूप में उससे अनुदान की प्रत्याशा करता है। विकास की गति-प्रगति के लिए जहां अन्य योजनाओं, योग्यताओं, निर्देशनों आदि की बात आती है, वहां इससे सबसे पीछे की सीट देने का प्रयास रहता है। लेकिन पिछले पचास वर्षों के अबाध, सशक्त, सूझ-बूझ भरे परिश्रम से शिक्षा, उद्योग-व्यवसाय एवं सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति के कारण हमारे समाज का व्यक्तित्व पिछली सीट से सरकता हुआ आगे की पंक्ति में पहुंच ही गया है, बल्कि विभिन्न देशोपयोगी संस्थाओं के शीर्षस्थ पदों को सुशोभित करता रहता है।

साहित्य, कला, विज्ञान, शोध, सामाजिक एवं अंतरदेशीय चिन्तन-मनन में हमारे समाज के युवकों का तीव्रता से बदला हुआ एवं बदलता जा रहा दृष्टिकोण हमें बहुत कुछ प्रफुल्लित एवं गर्वित करता है। लेकिन प्रश्न उठता है कि इस देश की आज की आबोहवा में हम जिस बिन्दु पर आ खड़े हैं, हमारे चिन्तन-मनन का क्या आज यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय नहीं है ?

## पुनः संकीर्णता की ओर

महात्मा गांधी को गये छप्पन वर्ष हो गये। राजनीति की लड़ाई के साथ उन्होंने आजीवन आपसी संकीर्णता के विरुद्ध भी लड़ाई लड़ी। आपसी संकीर्णता, जाति भेद, उप-जाति और उनमें भी आपसी टुकड़ों में बंटे वर्ग-विभेद, रोजी-रोटी का कभी न जुड़नेवाला अहं एवं घृणात्मक रुख, जो एक ही धर्म की दुहाई देते हुए भी देश के एक-एक हिस्से के जन-मानस के मन को सैकड़ों हिस्सों में बांट कर रखता है, इस देश पर बारम्बार विदेशी राजसत्ता बनती रहने का सबसे बड़ा कारण था। गांधी के निर्मल प्रकाश की किरणों के कारण इस संकीर्णता के प्रति विद्रोह ने जन्म लिया, जन-मानस पर देश का एकाकार रूप उभरा, विदेशी सत्ता यहां से पलायन करने पर विवश हुई, पोंगापंथी दीवारें ढहती गईं और पूरी तरह दलित वर्ग को भी प्रकाश व निव-निर्माण की किरणें नजर आने लगीं। उस युग का निर्मार हुआ था जहां लैम्प पोस्ट को भी सांसद चुना जाता था- संकीर्णता या जाति विभेद के आधार पर नहीं, दक्षता व क्षमता के आधार पर। और आज ?

आज तो वापस ही संकीर्णता और दुर्भावना अपने पैर फैलाती नजर आती है। राजनेताओं से अपेक्षा थी कि देश के एकत्व को इतनी मजबूत गांठ देकर बांधेंगे जिससे भारतीय राजनैतिक जीवन संकीर्णताओं से परे और सुस्पष्ट होगा। परन्तु आज तो उल्टे प्रादेशिकता व जाति-पांति की भावनाओं को बढ़ावा मिला है। कांग्रेस (ई) व भारतीय जनता पार्टी के दो वरिष्ठ नेताओं से पिछले दिनों हुई बातचीत उन्होंने स्वीकारा कि आजकल चुनाव टिकट देने में क्षेत्रीय व जातीय संकीर्णता का बाहुल्य सर्वाधिक विचारणीय बन गया है। जो भारतीय सार्वदेशिक होने जा रहा था वह पुनः संकुचित व सिकुड़ता जा रहा है। क्या हममें से कुछ रथ के इस पहिये को उल्टी दिशा चलाकर संकीर्णतारहित सीधी व सपाट लीक पर नहीं डाल सकते ?

## प्रेमत्व व श्रद्धा का ह्रास

अनेक स्थानों पर अनेक तरह से हमारे ऊपर शोषण के आरोप लगाये जाते हैं। प्रसिद्ध साहित्यकार श्री रामनाथ सुमन ने

अपने एक लेख में कहा था- 'जहां शोषण है, वह इसलिए नहीं कि वह मारवाड़ी है। पंजाबी, सिंधी, गुजराती, चेट्टियार का शोषण भी वैसा ही शोषण है।' श्री सुमन ने यह भी स्वीकार किया कि मारवाड़ियों ने भारतीय निर्माण के क्षेत्र में बहुत दिया है- किसी एक प्रादेशिक वर्ग ने इतना न किया हो। प्रादेशिकता की भावनाओं से एकदम दूर और मानवीय संवेदनाओं के ज्वलंत प्रतीक इनके द्वारा निर्मित हजारों संस्थाएं देश के हर प्रान्त में फैली हुई है। और तो और, उत्तराखण्ड के दुर्गम तीर्थ स्थानों में आने-जाने वाले यात्रियों का (आज के यातायात के साधनों के विकास के पहले) इनकी संग्रोजनाओं से प्राण पुलकित होता था। अपने एक अंश को दूसरों के लिए देना और उनकी वेदना व जरूरतों में समभागी होना, इनकी इस विशेषता ने इन्हें देश के अधिकांश भागों के जन-मानस का प्रेमत्व दिया और उनकी श्रद्धा के योग्य बनाया। प्रश्न उठता है कि क्या वह श्रद्धा हमारे प्रति आज भी प्रवाहित है।

आज के इस सत्य को भी कैसे नकारा जा सकता है कि नई संरचनाएं नई संस्थाएं, अपने आप में संकुचित होती जा रही हैं और वे अधिकतम जन-धारा से कटी हुई हैं एवं वर्ग विशेष की सुविधाओं के लिए निर्मित की जाने लगी हैं। फिर इस सत्य को भी नकारना कैसे संभव है कि देश के ९०-९५ प्रतिशत के उपयोग में न आने वाली संस्थाओं से वह प्रेमत्व व श्रद्धा कैसे उपज सकती है, जो देश के कोने-कोने में इस समाज की सबसे बड़ी थाती रही।

## प्राचीन कुंठा से भरा युवा मानस

गांधीजी ने कहा था- ''आग की एक चिनगारी दीपक जला कर अंधेरा मिटाती है।' गांधीजी ने अपने आसपास अपनी चिनगारी से अनेक दीपक जलाए जो समाज सुधार के अगुये बने और हर प्रकार की लांछनाओं के बावजूद सामाजिक नियम-कायदों के नये मानदण्ड स्थापित किए। सामाजिक नव-निर्माण के कारण नई समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। प्रश्न है उनके सुलझाने के लिए आज का हमारे समाज का युवा कितना सजग है, और क्या उसका मानस प्राचीन कुंठा से आज भी जुड़ा हुआ नहीं है?

बर्नाड शॉ ने कहा था- ''जिसके मन में ताकत है, वह करता है।'' हमारे युवा वर्ग की चेतना और दर्शनप्रियता में तो आज शंका नहीं की जा सकती, केवल बात इतनी सी है कि जिस आदर्श की बात की जाती है या दुहाई दी जाती है, वह जीवन में न उतरे तो वह आदर्श, आदर्श नहीं बल्कि थोथ है। अनेक ऐसी समस्याएं हैं, जहां युवा मानस की पुरानी कुंठाएं खुल कर खेलती हैं। बात तो करेंगे पश्चिम के प्रेम विवाहों, आदर्श विवाहों की और चाहेंगे कि अपनी जीवनसंगिनी अपने साथ कुबेर की खान लेकर आये। विधवा विवाह, तलाकशुदा लड़कियों का पुनर्विवाह सभी समाजों ने स्वीकार कर रखा है, लेकिन युवा मानस कहां और कितना है, जो इन सारी बातों की आवश्यकताओं को उद्घोषित करते हुए भी अपने को इनके विरुद्ध पुराने व खोखले दुराग्रह से निवृत्त कर पाया है। सुन्दर, सुगठित वदन एवं कार्यकुशल २५-२५, ३०-३० वर्ष की बिन ब्याही लड़कियां बैठी हैं और समाज की उस स्थिति को झेल रही हैं, जहां एक ओर दहेज के लालची भेड़िये अपने दलालों के साथ नजर गड़ाये चारों ओर बैठे हैं। चूंकि स्त्रियां आर्थिक उपार्जन के क्षेत्र में भी पूरा प्रवेश नहीं पा रही हैं तो प्रश्न उठता है कि वे आजीवन किसकी मुखापेक्षी रहेगी और तेजी से बदलती आर्थिक मान्यताओं और संयुक्त परिवार के गुणात्मक रूप में विघटित होते हुए युग में उनका भविष्य क्या है? पश्चिमी समाज के आदर्श गले की आवाज के साथ बहुत सुरीले और प्रभावोत्पादक है, लेकिन जीवन में उतारने के समय अधिकांशत: काल्पनिक बन हवा होते जा रहे हैं।

## बात की कीमत

बात की कीमत या पगड़ी की इज्जत यह ऐसी चीज थी जिस पर समाज को बहुत गर्व था। राजस्थान में प्रचलित एक कथावार्ता के अनुसार एक देनदार जब दूसरे जन्म में हाथी बना और उसके सामने उस व्यक्ति को रौंदने के लिए खड़ा किया गया, जिसके प्रति वह देनदार था तो वह हाथी उसे रौंदने के बजाय उसके सामने नतमस्तक खड़ा हो गया और सबों को आश्चर्यचकित कर दिया। 'बात की कीमत' समाज के जीवन में आधारभूत एक शिला थी। क्या आज भी इस आधार की वही मान्यता, सही सम्मान है?

बीसवीं सदी के पहले पचास वर्षों में सामाजिक परिवर्तन लाने वाले २५-४० वर्ष की आयु के थे। समय परिवर्तन के साथ नई समस्याएं उभरती हैं। आज के समाज के युवक की प्राथमिकता होनी चाहिए कि आज की ज्वलंत समस्याओं को चिन्हित करें और गांधीजी के दीये की तरह अंधेरे को मिटाकर नया प्रकाश उत्पन्न करें।●

# शिक्षा के साथ संस्कार भी दें

✍ मोहन लाल तुलस्यान

शिक्षा आज के मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता है। बिना शिक्षा के मनुष्य पशु से भी बदतर जीवन जीने को अभिशप्त हो जाता है। दुनिया उन्नति के जिस मुकाम पर पहुंच चुकी है वह शिक्षा के प्रभाव से ही संभव हुआ है। आने वाले दिनों में भी शिक्षा का महत्व और बढ़ता जाएगा क्योंकि ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में जिस प्रकार के क्रांतिकारी आविष्कार हो रहे हैं वह बिना शिक्षा के उपयोगी नहीं होने वाले।

शिक्षा के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय प्रगति अन्य समाजों की तरह ही मारवाड़ी समाज के लिए भी खुशी की बात है। आज मारवाड़ी समाज में शिक्षा को सर्वाधिक महत्व दिया जा रहा है। लोग अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। अपना पेट काटकर उनकी पढ़ाई का खर्च उठा रहे हैं। बच्चों में भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने की ललक है। वे बड़ी-बड़ी डिग्रियां हासिल कर देश-विदेश के प्रतिष्ठित प्रतिष्ठानों में सम्मानित नौकरी कर रहे हैं या फिर आधुनिक व्यवसाय में अपना कमाल दिखा रहे हैं। आज मारवाड़ी सिर्फ व्यापारी नहीं माने जाते बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में अपनी कुशाग्रता के लिए जाने जाते हैं।

शिक्षा के प्रभाव से इतना कुछ अर्जित करने की कोशिश तो हुई है लेकिन इस बीच एक महत्वपूर्ण तथ्य को भुला दिया गया और वह है संस्कार।

हमारे पूर्वज कहते थे कि बिना संस्कार के मनुष्य जीवन का कोई मूल्य नहीं। वे शिक्षा से अधिक संस्कार पर जोर देते थे। अपनी परम्पराओं, रीति-रिवाजों और आदर्शों के प्रति उनकी अनुरक्ति अधिक थी। अपने बच्चों को वे पारिवारिक और सामाजिक संस्कारों में इस तरह ढालते थे कि आगे चलकर उनके मन में परिवार और समाज के प्रति समर्पण भाव होता था। वे ऐसा कोई काम नहीं करते थे जिससे परिवार और समाज की मर्यादा को किसी भी प्रकार से ठेस पहुंचे। हमारे पूर्वज आज की तरह शिक्षित नहीं थे पर शिक्षा के प्रति उनका जोड़ था। उन्होंने शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए शिक्षण संस्थानों की स्थापना की, ऐसे शिक्षण संस्थानों की जहां अमीर और गरीब एक साथ शिक्षा प्राप्त कर सकें। उनके द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थानों की विशेषता थी कि इनमें संस्कारों पर बहुत जोर दिया जाता था। यहां से जो भी शिक्षा प्राप्त कर निकलता था उसमें और कुछ गुण हो या न हो संस्कार होता था।

आज की शिक्षा में ज्ञान प्राप्त करने पर तो जोर दिया जाता है पर संस्कार नहीं सिखाया जाता। जो संस्कार सिखाया भी जाता है वह हमारी परंपरा और आदर्श के विपरीत है। इसका दुष्परिणाम यह हुआ है कि आज उच्च शिक्षा प्राप्त करके भी बच्चे संस्कारवान नहीं होते। वे समाज तो दूर अपने परिवार के प्रति भी समर्पित नहीं होते। पैसा कमाना और स्वयं को सुखी बनाना- बस यही उनका आदर्श होता है। ऐसे में माता-पिता, भाई-बंधु सब पीछे छूट जाते हैं। आज का परिवार सिर्फ पति-पत्नी और अपने बच्चों तक सिमट गया है।

पैसा कमाना बुरी बात नहीं है। सम्मानपूर्वक जीने के लिए पैसे की जरूरत है लेकिन पैसा ही सबकुछ नहीं है। अपना परिवार व समाज भी हमारे लिए महत्वपूर्ण होना चाहिए। आखिर हम समाज और परिवार से पृथक अपना अस्तित्व बनाये नहीं रख सकते।

हमें ऐसी शिक्षण पद्धति को पुनः लागू करना होगा जिसमें संस्कार को प्रधानता दी जाए ताकि हमारे बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ परिवार और समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को समझ सकें एवं आगे चलकर अपने कर्मों से उसका कुछ भला कर सकें।

# हमारे बढ़ते कदम

✍ भानीराम सुरेका, महामंत्री, अ.भा.मा. सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की बैठक पिछले रविवार २२ अगस्त २००४ को राउरकेला में आयोजित हुई। उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष, सभी पदाधिकारी, कार्यकारिणी के सदस्य व कार्यकर्त्ता इस आयोजन का भार उठाने व इस मेजबानी के लिए धन्यवाद के पात्र हैं। प्रांतों से आए सभी सदस्यों का आभार प्रकट करता हूं कि उन्होंने अपने विचारों से अवगत कराया।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के विकास में मारवाड़ियों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। व्यापारिक दृष्टि से पिछड़े इस प्रदेश में व्यापार-वाणिज्य का काम करने के लिए १६वीं सदी में बलांगीर, कालाहांडी तथा पटनागढ़ के राजाओं ने मारवाड़ियों को आमंत्रित किया था। मारवाड़ियों को सोनपुर, बलांगीर, कालाहांडी व बौद्ध में बसने के लिए जमीन दी गई। तब से अब तक मारवाड़ी उड़ीसा के आर्थिक संरचना की धुरी के रूप में कार्य करते रहे हैं।

कालांतर में मारवाड़ी उड़ीसा के कोने-कोने में फैल गये। वहां की सभ्यता और संस्कृति को आत्मसात किया। भाषा, वेशभूषा, खानपान एवं आचार व्यवस्था में वे स्थानीय उड़िया समाज से इतना घुलमिल गये कि उनके प्रति किसी के मन में कोई विद्वेष नहीं रहा।

यह मारवाड़ी समाज की विशिष्टता रही है कि इस समाज के लोग जहां भी गये हैं वहां के स्थानीय समाज से समरसता स्थापित किया है। समरस होने की इस क्षमता के चलते ही मारवाड़ियों को विकास के अवसर ढूंढने में कठिनाइयां अपेक्षाकृत कम आई।

सम्मेलन ने पश्चिम बंगाल में तो समरसता को प्रगाढ़ बनाने के लिए साहित्यिक गतिविधियों तक को माध्यम बनाया गया है। सम्मेलन की ओर से हर साल बंगला में लिखे गये राजस्थान के दोहे, साहित्य व काव्य को दो पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं- चन्दवरदाई पुरस्कार व भरत व्यास पुरस्कार। कतिपय मारवाड़ी भी बंगला साहित्य-संस्कृति में अपनी पैठ रखते हैं। असम में ज्योति प्रकाश अगरवाला रवीन्द्रनाथ की तरह पूज्य हैं।

व्यापार-वाणिज्य की उन्नति के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी मारवाड़ी अग्रणी है। प्राकृतिक आपदा- सूखा हो या कि बाढ़ अथवा भूकम्प, मारवाड़ी समाज के लोग राहत कार्य में सबसे आगे रहते हैं। पिछले वर्षों में राहत कार्यों में अग्रणी भूमिका निभा कर समाज ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। करोड़ों रुपये हर साल समाज सेवा के लिए खर्च किए जाते हैं।

उड़ीसा में मारवाड़ी समाज की संस्थाओं ने मारवाड़ियों को एकजुट करने व उन्हें मारवाड़ी संस्कृति से जोड़े रखने में उल्लेखनीय सफलता पाई है। होली, दीवाली, वसंत, सावन के दिनों में मिलन पर्व का आयोजन करके आपसी मित्रता व आत्मीयता को प्रगाढ़ करने का सुअवसर प्रदान किया जाता है। समाज में पनप रही कुरीतियों को खत्म करने के लिए नियमित रूप से विचार-विमर्श का आयोजन करना भी सुखद है। राजस्थान परिषद, हरियाणा नागरिक संघ, मारवाड़ी सोसायटी, मारवाड़ी पंचायत, मारवाड़ी महिला सम्मेलन एवं मारवाड़ी युवा मंच व मारवाड़ी व्यायामशाला जैसी संस्थाएं मारवाड़ियों के गौरव को आगे बढ़ाते रहने के लिए निश्चित रूप से धन्यवाद के पात्र हैं। हम चाहेंगे कि ये सभी सम्मेलन से अधिकाधिक जुड़कर सम्मेलन को और वृहत एवं मजबूत बनायें।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति के गठन का कार्य सम्पन्न हो गया है। हर प्रांतों के आजीवन व विशिष्ट सदस्यों ने मतदान में भाग लेकर अपने प्रतिनिधियों को निर्वाचित किया है।

इस अखिल भारतीय समिति की बैठक के बाद नई कार्यकारिणी, स्थायी एवं अन्य उपसमितियां आदि पूरा सम्मेलन का गठन होने के बाद मैं समझता हूं कि सम्मेलन में एक नई सक्रियता आनी चाहिए। हर स्तर पर नया नेतृत्व आने पर अगले वर्षों के लिए नये कार्यक्रमों को हाथ में लेना होगा। हालांकि हमें यह स्वीकार करने में कतई संकोच नहीं हो रहा है कि लोगों को बहुत सी शिकायतें हैं और कुछ बाधाएं भी हैं और हम उन अपेक्षाओं को साकार नहीं कर पा रहे हैं। नई समस्याओं पर विचार-विमर्श करके समाधान का सूत्र तलाशने से, एकता एवं अधिक से अधिक लोगों को अपने साथ जोड़ने का काम करने के लिए संकल्प हो जाए, इसी आशा और विश्वास के साथ।●

• • • • • • • • • • • • • • • •

## पाठकों एवं लेखकों से निवेदन :

*'समाज विकास' समाज की ज्वलन्त समस्याओं का एक विवेचक पत्र है।*

*लेखक-लेखिकाओं, कवि-कवयित्रियों आदि से निवेदन है कि वे अपने लेख, कहानियां, कविताएं, किस्से एवं सच्ची घटनाएं आदि हमें भेजें। देश और समाज की समस्याएं अधिकतर समानधर्मा होती हैं, तथापि उस परिप्रेक्ष्य में समाज का थोड़ा-सा अधिक विश्लेषण उचित होगा।*

*पत्र व्यवहार का पता :- सम्पादक, 'समाज विकास', १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७००००७*

व्यंग्य

# हमारी नयी संस्कृति

✍ **श्री बालकृष्ण गोईन्का**, उपाध्यक्ष, अ.भा.मा.सम्मेलन, चेन्नई

देश आजाद हुआ, अंग्रेज भारत छोड़ कर चले गये परंतु अपनी संस्कृति यहां छोड़ गये। हमने अपनी प्राचीन संस्कृति को छोड़ कर उनकी संस्कृति को गले लगा लिया, विशेष करके शहरों में रहने वाले एवं पढ़े लिखे लोग।

युवा पुत्र या बालकों का जन्मदिन मनाते हैं (Happy Birth Day) केक आयेगा, उसके ऊपर मोमबत्ती जला कर जिसका जन्मदिन है वह उसे बुझायेगा फिर Happy Birthday To you कह कर खुशियां मनायेंगे, केक के टुकड़े काट कर सबको खिलायेंगे।

केक हमारा भोजन नहीं है हम जो शाकाहारी है, केक में मिले अंडे खाने पड़ते हैं। हम दीपक को सूर्य का अंश मान कर शीश नवाते हैं। हर शुभ कार्य, पूजा-पाठ में दीप प्रज्वलित करते हैं विदेशी संस्कृति को अपना कर दीप बुझाने लगे हैं। अंग्रेजों के आने के पहले जन्मदिन पर पूजा, कहीं हवन, कहीं ब्राह्मण भोजन कराते थे।

आज पिता को Daddy या Pappa कहते हैं Daddy का क्या अर्थ होता है सब जानते हैं- 'पप्पा' का अर्थ बहुत छोटा बालक। हमारे यहां पिताजी या बापु कहने की प्रथा थी। अपनी मां को Mummy बड़े चाव से कहते हैं। पिता के भाई को 'अंकल' कहते हैं। हमारे यहां चाचाजी कहते थे। हमारे यहां चाचा, मौसा, फूफा, मामा, ताऊजी या ताया कहते हैं। अंग्रेजी में 'अंकल' के सिवाय दूसरा शब्द ही नहीं, सभी को 'अंकल' ही कहेंगे। इसी तरह एक ही शब्द है 'आन्टी' जबकि हमारे यहां चाची, मौसी, बुआ, मामी, ताईजी आदि हर सम्बन्ध के लिए अलग-अलग नामों का उच्चारण है।

कभी किसी परिचित से मिलते हैं तो आज कहेंगे 'हल्लो हल्लो', जब वह बिदा हो तो 'बाय बाय' जिसका कोई अर्थ नहीं। हम पहले मिलते थे हाथ जोड़कर नमस्ते, नमस्कार या जयरामजी की कहते थे। बिदा होते समय फिर मिलेंगे या अलविदा कहते थे। बहिन को दीदी या बाई या बहिना, यहां सबके लिए 'सिस्टर' शब्द है। बहिन के पति को 'जीजा' कहते हैं, अंग्रेजी में कोई शब्द ही नहीं है। हमारे यहां अपने मित्र, निकट संबंधी से मिलते हैं तो हाथ जोड़कर नम्रता से प्रणाम, नमस्कार, नमस्ते, अपने पूर्वजों से मिलते समय सिर नीचा करके पांव छूयेंगे। अंग्रेजी सभ्यता में इसके लिए कोई स्थान नहीं है। सुबह हो तो Good Morning, दोपहर को Good Afternoon, सायंकाल को Good Evening, रात को Good Night. धन्यवाद की जगह Thank You, कोई गलती महसूस हुई तो 'क्षमा' मांगते थे अब 'Sorry' शब्द प्रचलित हो गया। कोई कठिनाई सामने आई तो पहले 'हे राम' या 'हे भगवान' मुस्लिम हो तो याअल्लाह कहते थे लेकिन अब लोग कहते हैं My God। पत्नी 'प्रिया' से Darling हो गई। शादी के बाद की 'सुहाग रात' को Honey Moon कहते हैं। नयी अंग्रेजी सभ्यता के अनुसार पति-पत्नी विदेश या देश में ही कहीं 'हनी मून' मनाने जाते हैं। विदेशों में पश्चिम सभ्यता के अनुसार भारत में भी हर शहर में Disco Dance शुरू हो गया जिसमें पति पत्नी जाते हैं और पति किसी भी स्त्री के साथ नृत्य करता है। इसी तरह पत्नी किसी भी पुरुष के साथ नृत्य का आनन्द लेती है। अब हम विदेशी संस्कृति अपना कर शाकाहारी से जिसे अब Vegetarian कहने लगे हैं Non Vegetarian हो गये हैं। पार्टियों में Non-Veg के साथ 'शराब' आ गई। अब तो यहां तक हो गया कि अपने को एडवान्स कहने वालों के घर में ही Bar खुल गये। अपने मित्रों, पति-पत्नी जिसे अब Couple कहते हैं एकत्र होकर शराब के प्याले पर प्याले गले में उतारते हैं फिर नशे में नाचते हैं। महिलाओं को शराब पीने के लिए मजबूर करना, उसके प्रति सामान्य मर्यादा का निरादर करना है।

भारतीय परिधान हमारा धोती कुर्त्ता या पजामा कमीज की जगह कोट पैन्ट आ गई गले में 'टाई' लग गई याने गले में फांसी लगा रखी हो। लड़कियां साड़ी की जगह जींस पहनने लगी हैं।

आपस की बातचीत में आधे से अधिके अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग होता है। पढ़े लिखे लोग आपस में बातचीत में अंग्रेजी का ही प्रयोग करते हैं। किसी भी संस्था के सार्वजनिक सभा में जिसे Meeting का नाम देते हैं, सभी सदस्य हिन्दी जानने समझने वाले होते हुए भी अपने विचार अपना वक्तव्य अंग्रेजी में बोलने में अधिक सुविधा महसूस करते हैं। वास्तविकता यह हो गई कि आज हिन्दी भाषा मध्यम वर्गीय परिवारों तक ही सीमित भाषा हो गई। महानगरों एवं अभिजात्य वर्ग में अब इसे ग्रामी भाषा समझा जाता है।

चीन, जापान, बर्मा (म्यांमार) थाईलैंड में वे आपस में अपनी भाषा में ही बात करने में गर्व करते हैं। उनकी बातचीत में कोई अंग्रेजी शब्द का उच्चारण नहीं होता। हमारी मातृभाषा या राष्ट्र भाषा हिन्दी ही हमें अधिक गौरव और स्वाभिमान दे सकती है। शहरों में पढ़े लिखे लोग अंग्रेजी भाषा में रूचि लेते रहेंगे तो एक दिन ऐसा आयेगा कि अपनी भाषा सिमट कर अंधकार के गर्त में चली जा सकती है। इसलिए अपनी भाषा को बचाना अनिवार्य है, क्योकि दूसरी भाषा में हम कितने ही निपुण हो जाएं, वह हमारी सभ्यता और सांस्कृतिक की रक्षा नहीं कर सकती। हमारी मातृभाषा ही हमें अधिक गौरव और स्वाभिमान दे सकती है।

माता-पिता अपने बच्चों को Convent School में भर्ती करने में अपना गौरव समझते हैं। वहां लड़कियों को भी विदेशी अंग्रेजों के समान की Dress Blouse Skirt पहनना आवश्यक रहता है। कहीं-कहीं पर तो लड़कियों को टाई भी लगानी पड़ती है।

इसलिए मानना पड़ता है अंग्रेज चले गए, परंतु अपनी भाषा अंग्रेजी और अपनी संस्कृति छोड़ गये जिसे हमने बहुत प्रेम से

अपना लिया। अंग्रेजी साम्राज्य जहां-जहां गया वहां अपनी भाषा को लेकर गया। अपनी भाषा को उन्होंने इतना सम्मान दिया कि उनके उपनिवेश में रहने वाला सभी व्यक्ति अंग्रेजी पढ़ने और सीखने के पीछे दीवाने हो गये। उन्हें लगने लगा कि अंग्रेजी प्रगति और सम्मान दिलाने वाली कुंजी है।

विदेशी सोच, विदेशी भावना, विदेशी तौर-तरीके, उनकी संस्कृति और उनकी भाषा का प्रयोग करने में हम अपने आपको अधिक सभ्य, जिसे अब बोलचाल की भाषा में Advance समझने लगे हैं। हम गहरायी से चिंतन मनन करें- अपनी भाषा अपनी संस्कृति को सम्मान देवें।

व्यापारी वर्ग अपने व्यापार का नव वर्ष, नई पुस्तकों का पूजन कहीं दिवाली कहीं राम नवमी याने श्रीराम का जन्म दिन से अब बदल कर अंग्रेजों में पचलित महात्मा इसा के जन्मदिन की तारीखों पर आधारित पश्चिम सभ्यता में प्रचलित मास, साल और दिन पर आधारित एक अप्रैल को नया साल मान कर एक अप्रैल को व्यापारिक पुस्तकों का पूजन एवं उसकी शुरूआत करता है।

भारत वर्ष का सर्वमान्य संवत विक्रम संवत है। विक्रम संवत के अनुसार नववर्ष का आरंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। इस दिन सभी हर्षोल्लास के साथ यज्ञादि धर्मानुष्ठान करते हुए प्रत्येक घरों में उत्सव का वातावरण बना रहता है। दक्षिण भारत में आज भी इस नूतन वर्ष को 'उगादि' के नाम से मनाया जाता है। कुछ प्रदेशों में इसे 'गुडी पडवा' के नाम से मनाते हैं। कहते हैं यह विक्रमी संवतसर, सम्राट मालवाधिपति विक्रमादित्य ने शकों पर विजय प्राप्त का प्रारंभ किया। आज यह विक्रमी संवत अंधेरे में चला गया, ईश्वी संवत १ जनवरी ही New Year Day प्रसिद्ध हो गया। पहली जनवरी को बड़ा उत्सव मनाते हैं। आपस में मिलते हैं तो Happy New Year की बधाई देते, लेते हैं।

अच्छे व्यवहार के लिए पहले धन्यवाद देते थे, अब उसकी जगह Thank You ने ले लिया है। कोई गलती हो जाए तो क्षमा याचना की जगह Sorry आ गया।

कोई भी देश, विदेश अपनी भाषा को अपनाए बिना न तो उन्नति ही कर सकता है और ना ही राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति। हिन्दी प्रेम की भाषा है, राष्ट्रीय एकता की भाषा है।●

+++ ○○ +++

# कर्महीन और कापुरुषों का होता जग में अपमान है

रुक मत आगे ही बढ़ता जा, जीवन एक संग्राम है
हिम्मत और दिलेरी रक्खो, यही मर्द की शान है
कभी नहीं घबराओ मन में, विपदाओं को देख कर
हंसते-हंसते कर्म करो निज, सर्व दुखों को झेलकर
कायर बनकर जीना जग में, महापाप अभिषाप है
बुजदिल को जीवन भर मिलता, रोना और संताप है
कर्महीन और कापुरुषों का, होता जग में अपमान है
पग-पग पर है ठोकर मिलती, सदा सिसकते प्राण हैं
मंजिल उनसे दूर रहेगी, जो रहते सदा निराश हैं
देख जरा-सा दुःख का रेला, जो खो देते विश्वास है
साथ नहीं देता कोई भी, बुजदिल का संसार में
कायर की कश्ति तो डूबा करती है मंझधार में
नैया पार उन्हीं की होती, जिनमें आशा और विश्वास है
तूफानों से टकराने की, हिम्मत जिनके पास है
मुश्किल से मुश्किल राहें भी, बन जाती आसान है
मंजिल उनका स्वागत करती, जो जग में बलवान हैं
रोक नहीं सकती कोई भी, अड़चन है गतिवान को
बाधाएं खुद राह दिखाती, कर्मवीर इनसान को
सुख दुख दोनों एक समझ, बढ़ते जावो मैदान में
'राधे' इतना ध्यान रहे कि लगे ना बट्टा शान में
दुर्लभ से दुर्लभ लक्ष्यों पर, पाता काबू इनसान है।
लगन, तपस्या के आगे तो, हारे स्वयं भगवान हैं।

**- राधे श्याम शर्मा 'राधे',** कोलकाता

# वाह भाई फूसाराम बोहरा

गांव पूलोसर तैसील सरदारशहर नांव फूसाराम बोहरा भला कैवणो चाईजै सतजुगी मिनख हा। केई कारणां सूं वां पर गांव रै लोगां रो घणो करजो हुयग्यो। लुगाई भी पार पड़ी। टाबर नान्हा-नान्हा। करजा कीकर ऊतर। छेकड़ मांगतोड़ां रै तकाजा सूं घणां आखता हुयग्या। नाक-नाक आईजग्या। गांव सूं पग छूटग्या अर आसाम जा पूग्या। सांतरी सूणां बहिर हुयोड़ा हा। तगदीर साथ दियो। मोकळी कमाई होई। पण जी में जक कोनी। कद देस में जा'र मांगतोड़ा नै चुकाऊ- आई ज लालसा आठ पहर- चौसठ घड़ी रैवती। छेकड़ गांव पूलासर पूग्या। दूजै दिन आप री बही ले'र गुवाड़ में मींदर री चौकी पर बैठग्या। गांव रै कोटवाळ सूं हेलो मरवा दियो क बोहरा फूसाराम में जका मांगत मांगै है- गुवाड़ में आ'र चूक लेवै। जैं की कनै लिखापढ़ी हुवै तो ठीक, न हुवै तो वो भी आप रा रिपियां चूक लेवै।

हूं वां दिनां फूलासर री सिरकारी स्कूल में मास्टर हो। गांव रै गुवाड़ बिचाळै मींदर अर इस्कूल एक ठोड़ चिपताईज है। हूं देख तो क बोहरा फूसाराम मींदर री चौकी पर कई दिन बैठ'र आपरी मांगत चुकाई। वां दिना मिनख आज री दाई लिगता अर कूड़ा को हा नीं। एक भी ब्दो आ'र कूड़ नहीं भाख्यो क बोहरा जी। थारै इत्ता रिपिया मांगू हूं।

दरअसल बोहरा जी री नीत साफ ही अर कैवत कूड़ कोनी क नीत सारू बरकत हुवै। आज आधी सूं बत्ती सदी बीतणै पर भी बोहरा जी री बांता लोगां री जुबान पर है। वाह। फूसाराम जी। लखदाद है थारै मात-पिता नै।

**❋ बैजनाथ पवार, चूरू**

# कृष्ण दीवानी भक्तिमती मीरांबाई

## विभिन्न भाषाओं वाले अपने देश में हर जगह जिसके भजन मुखरित होते रहते हैं, एवं अब तो विदेशों में भी ''पंचम जन्मशती वर्ष पर विशेष''

✍ जुगलकिशोर जैथलिया, कोलकाता

मीरां के भजन आज भी सर्वत्र देश, काल एवं भाषा की सभी सीमाओं को लांघ कर श्रद्धा से गाए एवं सुने जाते हैं। आज से ५०० वर्ष पूर्व जन्मी मीरां ने भक्तिगंगा की ऐसी वेगवती धारा प्रवाहित की जिस प्रवाह के सामने उस कालखण्ड की तथाकथित लोकलाज एवं उच्च कुल की मान-मर्यादा सहित परिवार की सारी बाधाएं निष्प्रभावी सिद्ध हुई एवं मीरां हर बाधा को तुच्छ मान, हर संकट को प्रभु का प्रसाद समझ, आनन्दपूर्वक नाचते-गाते अपने सांवरिया को रिझाते, बिना लड़खड़ाये भक्ति की सुदृढ़ पताका थामे द्वारकाधीश के विग्रह में यह गाते-गाते लीन हो गई- 'अब प्रभु ऐसे मिलो कि फिर न बिछुड़ना होय'।

मीरां की जन्मतिथि के विषय में यद्यपि मतैक्य नहीं है पर प्रचलित जनश्रुति के अनुसार उनका जन्म विक्रम संवत् १५६० की शरद पूर्णिमा के दिन राजस्थान की मरूभूमि में मेड़ता नामक शहर से १८ मील दूर एक सुरम्य पहाड़ी पर बसे कुड़की ग्राम में प्रसिद्ध राठौर राजवंश के राव दूदाजी के चौथे पुत्र रतनसिंह एवं धर्मपरायणा वीरकंवरी के परिवार में हुआ। राव दूदाजी ने वि.सं. १५१८ में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी से मेड़ता छीनकर वहां अपना राज्य स्थापित किया था एवं रतनसिंह को कुड़की सहित १२ गांवों की जागीर सौंप दी थी। मीरां रतनसिंह की इकलौती सन्तान थीं। उससे पहले जन्मे भाई गोपाल की मृत्यु हो चुकी थी। दुर्भाग्यवश जब मीरां ३-४ वर्ष की थी तभी उसकी मां की मृत्यु हो गई एवं तदुपरांत लालन-पालन हेतु उसकी दादी उसे मेड़ता ले आई जहां राव दूदाजी के सबसे बड़े पुत्र राव बीरमदेव की पत्नी ने उसे अपनी पुत्री की तरह ही बड़े लाड़-प्यार से पाला। पितामह राव दूदाजी की तो वह लाडली थी ही।

राव दूदाजी बड़े भक्त थे। उन्होंने मेड़ता में ही अपने इष्टदेव चारभुजानाथ का भव्य मंदिर बनवाया जहां नित्य कथा कीर्तन चलता था एवं वे उसमें बराबर जाते रहते थे। मीरां भी सदैव उनके साथ ही रहती। इस प्रकार बचपन में ही मीरां में भक्ति के अंकुर प्रस्फुटित हो गए एवं एक प्रकार से उसके दादा ही उसके गुरु या प्रेरणा स्रोत बने। वैसे मीरां ने लिखा है कि यह भक्ति उनकी एक जन्म की न होकर जन्म-जन्मांतर की थी यथा- 'मीरा दासी जनम-जनम की, पूरब जनम की प्रीति हमारी' इत्यादि।

राव दूदाजी के पास बड़े बड़े सन्त महात्माओं का भी निरन्तर आना-जाना लगा रहता था। एक बार एक सन्त का वहां ३-४ दिन का प्रवास हुआ। उनके पास गिरधर गोपाल की मूर्ति थी जिसकी वे नित्य पूजा अर्चना करते। मीरां को यह मूर्ति मन में भा गई एवं इस मूर्ति को अपने पास रखने का वह हठ करने लगी। महात्मा भला अपना पूजा का विग्रह क्यों देते? वे चले गए तो मीरां ने मूर्ति के लिए जिद करके खाना-पीना बन्द कर दिया। उधर रास्ते में महात्मा को स्वप्न में भगवान का आदेश हुआ कि मेरे विग्रह को मीरां के पास पहुंचा दो। महात्मा ने लौटकर विग्रह मीरां के हाथ में थमा दिया। सारा राजमहल इससे चकित रह गया। कुछ लोगों का मानना है कि ये महात्मा रैदास ही थे जिन्हें मीरां ने अपना गुरू माना है। एक दिन मीरा अपने बड़ी मां के साथ राजमहल से किसी बारात को देख रही थी। सजे-धजे दूल्हे को देखकर वह पूछ बैठी- 'मेरा दूल्हा कहां है?' बड़ी मां ने कहा कि गिरधर गोपाल ही तुम्हारे दूल्हे हैं। इसी वाक्य ने मीरा को इच्छित वरदान दे दिया। वह सच्चे रूप से गिरधार गोपाल को ही अपना पति मानकर उनकी सेवा पूजा और भी आग्रह से दिन-रात करने में जुट गई।

मीरा जब १२ वर्ष की हुई तो दूदाजी ने उसके लिए योग्य वर तलाशने की सोची। उस समय मेवाड़ का घराना पूरे हिन्दू समाज का शिरमौर था। दूदाजी ने महाराणा सांगा के सबसे बड़े पुत्र भोजराज से मीरां के विवाह का सोचा पर अचानक ही वे चल बसे। उनके बाद राव बीरमदेव मेड़ता की गद्दी पर बैठे एवं उनके प्रत्यन से वि.सं. १५७३ की वैशाख शुक्ला ३ को मीरा का विवाह कुंवर भोजराज से सम्पन्न हुआ। स्वयं महाराणा सांगा भी बारात में शामिल थे। विवाह तो सानन्द सम्पन्न हो गया पर मीरा के मन में उत्साह नहीं था, वह तो संशयग्रस्त थी। मीरा का मानना था कि उसका विवाह तो पहले ही गिरधर गोपाल से हो चुका है, अब और विवाह कैसा? परिवार के दबाव में एवं 'मेड़ता राजवंश की कीर्ति कलंकित न कर!' इस उलहाने की विवशता में वह विवाह मंडप में फेरे लेने बैठ गई पर चंवरी में गिरधर गोपाल का विग्रह भी प्रतिष्ठित करवा लिया एवं मन-मन में तय कर लिया कि उसने तो अपने गिरधर से ही फेरे लिए हैं।

विवाह कर जब वह चित्तौड़ पहुंची तो रूप-गुण देख कर ससुराल के सभी लोग प्रसन्न हुए पर शीघ्र ही नाराजगी का अवसर भी आ गया। गौरी पूजन के दिन सास एवं ननद ने सुहाग के लिए गौरी पूजन हेतु जाने को कहा तो मीरा ने यह कहते हुए किसी की एक न सुनी कि उसका सुहाग तो अखंड है, जिसे संदेह हो वह किसी अन्य देव की पूजा करे। इसकी परिणति की भी हम स्वाभाविक रूप से ही कल्पना कर सकते हैं कि पर कुंवर भोजराज विवेकी व्यक्ति थे एवं मीरा के स्वभाव एवं सेवाभाव से प्रसन्न थे अतः उनके आपसी रिश्तों में खटास नहीं आई और उन्हें यह लगने लगा कि यह तो पूर्व जन्म की कोई गोपी है। कहते हैं कि भोजराज ने मीरा की सहमति से दूसरा विवाह भी कर लिया

पर राजाओं में बहु विवाह की प्रथा वैसे भी प्रचलित थी। मीरा के श्वसुर राणा सांगा भी केवल महान योद्धा ही नहीं उतने ही आस्तिक एवं भक्त भी थे, अत: वे मीरा के प्रति उदार बने रहे एवं श्याम मंदिर के पास एक अलग महल बनवा दिया ताकि उसमें रहकर मीरा दिन रात अपने इष्टदेव की सेवा कर सके।

पर संसार तो बदलता रहता है, सुख-दु:ख का पाला भी बदलता रहता है। मीरां पर भी अचानक दु:ख का पहाड़ टूटा पड़ा। वि.सं. १५८० में उसके पति भोजराज का देहान्त हो गया एवं उसके चार वर्ष पश्चात १५८४ वि. में उसके श्वसुर राणासांगा भी बाबर के साथ हुए इतिहास प्रसिद्ध खानवा के युद्ध में घायल होकर परलोक सिधार गए। इसी युद्ध में उसके पिता रतनसिंह एवं चाचा रायमल भी मारे गये। राणा सांगा के बाद उनके दूसरे पुत्र रतनसिंह गद्दी पर बैठे पर वे भी १५८८ वि. में एक युद्ध में मारे गए एवं तब चित्तौड़ की गद्दी पर बैठे मीरा के देवर विक्रमजीत जिसे मीरा की यह भक्ति फूटी आंख से भी नहीं सुहाती थी। उनकी दृष्टि से मीरा उनके महान राजघराने की मर्यादा भंग कर उसे कलंकित कर रही थी।

विक्रमजीत ने मीरा को इससे विरत होने के लिए अपनी बहन एवं अन्य दास दासियों को भी लगाया पर इसका अनुकूल असर न होने पर उस पर नाना प्रकार की पाबंदियां लगा दी। पर मीरा कब इन प्रतिबंधों को स्वीकार करने वाली थी? वह कह उठी-

राणोजी रुठै तो म्हारो काँई करसी, म्हे तो गोविंद का गुण गास्यां हे माय।

राणोजी रूठै तो बांरो देश राखसी, हरि रूठ्यां कित जास्यां हे माय।।

लोकलाज की काण न मानां, निरभै निशान घउरास्यां हे माय।।....

बरजी मैं काहू की नहीं रहूं।

सुनो री सखी तुमसौ या साची बात कहूं।।...

राणा इससे बहुत ही क्रुद्ध हो गए एवं उन्होंने अब कुचक्र चला कर मीरां को मिटा देने का संकल्प कर लिया। पहले उन्होंने भयंकर नाग को पिटारी में बंद कर शालगराम के नाम से मीरां के पास भिजवाया ताकि वह उसे डस ले पर आश्चर्य, वह तो शालगराम की मूर्ति ही बन गया। बाद में जहर का प्याला भेजा, वह भी चरणामृत बन गया एवं मीरा का बाल भी बांका नहीं हुआ। अब उसके क्रोध का पारावार नहीं रहा। इधर मीरा ने राजघराने का वातावरण भक्ति-साधना के इतना प्रतिकूल पाया कि वहां से चला जाना उचित समझ कर अपने पीहर पत्र लिखा। मेड़ता से राव बीरमदेव जी भागे-भागे आए एवं परिस्थिति देख कर मीरां को मेड़ता ले गए।

इस पर भी संकट ने मीरा का साथ नहीं छोड़ा। जोधपुर के राजा ने मेड़ता पर हमला कर दिया एवं राव बीरमदेव को मेड़ता छोड़ कर अजमेर में आश्रय लेना पड़ा। मीरा भी उनके साथ ही गई। एक वर्ष बाद अजमेर में भी ऐसी ही स्थिति उत्पन्न होने पर मीरा कृष्णभक्ति के लिए वृन्दावन प्रस्थान कर गई।

मीरां अब पूर्णत: सन्यासिन बन गई एवं वृन्दावन के उस समय के प्रसिद्ध संत श्रीजीव गोस्वामी के दर्शन करने गई। गोस्वामीजी ने स्त्री होने के नाते मीरा से मिलने से मना कर दिया। मीरा ने उत्तर में कहलाया कि वह तो जानती थी कि वृन्दावन में केवल श्रीकृष्ण एक ही पुरूष है बाकी सब उनकी प्रकृति है पर आज पता लगा कि यहां कोई दूसरा भी पुरूष है। इससे श्रीजीव गोस्वामी प्रसन्न हुए एवं मीरा से प्रेमपूर्वक मिले एवं सत्संग किया। मीरा को वृन्दावन भा गया एवं बहुत दिन तक वहां रही। उनका प्रसिद्ध भजन है-

आली मोहि लागे वृन्दावन नीको।

घर घर तुलसी ठाकुर पूजा, भोजन दूध दही को।।..

उधर कालचक्र ने मोड़ लिया। १५९५ वि. में महाराणा प्रताप के पिता महाराणा उदयसिंह मेवाड़ के अधिपति बने। उन्होंने मीरा को मेवाड़ लौट आने का आग्रह किया। मीरा के पीयर से भी लौट आने का दबाव बढ़ रहा था। इसे टालने हेतु मीरा वृन्दावन छोड़ कर द्वारिका चली गई। वहां जाने पर भी उदयसिंह का आग्रह एवं दबाव बढ़ता ही रहा क्योंकि राज ज्योतिषियों का कहना था कि मीरा के लौटने से ही मेवाड़ का पुन: भाग्योदय होगा। उदयसिंह ने दो ब्राह्मणों को द्वारिका भेजा एवं किसी भी तरह मीरां को लौटा लाने की हिदायत दी। ब्राह्मणों ने मीरा के मना करने पर अनशन कर प्राणान्त की बात कही तो मीरा ने एकदिन का समय मांगा एवं उसी रात्रि में द्वारिकाधीश की मूर्ति के सामने नाचते-गाते उन्हीं की मूर्ति में समा गई। यह घटना वि.सं. १६०३ की है। कहते हैं कि जब मीरा प्रभु के सामने नाच रही थी तो प्रभु ने अकस्मात उन्हें अपने में लीन कर लिया एवं संसार के दिखावे हेतु मीरा की नूचड़ी का एक छोड़ अपने मुख से लटका हुआ बाहर रहने दिया ताकि लोग इसे जान सकें।

यह भी कहा जाता है कि मीरा एवं संत तुलसीदास का भी संवाद हुआ था। तुलसी ने 'जाके प्रिय न राम वैदेही, तजिए ताहि कौटि बैरी सम जद्यपि परम सनेही' पद मीरा को ही इंगित कर लिखा था।

यद्यपि इतिहास में मीरा के बारे में अधिक कुछ नहीं लिखा गया है पर मीरां आज भी अपनी भक्ति एवं भक्तिपदों के कारण जन-जन के हृदय में जीवित है। उनकी जन्म पंचशती का जगह-जगह मनाया जाना इसी का प्रमाण है।●

## जन्माष्टमी (६ सितम्बर २००४)

एक रात्रि में सहस्र रात्रियां समाए ऐसे रास के रमैया
कृष्ण-नाम कृष्ण नाम प्राण में सजाए ऐसे बांस के बजैया
पूतना-संहार तीन मास में दिखाए ऐसे त्रास के तचैया
बिना शस्त्र ध्वंस कंस प्रजातंत्र लाए ऐसे राज के रचैया
बेड़ियां बिडार, मृतक भ्रातृ द्वंद लाए ऐसे देवकी के जैया
रङ्क था सुदाम, ठेठ सेठ कर दिखाए ऐसे दीन के मितैया
भीष्म द्रोण बैठे-बैठ शीश को झुकाए ऐसे चीर के बढैया
शङ्ख चक्र धार कार्य पार्थ को सिखाए ऐसे पाठ के पढैया
इन्द्र या फणीन्द्र गर्व खर्व गिरि उठाए ऐसे ठाठ के ठठैया
प्रेम में निमग्न छाछ मांग-मांग खाए ऐसे गोपियों के सैयां
अंग अंग राधिका के रंग में रमाए ऐसे द्वेत के नसैया

*** प्रदीप सेठिया, कोलकाता**

# उत्तर-पूर्वांचल के वनवासियों का धर्मान्तरण : स्थितियां और कारण

✍ डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध', जयपुर

उत्तर-पूर्वांचल के नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम और मेघालय प्रदेश इसाईकरण की चपेट में है और वहां चर्च-संस्कृति की विकृतियों के कारण नगालैंड की ९० प्रतिशत, मणिपुर की ३५ प्रतिशत, मिजोरम की ८६ प्रतिशत और मेघालय की ६५ प्रतिशत से अधिक आबादी का धर्मांतरण किया जा चुका है। इन प्रदेशों की जनजातियां, भोली-अबोली, अल्पज्ञता हैं और भारतीय संस्कृति-सभ्यता से कट गई हैं, उनका अर्थतंत्र टूटा हुआ है जिसे दृष्टिगत रख कर पादरी उनके धर्म परिवर्तित कर रहे हैं। वे इन जनजातियों के निवासियों को बरगला रहे हैं कि यदि उन्हें मोक्ष चाहिए तो वह केवल चर्च संस्कृति के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है। वनवासियों के मन को आकर्षित करने के तीन बिन्दु रहे हैं- प्रकृति में ईश्वर दर्शन है, हमारे जीवन मूल्य और सभी मार्गों से ईश्वर तक पहुंचा जा सकता है। पूर्व में इन्हीं बिन्दुओं के कारण वनवासियों का विश्वास भारत की सनातन सांस्कृतिक परंपराओं में था और वे पौराणिक आधार पर हिन्दुत्व की रक्षा में जीवन की गरिमा समझते थे, किन्तु उत्तर-पूर्वांचल में जैसे ही अंग्रेजों ने प्रवेश किया, वहां चर्च बनाये गये। शनैः शनैः जन जातियां भांति-भांति के प्रलोभनों के कारण भारतीय धर्म और संस्कृति इतिहास सभी से अलग-थलग होती चली गई और उनका स्थान चर्च-संस्कृति ने ग्रहण करके वहां के प्रदेशों में ईसाई जनसंख्या का बहुल्य कर दिया। भोले वनवासी पादरियों की इस घिनौनी और योजनाबद्ध चाल को नहीं समझ सके और भारत में रहते हुए भारत से कटते चले गए।

यद्यपि सन् १८१३ में चर्च की गतिविधियां उत्तर पूर्वांचल में प्रारंभ हो गई थी किन्तु ईसाईकरण के प्रयासों को सन् १९४० में पूर्ण सफलता मिली, जब उनके विद्यालयों एवं चिकित्सालयों के माध्यम से अर्थाभाव में डूबे वनवासी हिन्दू से ईसाई बनाए गए।

प्रारंभ में मेघालय के खासी, जयंतिया और गारों समाज के वनवासियों को मतान्तरित किया गया। बाद में नागा, कूकी और मिजोरम आदि जनजातियां भी मतान्तरित होती चली गयी। फलतः मेघालय, नगालैंड, मणिपुर और मिजोरम ईसाई बहुल प्रदेशों में परिवर्तित हो गए।

वनवासियों को ईसाई बनाए जाने के घृणित कार्य में दूसरा कारण रहा उग्रवादी दलों का विकास। भारत सरकार से सशस्त्र संघर्ष के लिए चर्च ने उग्रवादी दलों को पनपाने की योजना बनाई जिसे उन्होंने स्वाधीनता आन्दोलन का नाम दिया। उग्रवादियों की सहायता से अर्थात् बन्दूक की नोक पर भी वनवासियों के मतान्तरण किए गए।

वन क्षेत्रों में ईसाईकरण को बढ़ावा दिए जाने से तीसरा कारण रही बंगलादेशी घुसपैठ। असम में तो मुस्लिम जन संख्या तीस प्रतिशत हो गई। बंगलादेश से आने वाले मुस्लिम असम तक ही सीमित नहीं है वरन् उन्होंने अन्य जनजातीय पर्वतीय राज्यों में भी एक बड़ी संख्या में घुसपैठ की और वे जनजातीय बालाओं से विवाह करके वहां रच बस गये। वनवासियों का ईसाई बनना तो सर्वविदित है लेकिन मुसलमान बनना उत्तर-पूर्वांचल की प्रथम घटना है। दोतरफा धर्मान्तरण की यह प्रक्रिया इतनी तेज हो चली है कि वनवासी अपनी सांस्कृतिक भारत की पहचान खोने लगे हैं और काम के बदले अनाज जैसी चर्च की योजनाओं ने उन्हें कालभ्रमित बनाकर निःसंग यात्रा से जोड़ दिया है।

स्थिति यह कि एक ओर चर्च द्वारा मतान्तरण के प्रयास जोरों पर है और दूसरी ओर अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के मार्गदर्शन में लगभग तीस जनजातीय धार्मिक संगठन अपने सनातन धर्म और सांस्कृतिक परम्पराओं को पुनर्जीवित करने के कार्य में जुटे हैं। चर्च की योजना पूर्वांचल के पूरे क्षेत्र को ईसाई देश बनाने की है, किन्तु हमारी धार्मिक और सांस्कृतिक जड़े इतनी गहरी हैं कि यह बदलाव संभव नहीं है। प्रयासों के बावजूद चर्च संस्कृति उत्तर-पूर्वांचल में भारतीय संस्कृति की जमीन पर कोई बड़ा निर्माण नहीं कर सकी है जैसा उसने अन्य यूरोपीय और अफ्रीकी देशों में किया था।

भारत के वनवासी अंचलों में जनजातियों की जनसंख्या साढ़े आठ करोड़ है। लगभग ४६७ जनजातियों के ३२१ जिले हैं, दो हजार विकासखण्ड और एक लाख तियालीस हजार ३५८ गांव। वनवासी समाज में अपनी आस्थाओं, परम्पराओं और मान्यताओं के प्रति विश्वास जागृत करके ही ईसाईकरण को रोका जा सकता है। इस दिशा में यह भी आवश्यक है कि वनवासियों को अपनी पहचान, अपनी रक्षा, स्वाभिमान और आत्म गौरव के लिए सजग रखा जाए ताकि वे सेवा के छद्म आवरण के पीछे चल रही चर्च की अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों से परिचित और सावचेत हो सकें। उन्हें शिक्षा, संस्कार और स्वावलम्बन के आधार पर सर्वांगीण विकास के लिए भी प्रेरित करना होगा ताकि वे अपने समाज के सुदृढ़ नेतृत्व के लिए तैयार हो सकें। इसके लिए उनके मन को जगाना होगा और उनके मन में इच्छा शक्ति जागृत हुई तो वे निश्चित रूप से स्वप्रेरणा तथा स्वनिर्णय से राष्ट्रहित में सहायक होंगे।●

# नैतिकता को नकारती क्रूरता

✍ **कोमल अग्रवाल,** जूनागड़, कालाहांडी (उड़ीसा)

विधाता ने नारी और पुरुष को एक दूसरे को आधार बनाया है, एक दूसरे का सम्पूरक। फिर ऐसा क्यूं कि जहां एक ओर नारी श्रद्धा है वहीं दूसरी ओर जन्म लेने वाली कन्या की गर्भ में ही हत्या कर दी जाती है। सृष्टि की प्रलय उपरांत विधाता के लिखे से केवल दो प्राणी जीवित बचे थे उसमें से पहला व्यक्ति यदि मनु (मनुष्य) था तो दूसरी श्रद्धा (नारी) थी। जिस सत्य को विधाता ने स्वयं अपने हाथों से रचा है उसे मनुष्य आज मिटा देने पर तुला हुआ है। हममें से अनगिनत लोग ऐसे हैं जो समाज के प्रति अपनी कोई जिम्मेदारी नहीं मानते। पारिवारिक जिम्मेदारियां ही उनके लिए सब कुछ होती है लेकिन परिवार समाज का हिस्सा है अत: समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी दो गुना अधिक बढ़ जाती है।

शायद की बात हम तब कर सकते हैं जब हम हमारे क्षेत्र को इस घिनौने कृत्य से आजादी दिलवाएं। समग्र उड़ीसा ही नहीं कालाहांटी के अनेक ऐसे कस्बे हैं, गांव है जहां हर गली में एक मकान तो ऐसा अवश्य ही मिल जाएगा जहां कन्या की भ्रूण अत्या हो चुकी हो, हो रही हो या होने वाली हो। गुजरात रांजस्थान व मध्य प्रदेश के अनेक गांव है जहां जन्म लेते ही कन्या शिशु को निर्ममता से मार दिया जाता है। सब कुछ देख सुन कर भी हम दृष्टिहीन, मूक बधीर हो जाते हैं।

वह समय अब कुछ जाता रहा है जब दहेज समाज की एक विकट समस्या के रूप में सामने उभर कर आया था। आज दहेज उतना बड़ा मसला नहीं रहा जितनी कि भ्रूण हत्या है। इक्कीसवीं सदी में महंगाई बेरोजगारी ने अपना विकराल रूप फैलाया है जिसके तहत लोग परिवार बढ़ाना नहीं चाहते। १०० में से ८० प्रतिशत उन लोगों की बहुलता है जो लड़का पाने की चाहत में एक के बाद एक उम्मीद बना उसे तोड़ते जाते हैं। इशारा जाता है उन मेडिकल हास्पिटल्स, प्राइवेट क्लीनिकों व उन डाक्टरों की तरफ जो पहले तो माता-पिता को परीक्षण के जरिये गर्भ से लड़की के होने की सूचना देते हैं फिर उन्हीं से मनचाहे रुपये निकलवा कर इस कार्य को अंजाम देते हैं और इस अपराध को सीधी सहज डाक्टरी भाषा में 'अबार्शन' या 'गर्भपात' का नाम दे दिया जाता है।

फिर भी कन्या भ्रूण हत्या के लिए एक व्यक्ति को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। इस हत्या को रोकने के लिए सर्वप्रथम हमें अपनी मानसिकता बदलने की आवश्यकता है। लड़के और लड़की के बीच जो छोटे और बड़े का फर्क है उसे मिटाने की आवश्यकता है। हर मां को यह अहसास दिलाने होगा कि एक औरत दूसरी औरत को खत्म कर स्वयं का वजूद खत्म कर रही है।

तीसरे पक्ष में भ्रूण परीक्षण के नतीजों को स्पष्ट करने पर प्रतिबंध लगाना होगा। व चौथे चरण में उन डाक्टरों व नर्सों पर प्रतिबंध लगाना होगा व इस हत्या में लिप्त हरेक व्यक्ति को कड़ी सजा दिलवानी होगी। वह जागरूकता लानी होगी जिससे हर व्यक्ति इसके खिलाफ हो जाए। इन सारी परिस्थितियों स्थितियों से यद्यपि एक आम व्यक्ति का कोई सीधा संबंध नहीं परंतु समाज का है अत: आम व्यक्ति का मानस इस समस्या से पूर्णत: कट कर रहे ऐसा संभव नहीं है। यह सब होते हुए सहज प्रश्न उठता है कि इस हत्या को रोकने के लिए हमें प्रयास करना भी चाहिए या नहीं? इसका उत्तर कौन दे? लेकिन वास्तविकता यही है कि यह समस्या बहुत बड़ी है।

आज भले ही हमें इसका कोई कुप्रभाव देखने को नहीं मिल रहा परंतु भविष्य में इसका अचूक दूरगामी कुप्रभाव दृष्टिगोचर होगा जब समाज में लड़कों की बहुलता व लड़कियों की कमी देखने को मिलेगी। हमारे द्वारा काटे गये पौधे की जमीन हम बंजर पायेंगे। यदि गौ हत्या अपराध है, यदि मानव हत्या अधर्म है तो भ्रूण हत्या मनावीचित गुणों का निश्चय ही हनन है।

भलाई इसी में है कि समय रहते हम इस क्रूरता को जीवन से निकाल कर फेंक दें।●

भारत की जनसंख्या के आंकड़े पिछले दिनों अखबारों में आए थे। बाद में उनमें कुछ सुधार किया गया था निम्नलिखित प्रतिशत बताया है-

| वर्ष | हिन्दू | मुस्लिम |
|---|---|---|
| १९६१-७१ | २३.४ | ३१.२ |
| | (-२३.७) | (३०.८) |
| १९७१-८१ | २४.२ | ३०.८ |
| | (२१.३) | (२२.९) |
| १९८१-९१ | २२.८ | ३२.९ |
| | (२५.१) | (३४.५) |
| १९९१-०१ | १९.९ | २९.३ |
| | (२०.५) | (३६) |

पिछले दिनों केरल में कुछ हिन्दुओं द्वारा धर्म परिवर्तन की खबर आई थी। अभी इस महीने के अखबार में एक स्कूल में छात्रों के लिए खाना बनाने का दो शिक्षकों ने दलित वर्ग के लिए अलग एवं अन्य के लिए अलग बनाना प्रारंभ किया था जिसे कलेक्टर ने सूचना मिलते ही बंद करवाया एवं सबका खाना दलित महिला द्वारा बनवाना प्रारंभ हो गया। आज छुआछूत उठ गई है, अंतर्जातीय विवाह भी होने लगे हैं लेकिन तथाकथित दलितों के प्रति अन्याय आज भी देश के विभिन्न भागों में चालू है जो अविलम्ब बंद होना बहुत आवश्यक है। सम्मेलन के पदाधिकारियों ने सन् १९८० में हरिजनों के साथ बैठकर खाना खाया था। पूरे देश में हर व्यक्ति को यह प्रयास करना आवश्यक है कि हिन्दू जाति का कोई भी व्यक्ति दलित की संज्ञा से संबंधित न किया जाए और सामाजिक स्तर पर एक दूसरे के समकक्ष रहे।

# उड़ीसा में समाज पर प्रहार

# लूट-आगजनी-मारपीट आदि आदि सम्मेलन की प्रभावी कार्रवाई

२९ सितम्बर १९८० को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के नाम से भेजा गया पहला तार महात्मा गांधी रोड स्थित हमारे केन्द्रीय कार्यालय में पहुंचा- **'मारवाड़ी समाज पर साम्प्रदायिक प्रहार, सरकारी स्तर पर तुरन्त कार्रवाई करवायें।'**

अविलम्ब सम्मेलन के कलकत्ता स्थित कार्यालय में पदाधिकारियों की बैठक बुलाई गई।

३० तारीख की सुबह सम्मेलन कार्यकर्ता श्री गिरधारीलाल जगतरामका का फोन आया कि "सम्बलपुर से एक पत्र मिला है 'मारवाड़ी समाज के घर और दूकानों की लूटपाट हो रही है। व्यक्तियों को रेलों से उतार कर पीटा जा रहा है। दुकानें जल रही हैं। पत्र आपको भेज रहा हूं।"

**पत्र प्राप्ति के साथ सम्मेलन ने प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, गृह मंत्री श्री जैल सिंह एवं उड़ीसा के मुख्यमंत्री श्री जानकी वल्लभ पटनायक को निम्नलिखित तार प्रेषित किया :-**

(1) Marwari community as a whole being attacked in Orissa your goodself requested to take stern actions against divisive and antinational forces we extend all cooperation.

Dated 4.10.80, Addressed to-
1) Smt. Indra Gandhi
Prime Minister of India
2) Sri Zail Singh
Home Minister, Govt. of India
3. Sri Jankivallabh Patnaik
Chief Minister of Orissa

हमारी प्रांतीयशांखा उड़ीसा के अध्यक्ष एवं मंत्री को भी निम्नलिखित तार भेजा गया है :-

(2) Dated 30.9.80, Addressed to :-
1. Sri Gajanand Agarwal
President
2. Sri Gaurishankar Agarwal
Secretary, Utkal Pradeshik Marwari Sammelan
Uditnagar, Rourkela- 769012
Deeply concerned on Orissa incidents taking up matter with highest authority talk over phone Residence 44-2790

प्रतिदिन अखबारों की सुर्खियों में उड़ीसा की खबरें छपती जा रही थीं। सम्मेलन के प्रधानमंत्री श्री बजरंगलाल जाजू जो उस समय दिल्ली में थे, ने केन्द्रीय गृह सचिव श्री वर्मा से व्यक्तिगत साक्षात्कार किया एवं उनसे आश्वासन प्राप्त किया कि घटनाओं पर काबू पाने के लिए उचित निर्देश भेज दिये गये हैं। रायपुर, बलांगीर, टिटिलागढ़ से तार पर तार आ रहे हैं कि पूरा मारवाड़ी समाज दहशत की जिन्दगी जी रहा है। पलायन कर रहा है।

४ अक्टूबर को सम्मेलन द्वारा एक आपात बैठक बुलाई गई। समस्त घटनाओं को मुद्दे नजर रखते हुए देश के प्रधानमंत्री, गृह मंत्री एवं उड़ीसा के मुख्य मंत्री को एक और तार भेजा गया :-

(3) Dated 4.10.80, Addressed to-
1) Smt. Indra Gandhi
Prime Minister of India
2) Sri Zail Singh
Home Minister, Govt. of India
3. Sri Jankivallabh Patnaik
Chief Minister of Orissa

Sammelans emergent excutive committee meeting held today expresses its grave concern over recent antisocial and disruptive happenings in the country specially in Orissa presistent telegrams show people there panicky and unsafe request immediate effective steps we extend fullest comperatuon.

**दिल्ली में श्री बजरंगलाल जाजू ने प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी से साक्षात्कार का समय मांगा और बीस सांसदों को साथ लेकर उनसे मिले। उड़ीसा में समाज पर हो रहे हमले, लूट आदि की मौखिक जानकारी श्रीमती गांधी को दी और सभी सांसदों ने समुचित सशक्त कार्रवाई का अनुरोध किया। प्रधानमंत्री ने कार्रवाई का आश्वासन देते हुए उड़ीसा के मुख्यमंत्री श्री पटनायक की टेलीफोन**

लाइन मांगी।

श्री बजरंगलाल जाजू ने दिल्ली में पुन: गृहमंत्री श्री जैल सिंह से मुलाकात की एवं पूरी स्थिति से उन्हें अवगत कराते हुए उचित कार्रवाई करने का अनुरोध किया। प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के कार्यालय से फोन पर सूचना प्राप्त हुई कि उचित कार्यवाही की जा रही है। सम्मेलन द्वारा दिनांक २, ६ व १० अक्टूबर को प्रेस विज्ञप्ति प्रसारित की गई। फलस्वरूप लगभग तीन सप्ताह में स्थिति पर उड़ीसा सरकार ने पूर्ण काबू पा लिया।

सम्मेलन द्वारा उड़ीसा के क्षतिग्रस्त इलाकों का दौरा करने का निर्णय लिया गया। जिससे लोगों के अन्दर पुन: विश्वास पैदा किया जा सके। अत: उड़ीसा शाखा से सम्पर्क स्थापित करके दौरे की रूपरेखा तैयार करने व उड़ीसा के मुख्यमंत्री से व्यक्तिगत मुलाकात करने की प्रारम्भिक कार्यवाही के प्रयास किये गये। दिल्ली में श्री बजरंगलाल जाजू उड़ीसा के मुख्यमंत्री श्री जानकी वल्लभ पटनायक से १२ तारीख को मिलने वाले थे। अत: दौरे की तारीख उसके बाद की तय की गई। सम्मेलन के महामंत्री श्री जाजू ने उड़ीसा के मुख्यमंत्री श्री पटनायक व उनके प्रधान निजी सचिव एवं राज्य के उद्योग मंत्री श्री पटेल से करीब एक घंटे विचार-विमर्श किया। श्री पटनायक ने जो घटना घटी उस पर गहरा दु:ख प्रकट किया एवं आश्वासन दिया कि विघटनकारी तत्वों के खिलाफ कड़े से कड़े कदम उठाये जाएंगे। कुछ माल भी बरामद किया गया। उड़ीसा में बसे मारवाड़ियों को किसी भी तरह की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

१६ तारीख से १८ तारीख तक सम्मेलन का प्रतिनिधि मंडल जिसमें श्री भंवरमल सिंघी, श्री नन्दकिशोर जालान एवं श्री रतन शाह थे, उड़ीसा के दौरे पर गया। सम्बलपुर, लूइसिंगा और बलांगीर, बरगढ़, झारसुगुड़ा, राउरकेला आदि स्थानों का दौरा किया। छोटी-मोटी गोष्ठियों के माध्यम से स्व-सुरक्षा एवं आत्म-विश्वास की भावना पैदा की गई। दौरा करने के बाद निम्नलिखित प्रस्ताव पारित हुए :-

१. बलांगीर जिले में हुई घटना की न्यायिक जांच तुरन्त करवाई जानी चाहिए।

२. न्यायिक जांच में जो भी व्यक्ति दोषी पाये जायें, उन्हें बिना किसी जाति या वर्ग भेद को ध्यान में रखते हुए, उचित दण्ड दिया जाए।

३. क्षतिग्रस्त व्यक्तियों को पुन: स्थापन हेतु क्षतिपूर्ति की रकम व ब्याज रहित ऋण तथा टैक्स राहत आदि सुविधाएं उपलब्ध कराई जायें।

४. भविष्य में इस तरह की घटना नहीं घटे इस हेतु सतर्कतापरक ठोस कदम उठाये जायें।

५. सभी जाति के लोगों में विश्वाश कायम हो, इस हेतु केन्द्रीय एवं प्रान्तीय सरकार के नेता उन क्षेत्रों का व्यक्तिगत दौरा करें।

लौटते वक्त राउरकेला के अन्दर उड़ीसा प्रान्तीय सम्मेलन के महामंत्री श्री गौरीशंकर अग्रवाल एवं अन्य लोगों के साथ विचार-विमर्श करके यह तय किया गया कि पीड़ित समाज की पीड़ा में सहभागी बनने हेतु हमें उड़ीसा में आगामी दीपावली नहीं मनानी है।

१८ तारीख को दिल्ली के अन्दर श्री बजरंगलाल जाजू ने इस पूरे कांड के सक्रिय विवेचन हेतु एक सभा बुलाई, जिसमें सम्मेलन के तत्कालीन अध्यक्ष श्री रामप्रसाद जी पोद्दार भी सम्मिलित थे तथा उड़ीसा के विभिन्न इलाकों के अतिरिक्त पूरे देश से प्रतिनिधि पहुंचे थे। सभा में इन घटनाओं पर क्षोभ प्रकट करते हुए क्षतिग्रस्त भाइयों को सहायता देने हेतु निर्णय लिया गया। बलांगीर जिला शाखा को लिखा गया कि किन-किन लोगों को किस-किस तरह की मदद दी जानी चाहिए, इस बात का ब्यौरा प्रेषित करें।

कलकत्ता, बम्बई में प्रयत्न कर कुछ आर्थिक सहायता भेजी गई। इस बीच यह सूचना भी मिली कि इन दंगों के पीछे जिस मंत्री का सहयोग था उसे मंत्रीमंडल से हटा दिया गया है।

दिनांक ४-११-१९८० को कलकत्ता प्रेस क्लब में एक प्रेस कान्फ्रेंस बुलाई गई, जिसमें श्री भंवरमल सिंघी, श्री नन्दकिशोर जालान एवं श्री रतन शाह ने जुडिशियल इन्क्वायरी की मांग रखी तथा प्रेस विज्ञप्ति प्रसारित की :-

केन्द्रीय कार्यालय के अतिरिक्त सम्मेलन की विभिन्न दकाइयों से करीब ६० तार एवं प्रतिवेदन उच्च अधिकारियों को भेजे गये।●

*इस संसार में और अपने देश में भी परिवर्तन, निर्माण और विध्वंस होते रहते हैं। मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य विध्वंस से पुन: निर्माण करने के समय कहीं अधिक उभर कर आती है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण २ नवम्बर को राउरकेला में हुई उत्कल प्रादेशिक सम्मेलन की प्रान्तीय समिति की बैठक में (उपस्थिति लगभग ५००) मिला था। उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का चतुर्थ अधिवेशन तारीख ५ अप्रैल १९८१ को भुवनेश्वर में संयोजित हुआ और उसमें उड़ीसा की राजनीति से रोटी-दाल की तरह जड़े हुए वरिष्ठ राजनीतिज्ञ श्री हरेकृष्ण महताब, सर्वाधिक प्रचलित दैनिक 'समाज' के वयोवृद्ध सम्पादक श्री राधानाथ रथ और उड़ीसा के मुख्यमंत्री श्री जानकी वल्लभ पटनायक ने वचनामृत के छींटों से अर्चित किया। गत वर्ष सितम्बर-अक्टूबर में उड़ीसा के पश्चिमांचल में हुई विनाशलीला की स्मृति समय-प्रवाह ने अभी धुंधली नहीं की थी। जातिवाद व संकीर्णता के विष के कुपरिणामों के बारे में और इस विष को देश से मिटाने की और महात्मा गांधी के आजीवन प्रयत्न और उनकी विचारधारा की ओर श्री नन्दकिशोर जालान ने प्रारम्भ में सम्मेलन-परिचय देते हुए संकेत किया, तो इन वयोवृद्ध एवं वरिष्ठ राजनीतिज्ञों की विचार-वीथिका खुलकर सामने आई। गांधी युग से जुड़े अपने संस्मरणों का हवाला देते हुए श्री हरेकृष्ण महताब और श्री राधानाथ रथ ने जातिवाद व संकीर्णता की भरपूर निन्दा की। उनके मानस का आलोड़ित रूप और उनका एक-एक शब्द इस बात का साक्षी था कि हर प्रदेश की उन्नति के लिए उस प्रदेश के विभिन्न समाजों की एकता अनिवार्य है और जो भी राजनीतिज्ञ इस एकता में दरार डालने की चेष्टा करता है वह विनाश का पथ प्रशस्त करता है। श्री पटनायक ने तो खुले शब्दों में घोषणा की- 'मैं वचन देता हूं कि इस प्रकार की दुर्घटनाएं पुन: नहीं होने दी जाएगी।'*

# हमारा मारवाड़ी समाज

✍ युगल किशोर चौधरी, चनपटिया (बिहार)

मारवाड़ी समाज देश का महत्वपूर्ण समाज है। जनसंख्या के हिसाब से हमारी आबादी देश की संपूर्ण आबादी का दसवां हिस्सा है। हमारा समाज देश के कोने-कोने में फैला हुआ है तथा अपने परिश्रम, ईमानदारी, मिलनसारिता, दानशीलता, कर्तव्य परायणता, देश भक्ति एवं समस्त मानवता की सेवा भावना के कारण अपनी विशेष पहचान बना चुका है।

हमारा अतीत गौरवशाली रहा है तथा भारत की आजादी के संघर्ष में भी हमारी भूमिका प्रभावशाली रही है। बिड़ला जी पूज्य बापू की आर्थिक शक्ति थे तथा जमुनालाल बजाज उनके पंचम पुत्र कहलाये। हनुमान प्रसाद पोद्दार, स्वदेश बार्गव तथा अनुशीलन समिति से जुड़े हुए थे। डा. राममनोहर लोहिया ने बयालीस की क्रांति में बहुत ही उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह किया था। स्वाधीनता आन्दोलन के संदर्भ में बंगाल के तत्कालीन प्रमुख अधिकारी ए.एच. गजनबी ने लिखा था कि यदि महात्मा गांधी के आजादी के आन्दोलन से मारवाड़ी व्यवसायियों के अलग कर दिया जाए तो नब्बे प्रतिशत आन्दोलन स्वत: समाप्त हो जाएगा।

सादा जीवन उच्च विचार, शाकाहार, मितव्ययिता, आत्मनिर्भरता, भारतीय संस्कृति का पोषण, नैतिक मूल्यों का संवर्धन तथा राष्ट्र और समाज के प्रति समर्पण की भावना हमारी उज्वल विरासत रही है जिस पर हमें गर्व है। 'खाता न बही मारवाड़ी बोले सो सही' जैसी उक्ति हमारी उच्च कोटि की ईमानदारी को अभिव्यक्त करती थी। हमारे समाज द्वारा बनवाये गये स्कूल, कालेज, अस्पताल, धर्मशालाएं, गोशालाएं तथा मन्दिर इत्यादि हमारी उदारता और दानशीलता को दर्शाते हैं।

वर्तमान समय में जब हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं, हमारे समाज ने नई चुनौतियों को साहस के साथ स्वीकार किया है। हमारे समाज में व्याप्त अनेक सामाजिक बुराईयां दूर हुई हैं। बाल-विवाह, विधवा विवाह निषेध, पर्दा प्रथा, अशिक्षा तथा मृतक भोज इत्यादि बुराइयां समाप्त हो गई है। इन बुराइयों को दूर करने में मारवाड़ी सम्मेलन ने काफी प्रभावी भूमिका निभाई है। दहेज, आडम्बर, फिजूलखर्ची, प्रदर्शन और विलासिता आदि सामाजिक बुराईयों के खिलाफ सम्मेलन हमेशा जोरदार आवाज उठाता रहता है जिससे समाज में सुखद परिणाम देखने को मिल रहे हैं। दहेज के खिलाफ वैवाहिक परिचय सम्मेलन तथा सामूहिक विवाह पद्धति ने शानदार भूमिका निभाई है तथा अनेक जोड़ों के जीवन में नई आशाओं का संचार किया है। वैवाहिक परिचय सम्मेलन और सामूहिक विवाह पद्धति को और अधिक जीवन्त बनाने की आवश्यकता है ताकि समाज दहेज दानव का अन्त कर अपनी नई छवि बनाने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ सके। सम्मेलन के पदाधिकारियों और नेताओं को भी इनके माध्यम से अपने बेटे-बेटियों के विवाह सम्पन्न करने चाहिए ताकि समाज को नई प्रेरणा मिले और दहेज मुक्ति का अभियान पूरी ऊर्जा के साथ परवान चढ़ सके।

हमारे समाज ने जहां शिक्षा, व्यवसाय, उद्योग, चिकित्सा, न्याय, टेक्नोलाजी, साहित्य, महिला सबलता एवं प्रशासनिक सेवा इत्यादि क्षेत्रों में प्रगति की है वहीं राजनीति में हमारी भागीदारी काफी न्यून है। लोकसभा में हमारे केवल कुछ ही सांसद है, जिससे राजनीति के प्रति हमारी उदासीनता जाहिर होती है। आज का युग राजनीति प्रधान है और समाज को इस दिशा में भी आगे आना चाहिए।

राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में शामिल करवाने के लिए भी हमें पूरी तन्मयता से लगना है क्योंकि राष्ट्रभाषा हिन्दी के बाद यह सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है और इसकी उन्नति राष्ट्र की भावनात्मक एकता को मजबूती प्रदान करेगी।

हमारा संगठन पहले कीअपेक्षा काफी शक्तिशाली और विस्तारित हुआ है मगर इसको और अधिक संगठित करने एवं फैलाने की जरूरत है। सम्मेलन के उनहत्तर वर्षों बाद भी अनेक प्रदेशों में हमारी प्रादेशिक शाखाओं का नहीं होना हमारी कमजोरी दर्शाता है। जहां हमारी शाखाएं नहीं है वहां उनकी स्थापना होनी चाहिए क्योंकि संगठन में ही शक्ति होती है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी महिला सम्मेलन और मारवाड़ी युवा मंच मिलकर समाज के सर्वांगीण विकास के लिए भागीरथ प्रयास कर रहे हैं और समाज में नई चेतना का संचार हो रहा है। हमारा अतीत गरिमा मंडित रहा है, वर्तमान सुंदर है और भविष्य नि:संदेह उज्वल होगा। नये समाज के निर्माण के लिए हम सबों को समर्पण की भावना से निरन्तर कर्म पथ पर आगे बढ़ते रहना होगा तब जाकर समता, ममता और समरसता से युक्त समाज की रचना हो सकेगी।

महाकवि जयशंकर प्रसाद की निम्न पंक्तियां हमें आदर्श समाज की रचना के लिए प्रेरित कर रही है-

'इस पथ का उद्देश्य नहीं है, शान्त भवन में टिक रहना।
किन्तु पहुंचना उस सीमा पर जिसके आगे राह नहीं।।'

समाज हमारा देवता है और हम उसके उपासक है। आइये हम सभी समाज सेवा का शुभ संकल्प लेकर नये समाज की रचना में जुट जायें, यही समय की पुकार है।

**जय भारत, जय समाज !**

# उस लड़की ने इतना आकर्षित किया, आकर्षित किया कि....

✍ डॉ. गुलाबचन्द कोटाड़िया, चेन्नई

**पूज्य पिताजी,**

आपको जब यह पत्र मिलेगा तब मालूम नहीं आप क्या सोचेंगे? यही न कि इतने वर्षों के बाद गुमनाम पत्र ने कैसे याद कर लिया। इतना अकृतज्ञ पुत्र कैसे हो सकता है जो वृद्धावस्था में पिता व मां को बेसहारा छोड़ दे और अब अचानक कैसे पिता की याद आ गई? अवश्य कोई अपरिहार्य कारण होना चाहिए अन्यथा वह अंग जो स्वयं ही कट कर दूर जा गिरा था वह वापिस जुड़ने की कोशिश क्यों करे? शायद आपका सोचना सही है। पिताजी! पेड़ की जड़ होती है, मकान की आधारशिला, जिसके बिना वह खड़ा ही नहीं रह सकता। जब वे जड़ें व आधारशिला जिसके बिना वह खड़ा नहीं रह सकता ही दरक रही हो तभी मानव को याद आता है अपना अतीत। अरे ! क्या हो गया? ऐसा क्यों हो गया? अब मुझे अपनी भूल का अहसास हो रहा है इसलिए पत्र लिखने का दु:स्साहस कर रहा हूं ताकि अपनी गलती व भूल का कुछ तो प्रायश्चित हो सके। मुझे धीरे-धीरे सब याद आ रहा है कि किस प्रकार आप मुझे अपने कंधों पर बिठा कर स्कूल ले जाया करते थे। आपने सारी उम्र नौकरी की, पर मेरे लिए आपने किसी प्रकार का अभाव नहीं आने दिया। पढ़ाया, लिखाया, मनुष्य बनाया। उच्च से उच्चतम शिक्षा दिलाई ताकि मैं विदेश जाकर खूब कमाऊं। मां-बाप को सुख दूं, उनकी पूरी सेवा सुश्रषा करूं। विदेश भेजते समय अपना पुश्तैनी मकान भी गिरवी रखकर रकम का प्रबंध किया। अपने सिर पर कर्ज ओढ़कर मुझे कितने उत्साह से भेजा। मैं विदेश में पढ़ने व नौकरी पाने चला गया तब से कभी फिर कर देखा भी नहीं, न कोई खोज खबर ली। पिताश्री मां का चेहरा सदा मेरी आंखों के सामने घूमता रहता था। उसकी आंखों के आंसू न थमते थे न सूखते थे। शायद उसे संज्ञान हो गया था कि दूर जाने पर बेटा दूर हो जाता है। उसने बहुत चाहा था कि मैं विदेश जाऊं ही नहीं। उसे आभास हो गया था कि अपना जाया आंखों से ओझल हो जाता है, वह जमीन से ही नहीं मन से भी अदृश्य हो जाएगा। पर आपने जिद्द की कि मैं जरूर जाऊं। आपका एक सपना था जो मैं ही पूरा करूंगा ऐसी आशा आपने अपने मन में पाल रखी थी, जो एकदम खोखली साबित हुई। मैं पूरा नाकारा निकला।

शुरू-शुरू में तो आपके पत्र आते और मैं भी जवाब देता रहा था जो क्रमश: धीरे-धीरे बंद हो गये थे। आपने मेरी परिस्थितियों के बारे में कभी सोचा ही नहीं होगा कि मैं भी कैसी मजबूरी में फंसा हो सकता हूं। मैं आपको इत्तिला भी नहीं दे पाया। अगर देता तो आपका दिल टूट जाता कि जिस बेटे के लिए पूरी जिन्दगी होम कर दी वही बेटा ऐसा खोटा सिक्का निकलेगा। इसलिए मैंने जानबूझकर संवेदनहीनता अपना ली ताकि आपकी भावनाओं को ठेस न लगे। जीवन की सच्चाईयां इतनी कड़वी भी हो सकती है इस पर विश्वास करना भी कठिन है।

मैं क्यों कट गया यह जानना आपके लिए दु:खदायी ही होगा यह मैं जानता था। मैं स्वयं इतना व्यथित हूं कि आपको पत्र लिखने के पूर्व ही मेरा हृदय थर्राता है। एक लड़की के चक्कर में इतना कुछ घट गया जिसका मैंने कभी अनुमान ही नहीं लगाया था। हुआ यों कि जहां मैं रहता था हमारे पड़ोस में ही एक लड़की रहती थी, वह भी भारतीय ही थी। मैं उसकी तरफ आकर्षित हो गया था। वह बड़े ठाट-बाट से रहती थी। उसका बाप भी कोई बड़ा व्यापारी दिखता था। उस लड़की ने प्रारंभ से मेरी अवहेलना ही की। कभी मेरी तरफ ध्यान ही नहीं दिया। आप तो जानते हैं कि इच्छित वस्तु न मिलने पर किस प्रकार हम उसे पाने के लिए सर्वस्व दांव पर लगा देते हैं। न मालूम मैंने उसमें क्या खूबी देखी कि पागल सा हो गया और जिन्दगी में एक ही मकसद बना लिया किसी भी कीमत पर उसे हासिल करके रहूंगा। वह ज्यों-ज्यों मुझसे ज्यादा छिटकती त्यों-त्यों उसे पाने के लिए मैं भी उस पर झपटता। दुर्दशा के दिन किसी को पूछ कर थोड़े ही आते हैं। आपत्ति और विपत्ति का दिशाबोध नहीं होता, पर एक दिन मैंने उसे हस्तगत कर ही लिया। वह भी शादी करने के लिए तैयार हो गई पर आखिर तक वह मुझे झांसा ही देती रही। शादी नहीं की बल्कि उसने मुझसे ऐसा कार्य करवाया जिसके कारण मैं बुरी तरह फंस गया और ऐसा फंसा कि आज तक नहीं निकल पाया हूं। मैं अपनी नौकरी के दौरान लास ऐंजलस जा रहा था। उसने यह कहकर एक डिब्बा दिया कि वह उसकी सहेली तक पहुंचा दे। मैं तो पागल था ही। मना करने का सवाल ही नहीं था, न मैंने कार्य और कारण के बारे में सोचा कि वह मुझे ही गलत इस्तेमाल कर रही है। मैंने कोई विचार ही नहीं किया। मैं वह डिब्बा लेकर प्लेन में बैठ गया। छोटा डिब्बा मेरी हाथ की थैली में ही था। इतने में क्या देखता हूं कि कुछ लोग प्लेन में चढ़ आये और वे सामानों की तलाशी लेने लगे। मुझे तो भान ही नहीं था कि उस डिब्बे में क्या हो सकता है? जब उस टोली ने एक व्यक्ति ने पूछा- यह थैली आपकी है? मैंने हां भरी। थैली मेरी ही थी। उसने थैली के अन्दर रखी चीजों का मुआयना किया। डिब्बे को देखकर पूछा- इसमें क्या है? मुझे पता

नहीं। मेरी मित्र ने एक जगह पहुंचाने के लिए दिया है। होगा कोई गिफ्ट वगैरह। उस व्यक्ति ने उसे सूंघा फिर कहा- खोलो। क्यों? यह तो खोलने पर पता चल जाएगा। मेरे मन में तो किसी प्रकार का संदेह था ही नहीं इसलिए मैंने ही वह डिब्बा खोला तो आश्चर्य हुआ सफेद पाउडर के प्लास्टिक पैकेट थे। मुझे कुछ मालूम नहीं थो सो कहा पाउडर है।'

'कैसे पाउडर?'

'वह तो पता नहीं।'

'किसने दिया?'

मैंने कहा- 'मेरी मित्रा नीजा ने अपने किसी सहेली को देने के लिए कहा है।'

'तो यह डिब्बा आप उसकी सहेली को देंगे?'

'निस्संदेह! हां।'

उस व्यक्ति ने फौरन पुलिस को बुलाकर मुझे गिरफ्तार करने का हुक्म दे दिया।'

मैंने प्रतिवाद किया- 'क्यों? किस जुर्म में?'

वह बोला- मिस्टर! प्लास्टिक पैकेट में ब्राउन सुगर (नशीला पदार्थ) है।'

पिताश्री! मैं डर गया। मुझे कुछ सूझा नहीं क्या कहूं, क्या करूं?'

मैं गिड़गिड़ाने लगा- 'मुझे वास्तव में पता नहीं आप चाहे तो नीजा से पूछ लीजिए, जिसने यह डिब्बा मुझे दिया है।

'वह तो हम पूछेंगे ही।'

बाद में तफ्तीश शुरू हुई। जब पुलिस मेरे निवास स्थान पर पहुंची तब तक पड़ोस में रहने वाली चिड़िया रानी नीजा फुर्र हो चुकी थी। असल में वह नशीले पदार्थों की तस्करी करती थी और मुझ जैसे भोलेभाले नौजवानों को फंसा कर अपना उल्लू सीधा किया करती थी। मैं आपको किस मुंह से अपनी व्यथा कथा लिखता इसलिए मैंने आपके पत्रों के जवाब ही देना बंद कर दिया था। मुझ पर केस चला। मैंने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। अनचाने में अपराध तो हुआ ही था और अपराध तो अपराध ही होता है, चाहे वह जानबूझ कर किया हो या अनजाने में। मैं केस भी नहीं लड़ पाया क्योंकि मेरे पास पैसे ही नहीं थे। मुझे १० वर्ष की सजा हुई जो काट कर अभी-अभी बाहर निकला हूं। भरमाया परदेश के मोह से। गत दस वर्षों में मैंने चिंतन ही चिंतन किया है। मैं अब उस धरती पर रहना ही नहीं चाहता। तभी मुझे आपकी, घर की और मां की याद आई। कुछ भी हो आखिर आपकी संतान हूं। पूत कपूत हो सकता है माता कुमाता कभी नहीं होती। पिताश्री! अब मैं वापस अपनी मातृभूमि में आना चाहता हूं, क्या आप इस नालायक बेटे को अपने चरणों में जगह देंगे? यद्यपि मेरे पास वापसी टिकट के पैसे भी नहीं है पर थोड़े से रुपये अच्छे व्यवहार व काम के लिए जेल से मुझे मिले हैं। थोड़े दिन और कड़ी मेहनत मजदूरी कर कमा लूंगा तभी भारत पहुंच सकूंगा। पिताश्री! आपका यह पुत्र कृतघ्न है मैं मंजूर करता हूं माफी के योग्य भी नहीं हूं फिर भी मन में एक आशा का दीपक जल रहा है कि आप मुझे क्षमा कर देंगे। मैं आपके जीवन की कसौटी पर खरा नहीं उतरा। आपके सपनों को चकनाचूर कर दिया आपका व मां का दिल दुखाया है। मैंने घोर पाप किया है पर अब प्रायश्चित करना चाहता हूं। गुमराह व्यक्ति सही रास्ते की तलाश करना चाहता है। आप मेरे पत्र का जवाब सकारात्मक देंगे तभी मैं आऊंगा अन्यथा कहीं मर-खप जाने का प्रयत्न करूंगा। मेरे जैसे कई गुमराह युवकों की टोलियां यहां है, उन्हीं के साथ मिलकर जीवन के दिन सुख-दुख, कष्ट पीड़ा में गुजार दूंगा। मैं मां और आपसे माफी मांगता हूं। पत्रोत्तर की आशा में आपका नालायक पुत्र- मिलिन्द।

एक महीने बाद उसका लिखा हुआ पत्र वापस उसी के पते पर आ गया, जिस पर लिखा था कि वहां इस नाम के कोई सज्जन वर्षों से यहां नहीं रहते।●

+++ ○○ +++

## पुरानी बात

ठाकरां रै गांव में एक बड़े सेठ हो। एक दिन सेठाणी आपरो सारो गहणों धारण कर ठुकराणी सूं मिलण खातर रावळै में गई।

ठुकराणी जी सेठाणी रो बड़ो सनमान कर्यो अर आदर दियो। सेठाणी रा जेवर देखकर ठुकराणी जी रो मन चलायमान होगा। बै फरमायो, एकर आपरो गहणो मन्नै देवो तो मैं धारण कर देखूं कै इण सूं कितरी सोवणी लागूं। ठुकराणी-सा री बात मान'र सेठाणी आपरो सारो जेवर उतार्यो अर उणां रै सामीं मेल दियो। उणी बखत ठुकराणी-सा पूरो गहणों आपरै सरीर पर सजाय लियो अर बातां लागगा। बोळी देर होई पण नीं तो ठुकराणी-सा आपरै तन सूं जेवर उतारै अर नीं सेठाणी उणां नै आ बात कैय सकै। अब कांई कर्यो जावै? सेठाणी आपरी सेविका नै हवैलां भेंझर सारी स्थिति री जाणकारी सेठां नै कराई तो उन नै गुप्त रूप सूं पाछो जवाब मिल्यो-

सेठ कैवै, सुण सेठाणी, छोण पुराणी आंट।<br>
जै धन दीखै जावंतो, तो आधो लीजे बांट॥

सेठजी री इण सलाह रै अनुसार सेठाणी आधो जेवर ठुकराणी सा री भेंट कर्यो अर आपरो आधो धन लेय'र पाछा आया।

**✻ डॉ. मनोहर शर्मा**

## अपने भीतर

**- डॉ. लखबीर सिंह 'निर्दोष'**

सागर में उतर कर क्या करोगे<br>
अपने भीतर उतरो तो जानें,<br>
बूँद-बूँद बरसता बादल किस लिये<br>
बादल की तरह पिघलो तो जानें,<br>
दूसरों को कहते बदल जाने के लिए<br>
पहले अपने को बदलो तो जानें,<br>
इन्द्र धनुष को कहते कुदरत का करिश्मा<br>
जिंदगी में अपनी रंग भरो तो जानें,<br>
झरना गिर गिर कर भी बिखरता नहीं<br>
ठोकर खाकर जीना सीख सको तो जानें।

# चोखाराम रो चोळको

✍ निर्मोही व्यास, बिकानेर

नापासर में सेठ धनीराम जी री मोटी ठाढी हवेली। जिंकी सदा आभै सूं बातां करै। धन्ना सेठां में धनीरामजी रो नांव सरू सूं सिरैमोर रैयो। हवेली में बड़ता च्यारूमेर लिछमी जी साकसात बिराजती निजर आवै।

आखै गांव में सेठजी रो आछो-खासो मान। संकट पड्यां हर कोई मदद सारू बांरी ही चौखट चढ़ै। ब्याजूंणा उधार देवण में सेठां री अेक न्यारी ही साख ही। हजार डेढ़ हजार सूं बत्ती कीं नै उधार नीं देंवता, जिण कारण पईसो पूठो आवण में कोई दिक्कत नीं रैंवती। जे कठै आंवती भी तो अडाणै पड़ी चीज नै जब्त करणै रो डर दिखाय देंवता। कैवै बतावै, सेठां रै अठै लोगां रा दस किलो गैणां अडाणै मेल्योड़ा है। बाकी चीजां री गिणती ही कोनी।

चतराई में भी बै स्मै सूं आगै। गिरस्थी नै बां इण वास्तै बधणै नीं दी कै काल नै खरचो नी बंध जावै। इण मामलै में बै हमेसा चौकन्ना रैंवता। चावै बा रैं मांय कमी समझौ या खूबी, बां सू खरचो बरदास्त नीं होंवतो।

सेठजी रै अेक भाणजो हो राजू, बड़ी बहण रो बेटो। बहण-बैन्दोई दोनूं अेक हादसै में चालता रैया। राजू उण बगत जाबक ही छोटो हो। काका-बाबा राखण सूं मनां कर दियो तो सेठजी रै सबदां में धिंगाणै री अलबत गळै मंडगी। जदकै सेठाणी रो तो राजू नै देखतां ही खून बधग्यो अर इंया लागै लागो कै आगै रो जीवण सुधरग्यो। बीं रो पेट तो कदै खुलणो नीं हो। खुलै भी तो कींकर? टाबर खिंडणै रै डर सू सेठजी तो ब्यावरै बाद आज तंई सेठाणी रै भेळै ही नीं हुआ। सोच्यो भेळो हुयो नीं। दूणी करणै सेठजी सरू सूं ही सेठाणी सूं अळगा ही सोंवता।

राजू जद छोटो हो, सेठाणी बींरो बोत लाड राखती। आछो खुंवावती, आछो पैरावंती। सेठजी टरंड-टरड करता रैंवता, पण सेठाणी बारै कानी ध्यान ही नीं देवती। सेठजी राजू नै छठी सातवीं सूं आगै पढावणै रै पख में नीं हा, पण सेठाणी बीनै लगोलग आगै पढावंती रैयी। राजू भी पढणै में बोत होसियार हो। बैगो ही पढ़ लिख'र त्यार होग्यो। आज बो बीकानेर में एक बैंक में बाबू है। बठै सेठाणी रै भाई चोखाराम रै अठै इण ढंग सूं रैवै, जाणै बोही ज बींरो नानाणो है। चोखाराम भी बीनैं सगै भाणजै जई ही राखै। इयां भी बां रै दो छोरियां ही है, छोरो कोनी। फेर बहण रो कोळायत, इण कारणै भी चोखाराम रो राजू रै माथै मन भी मोकळो हो।

बीकानेर में सेठजी रै नांव आठ मकान हा, जिका बां रै नानैजी री तरफ सूं दियोड़ा हा। पण स्सै नै सेठजी किरायै माथै चढ़ा राख्या हा। चावंता तो एक मकान राजू खातर खाली करवा सकता हा। पण, कारणै आ बात बां रै नीं जंची कै किरायै री रकम में घाटो पड़सी। चौखाराम रै अठै रैसी तो किरायो भी नीं देवणो पड़ै अर खाणै-पीणै रो भी सुभीतो। मतळब दोनूं कांनी सूं बचत ही बचत। दस-बीस हाथ खरचै रा टाळ'र बैंक री तिनखा छेड़णै री जरूरत नीं पड़ै।

मकानां रो किरायो वसूल करणै अर, राजू री तिनखा लावणै वास्तै सेठजी हर मईनै सेठाणी नै बीकानेर भेजता तो बा सगळां सूं मिळ जावंती अर सुख-दुख री जो भी बात होंवती कैय जांवती।

राजू बोत होणाहार अर समझदार हो। सेठजी रै लालचीपणै री बीं नै पूरी जाणकारी ही। बीं नै आ भी ठा ही कै सेठजी रै अंणूतै कंजूसपणै रै कारणै ही सेठाणी री अणचीती दुरगत हुई है। इफ्तै दस दिनां सूं बो नापासर जांवतो अर सेठाणी सूं मिळ'र पाछो आ जावतो। सेठां रा अेकर पग जरूर छूंवतो, पण फेर बां रै कांनी मुड़'र ही नीं देकतो। सेठाणी री आंख्या रो चमकतो तारो हो तो सेठजी रै वास्तै खजानै नै अखूट बनावण वाळो हो। अेक रो लाडेसर तो दूजै रो कमाऊ पूत।

बिचाळै सी'क रतनगढ़ सूं एक लूंठी आसामी हरखचंद जी आपरी छोरी रै सगपण सारू सेठजी रै दौलत खाणै पूग्या। बांरी एक हीज बेटी। ब्यावं में बीस-लाख रिपिया तंई खरच करब नै त्यार। मायूं सूं तो ओ रिस्तो आयो देख'र सेठजी फूल्या नीं समाया, पण फेर दूर री सोच'र अेक अणओपती फाळी घात दी। कैवण लागा- 'म्हनै सै बातां मंजूर है, पण अेक बात म्हारी भी मानणी पड़सी।' हरखचन्द जी बोल्या- 'हुकम फरमाओ।'

'मुकळावो पांच-बरसां बाद करांला। इण बीच थांरी बेटी नापासर नीं आवैली।'

'सेठां आ कांई कैवो? ब्यांव कर्यां बाद जवान बन्ना-बन्नी नै अळगा कियां राख सकां? भला ई में कांई तुक?' हरखचन्द जी नै बिसवास ही नीं हो र्यो हो कै सेठजी अेड़ी अनरथ री बात कैय सकै।

'जणै वा। थारै नीं जंची तो म्हनै आपरै अठैओ सगपण नीं करणो।' कैय नै झट दौलत खाणै सूं उठ'र मांय चल्या गया।

हरखचन्द जी मन मसोस'र रैयग्या अर सेठजी नै सिरफिरो समझ'र आपरो रस्तो लियो।

सेठाणी अै सारी बातां बांरणै री ओट में ऊभी सुणै ही। बा भी छाती में धमीड़ा लेय'र रैयगी।

अगली दफै सेठाणी जद बीकानेर गई तो हरखचन्द जी सागै सेठजी री जिकी बातां हुई बै सारी चोखाराम नै बता दी अर रोवण लागगी। चोखाराम बींनै थावस बंधायो अर बोल्यो- 'बाईसा, चिन्ता नां करो। राजू तो बियां भी अेड़ी-वेड़ी जगा ब्याव नी करै। बीं आपरै वास्तै एक छोरी पैला सूं ही देख राखी है। आपणी ही जात की है। छोरी रो बाप, मनसुख बोत भलो आदमी है। बड़ै बाजार में कपड़े री दुकान है। छोरी आछी भणी हैं अर अेक इसकूल में मास्टरणी है। दा-च्यार दफै आपणै अठै आयोड़ी है। म्हां सै नै बा पसंद है। मनसुख भी इण रिस्तै सूं राजी है। म्हारै आगै अेकर बात भी टोरी ही। अबै म्हैं बींनै सारी बातां, जिकी बैन्दोई जी रै मन रळती री है, समझा'र बा रै कनै सगपण रा बात करवां नै भेज देसूं। आगै बै आपैई देख लेसी ई चोखाराम रो चोळको।

सेठाणी नै भाई रै चोळकै री बात जद समझ में आयी, तो बा बोत राजी हुई।

मनसुख एक रोज सेठजी रै अठै नापासर पूगग्यो। सेठजी नै बीं

आपरी बात बतायी अर सेठजी आपरी बात बीनैं। दोनूं सगपण कण नै त्यार होयग्या।

छेकड़ आखातीज रै दिन राजू अर मनसुख री बेटी रीता दोनूं बींद-बीनणी बणग्या।

परणीजण रै बाद राजू री बऊ नै एक दिन भी सासरै नीं बुलवाई। सेठजी नचीता हा। बै आहीज चावता कै पांच-साळ तंई बीनणी नापासर नी आवै। सेठाणी भी इण बाबत कोई जोर नीं दियो। बी नै जिका हरख-कोड करणा हा, बै भाई रै अठै कर लिया। रातीजोगै रो दस्तूर बठै ही राख्यो हो। सेठजी नै तो ई री भणक ही नहीं पड़णै दी।

चोखाराम'र अठै राजू-रीता जीवण गाड़ी भलैसर चालै ही। सेठजी आपरै मन में खुस तो सेठाणी आपरै मन में खुस।

अचणाचकै अेक रोज सेठजी कनै तार आयो कै राजू रै बेटो हुयो है, बधाई। तार देख्यो'क सेठजी आकळ-बाकळ। ओ कांई हुयो। ओजूं जद राजू री बऊ अठै आयी ही कोनी अर मुकळावो ही नहीं हुअयो तो एकाएक ओ पांचवो कुण आग्यो। म्हारै घर में जींवा री गिणती बधगी अर म्हनै बेरो ही नीं पड़्यो।

तार आयो है, ओ सुणतां ही हरख सूं उमड़ती सेठाणी कनै आय'नै बोली- अजी, कीं उळटी नां सोचा। थाळी तो जठै बाजणी ही बठै ही बाजी है। थे बेराजी क्यूं होवो? आपणै अठै तो सरूं सूं ही थाळी बजाणी या ठीकरी फोड़णी मना है। म्हारै भाई चोखाराम रै अठै तो कोनी?

'मतळब'।

'ओ म्हरै भाई चोखाराम रो चोळको है।'

'साची।'

'जो राम राची'।

सेठजी जठै मूंढो टेर'र रैयग्या, बठै सेठाणी रै होठां पर पाळणै रा गीता गुनगुनावण लागग्या।●

+++ ○○ +++

# अभेद्य कवच है सहनशीलता

✍ पुष्करलाल केडिया, कलकत्ता

ईश्वर ने मनुष्य को अनेक अद्‌भुत शक्तियां प्रदान की हैं मनुष्य में दुलर्भ शक्तियों का भण्डार है। शरीर और मन की शक्तियों का रहस्यलोक ज्ञानियों के लिए अगम्य नहीं है। इन शक्तियों से असम्भव कार्य भी सम्भव हो सकते हैं। इनकी जानकारी न होने के कारण साधारण मनुष्य इसका उपयोग नहीं कर पाता।

संकल्प-शक्ति, स्मरण शक्ति, इच्छा-शक्ति, कल्पना शक्ति, सहनशक्ति आदि के केन्द्र हमारे शरीर के भीतर ही विद्यमान है। उत्साह, साहस, ओज, उमंग आदि के स्रोत भी इसी रहस्यपूर्ण काया में छिपे हुए हैं।

मानव-शरीर पंच महाभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, वायु) से निर्मित है। इन पांचों तत्वों के गुण भी शरीर में व्याप्त है। यहां हम पृथ्वी के सर्वोपरिगुण 'सहनशक्ति' की चर्चा करेंगे। सहनशक्ति (सहनशीलता) अभेद्य केवच का काम करती है। ऋषियों ने पृथ्वी को 'सर्वराहा' कहकर उसकी महिमा गायी है। सहनशक्ति में माता का रूप अपनी सम्पूर्ण दिव्यता और महानता के साथ झलकता है।

सहनशीलता साधारण मनुष्य को भी महान बना देती है। महापुरुषों की जीवन-कथाएं सहनशीलता के अनेकानेक प्रेरक प्रसंगों से पूर्ण है। भगवान बुद्ध के जीवन का एक प्रसंग है। एक बार उनके पास एक व्यक्ति आया, जो उनका कट्टर विरोधी था। उसने आते ही उनको गालियां बकनी शुरू कर दी। बुद्ध शान्त बैठे रहे। जब वह अपशब्दों का प्रयोग करते-करते थक गया तो बुद्ध ने उससे बड़ी नम्रता से पूछा 'भद्र! यदि तुम किसी अतिथि के लिए भोजन बनाओ और वह उसे ग्रहण न करें, तब तुम उस भोजन का क्या करोगे?'

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया- 'अतिथि नहीं खायेगा तो मैं स्वयं ही खाऊंगा। उसे फेंक थोड़े ही दूंगा।'

बुद्ध मुस्कुराये। बोले- 'तब तो अपशब्दों का यह पकवान, जो अब तक तुमने मेरे लिए परोसा है, स्वयं ही ग्रहण करो। मैंने तो उसे छुआ भी नहीं है।'

विरोधी लज्जित होकर भगवान तथागत के चरणों में गिर पड़ा और उनसे क्षमा मांगने लगा। यह सहनशीलता का ही जादू था।

उसी प्रकार एक अंग्रेज ने क्रुद्ध होकर महात्मा गांधी के गाल पर एक थप्पड़ जड़ दिया। गांधी ने कुपित न होकर महात्मा ईसा के कथन का अनुसरण करते हुए अपना दूसरा गाल भी उसकी ओर बढ़ा दिया। अंग्रेज की सारी अकड़ उस असाधारण सहनशीलता से पराभूत हो गई।

'रहन-सहन' इन दो शब्दों की जोड़ी सदियों से बोलचाल की भाषा में घुलमिल गई है, किन्तु इनके एक साथ होने का रहस्य बहुत कम लोगों को ज्ञात है। इसका गूढ़ार्थ यह है कि यदि रहना है (परिवार, समाज कहीं भी) तो सहन अनिवार्य है।

एक चीनी लोककथा है। चीन में एक विशाल संयुक्त परिवार रहता था, जिसमें लगभग पांच सौ सदस्य थे। सबसे गहरा प्रेम और सद्‌भाव था। इस अद्‌भुत परिवार की चर्चा जब राजा के कानों में पहुंची तो वह उस परिवार के प्रमुख व्यक्ति से मिलने स्वयं गया। बूढ़ा परिवार-प्रमुख सौ वर्ष की आयु पार कर चुका था। उसमें देखने और बोलने की शक्ति क्षीण हो चुकी थी। राजा ने जब उससे उसके परिवार में अखण्ड सुख-शान्ति और प्रेम भाव का रहस्य जानना चाहा तो उसने एक तख्ती मंगवाई। उस पर काँपते हाथों से उसने एक ही शब्द लिखा 'सहनशीलता।'

भारत के स्वाधीनता संग्राम में गांधीजी ने जिन अहिंसात्मक आन्दोलनों से ब्रिटिश शासन की सुदृढ़ नींव हिला दी, उसकी मूल शक्ति थी सहनशीलता। इस अभेद्य कवच पर फिरंगियों के सारे प्रहार व्यर्थ सिद्ध हुए।

महाभारत के पात्रों में युधिष्ठिर की सहनशीलता असाधारण थी। द्यूत-क्रीड़ा के समय, द्रौपदी के चीरहरण से क्षुब्ध भाईयों की उत्तेजना उनकी सहनशीलता के कारण ही दबी रही। युधिष्ठिर

के मन में किसी के प्रति प्रतिशोध भावना कभी नहीं रही।

ब्रह्मर्षि वशिष्ठ मानव-लोक में ही नहीं, देवलोक में भी पूज्य और प्रतिष्ठित थे। विश्वमित्र को उनसे बड़ी ईर्ष्या थी। उन्होंने वशिष्ठ को नीचा दिखाने के अनेक असफल प्रयत्न किये। वशिष्ठ के मुख से अपने लिए 'राजर्षि' सम्बोधन सुनकर उन्हें ऐसा लगता था, जैसे उनका असम्मान किया जा रहा हो। उनके मन में ब्रहर्षि कहलाने की बड़ी प्रबल महत्वाकांक्षा थी, किन्तु उस उच्चतम पद को प्राप्त करने की योग्यता का उनमें अभाव था। उनकी प्रकृति में सहनशीलता का स्थान उग्रता ने ले रखा था।

एक दिन की बात है। रात्रि में विश्राम करते हुए वशिष्ठ अपनी पत्नी से बातें कर रहे थे। अकाश में पूर्णिमा का चन्द्रमा चमक रहा था। वशिष्ठ ने उसकी ओर संकेत करते हुए कहा- 'इस पूर्ण चन्द्र की सुन्दरता को ये काले धब्बे कलंकित कर रहे हैं, पर विश्वमित्र की आस्था और निष्ठा निष्कलंक है।'

विश्वामित्र किसी दूसरे उद्देश्य से वशिष्ठ के आश्रम में गये थे और कुटिया की आड़ में छिपकर सारी बातें सुन रहे थे। वशिष्ठ के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर उनके मन की भ्रांति दूर हो गई। आखिर वह दिन भी आया, जब विश्वामित्र की सहनशीलता और योग्यता से संतुष्ट होकर वशिष्ठ ने स्वयं ही उन्हें ब्रहर्षि कहकर सम्बोधित किया।

एक और सुन्दर प्रसंग है। महर्षि भृगु के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि भगवान शिव और भगवान विष्णु दोनों में बड़ा कौन है? वे सबसे पहले कैलाश पर पहुंचे। शिव समाधिस्थ थे। भृगु ने उनके लिए अनेक अपशब्दों का प्रयोग किया। ध्यान भंग होते ही शिव के नेत्र क्रोध से अंगारों की भांति दहक उठे। भृगु भयभीत होकर वहां से भागे। क्षीरसागर में आकर देखा तो भगवान विष्णु शेषशैया पर निद्रालीन थे। भृगु ने अपने पांव से उनकी छाती पर कसकर प्रहार किया। विष्णु की निद्रा टूटी तो उन्होंने भृगु के पांव को सहलाते हुए पूछा- 'मेरी कठोर छाती पर प्रहार करके कहीं आपको चोट तो नहीं लगी?'

विष्णु की क्षमाशीलता और सहनशीलता ही उनके श्रेष्ठ होने का प्रमाण बन गई। भृगु ने उनसे क्षमा याचना की और उनका स्तवन किया। कवि रहीम ने भी कहा है-

'का रहीम हरि को घट्यो, जो भृगु मारी लात।'

एक प्रसिद्ध घटना है। महाराजा रणजीत सिंह कहीं घूमने जा रहे थे। अचानक किसी ओर से एक पत्थर आकर उनके सिर में लगा और रक्त बहने लगा। उनके सैनिक एक बुढ़िया को पकड़कर लाये। उसी ने वह पत्थर फेंका था। रणजीत सिंह के पूछने पर बुढ़िया कांपती हुई बोली- 'अन्नदाता, मैंने पेड़ से फल तोड़ने के लिए पत्थर फेंका था, मगर न जाने कैसे वह आपको लग गया। मुझसे अपराध हुआ, मुझे दण्ड दीजिए।'

रणजीत सिंह ने बुढ़िया को छोड़ने का आदेश दिया और उसे धन देते हुए कहा- 'पत्थर मारने से जब निर्जीव वृक्ष फल देता है तो मैं प्रजापालक होकर तुम्हें दण्ड कैसे दे सकता हूं।' इस सहनशीलता और क्षमा दान से उनकी महानता प्रकाशित हो उठी।

नारी जन्म से ही मां होती है। सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति ने उसे आद्या का रूप माना है और उसे 'महाभागा', 'पूज्यनीया' आदि सम्बोधन देकर, उच्चतम सम्मान दिया है। वही नारी जब मां बनती है तो सहनशीलता की प्रतिमूर्ति बन जाती है। सम्पूर्ण जीव-जगत में मां की ममता, सहनशीलता, उदार प्रकृति और वात्सल्य का एक ही रूप दृष्टिगोचर होता है।

+++ ○○ +++

## गजल

तेज धार तलवारां वाळी, जीवण री पगडांडी आ।
आंसू री जळधारां वाळी, जीवण री पगडांडी आ॥
आसा रै आंगणिये सुख रा बीज राळ दे हाथां सूं,
आगम में फुळवारां वाळी, जीवन री पगडांडी आ॥
राम सरीखों जीवण जिणरो, वनखंड में ई राजा है,
हड़मत री हूंकारां वाळी, जीवण री पगडांडी आ॥
चार दिनां रो जीवण अर, आ जिनगाणी जोधारां री,
नभ रा नवलंख तारां वाळी, जीवन री पगडांडी आ॥
रोज धुड़ै है सपन धरूंदा, रोज मरम्मत होवै है,
ईंटां, भाटां, गारां वाळी, जीवण री पगडांडी आ॥
सूर, सती, संतां रै सारू, जुग जुग जोत जगो भाया,
ईसर-रै अवतारां वाळी, जीवण री पगडांडी आ॥
'अचळेसर आनन्द' आपने, परमारथ-पथ पर मिळसी,
जस कोरत जैकारां वाळी, जीवण री पगडांडी आ॥

**- अचलेश्वर आनन्द**
नगरपालिका, जालोर- ३३४००१

## नव-नूतन शृंगारिक बेला

नव-नूतन शृंगारिक बेला
चाह जगाती आशाओं की
दूर भगाती दुःख की बदली
तेज, शौर्य, बल का संगम
बन
मन को है हरषाती॥
नव-नूतन शृंगारिक बेला
प्रणय-निवेदन करती आती
मंथन-आलोड़न कर रसिक
प्रिया-सी
प्रिय को रिझा-रिझा तब
जाती
जीर्ण-क्षीर्ण सभी रूपों का
पुर्नरूद्धार कराती
पुरातनता का ओढ़े जामा
नूतन ही कहलाती
पा स्पर्श नयेपन का तब
अमृत-कलश बन जाती।
नव-नूतन शृंगारिक बेला।
मन को है हरषाती॥

*** डॉ. बसुन्धरा मिश्र, कलकत्ता**

*कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः।*
*उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति कृतं संपद्यते चरंश्चरैवेति चरैवेति*
*चरन्वै मधु विन्दति चरन्स्वादुमुदुंबरं*
*सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं यो न तन्द्रयते चरंश्चरैवेति चरैवेति*
*(ऐतरेय ब्राह्मण ७:१५:४-५)*

*निद्रा में पड़े रहना कलियुग में वास है, जाग जाना द्वापर में वास है, खड़ा हो जाना त्रेता में वास है, आगे बढ़ना सतयुग में वास है। इसलिए आगे बढ़ो, आगे बढ़ो। गति मधुर है, गति स्वादिष्ट फल है। सूर्य का श्रम देखो कि वह कभी आराम नहीं करता। इसलिए आगे बढ़ो, आगे बढ़ो।*

युग पथ चरण

# अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

१५२–बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७

## पदाधिकारी (२००४-०६)

युग पथ चरण

**सभापति**
श्री मोहनलाल तुलस्यान

**महामंत्री**
श्री भानीराम सुरेका,

**कोषाध्यक्ष**
श्री हरिप्रसाद कानोड़िया

**उपसभापति**
श्री सीताराम शर्मा, डॉ. जयप्रकाश शंकरलाल मुँदड़ा (विधायक)
श्री ओंकारमल अग्रवाल , श्री नन्दलाल रूंगटा ,
श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल , श्री बालकृष्ण गोयनका

**संयुक्त महामंत्री**
श्री रामअवतार पोद्दार
श्री राज के पुरोहित

## कार्यकारिणी समिति सदस्य

(१) श्री इंदरचंद संचेती
(२) श्री राजेश खेतान
(३) श्री गौरीशंकर कायां
(४) श्री हरिप्रसाद बुधिया
(५) श्री द्वारका प्रसाद डाबरीवाल
(६) श्री प्रह्लादराय अग्रवाल
(७) श्री हरिप्रसाद अग्रवाल
(८) श्री आत्माराम सोंथलिया
(९) श्री बालकृष्ण माहेश्वरी
(१०) श्री रामगोपाल बागला
(११) श्री सुभाषचंद अग्रवाल
(१२) श्री सूर्यकरण सारस्वा
(१३) श्री बाबूलाल धनानिया
(१४) श्री शिवशंकर खेमका
(१५) श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका, महाराष्ट्र
(१६) श्री सतीश देवड़ा
(१७) श्री अरूण कुमार गुप्ता
(१८) श्री प्रेमचंद सुरेलिया
(१९) श्री जुगलकिशोर जैथलिया
(२०) श्री बंशीलाल बाहेती
(२१) श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल (बिहार)
(२२) श्री राजकुमार सरावगी
(२३) श्री सत्यनारायण शर्मा (छत्तीसगढ़)
(२४) श्री सांवरमल अग्रवाल
(२५) श्री गिरधारीलाल जगतरामका
(२६) श्री सत्यनारायण सिंघानिया (उत्तर प्रदेश)
(२७) श्री बनवारीलाल सोती
(२८) श्री सुभाष मुरारका
(२९) श्री ओमप्रकाश पोद्दार
(३०) श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल
(३१) श्री दिलीप गांधी (महाराष्ट्र)
(३२) श्री रामदयाल मस्करा (बिहार)
(३३) श्री मौजीराम जैन (उड़ीसा)
(३४) श्री मंगलचंद टांटिया (मध्य प्रदेश)
(३५) डॉ० रामविलास साबू (आंध्र प्रदेश)
(३६) श्रीमती प्रेमलता खण्डेलवाल (पूर्वोत्तर)
(३७) श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया (देवघर)
(३८) श्री रमेश मरोलिया (उत्तर प्रदेश)
(३९) श्री राधेश्याम रेणवा
(४०) श्री बी. एन. धानुका

## (पदेन)

### पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री

१. श्री हरिशंकर सिंहानिया (पूर्व अध्यक्ष)
२. श्री हनुमान सरावगी (पूर्व अध्यक्ष)
३. श्री नन्दकिशोर जालान (पूर्व अध्यक्ष)
४. श्री दीपचंद नाहटा (पूर्व महामंत्री)
५. श्री रतन शाह (पूर्व महामंत्री)

### प्रांतीय अध्यक्ष एवं मंत्री

डॉ. रमेश कुमार कैजड़ीवाल (अध्यक्ष, बिहार)
श्री रामअवतार पोद्दार (मंत्री, बिहार)
श्री सोमप्रकाश गोयनका (अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश)
श्री गोपाल सूतवाला (मंत्री, उत्तर पदेश)
श्री ओंकारमल अग्रवाल (अध्यक्ष, पूर्वोत्तर)
श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल (मंत्री,पूर्वोत्तर)
श्री विश्वनाथ मारोठिया (अध्यक्ष, उत्कल)
श्री गोपाल कृष्ण जाखोटिया (मंत्री, उत्कल)
श्री रामकिशन गुप्ता (अध्यक्ष, आन्ध्र प्रदेश)
श्री रमेश कुमार बंग (मंत्री, आन्ध्र प्रदेश)
श्री मुकुन्ददास माहेश्वरी (अध्यक्ष,मध्य पदेश)
श्री रमेश कुमार गर्ग (मंत्री, मध्य प्रदेश)
श्री रमेशचंद गोपीकिशन बंग (अध्यक्ष,महाराष्ट्र)
श्री पोपटलाल ओस्तवाल (मंत्री, महाराष्ट्र)
श्री लोकनाथ डोकानिया(अध्यक्ष,पश्चिम बंग)
श्री गोपाल अग्रवाल (मंत्री, पश्चिम बंग)
श्री बासुदेव बुधिया (अध्यक्ष, झारखण्ड)
श्री विनयकुमार सरावगी (मंत्री, झारखण्ड)

## स्थायी समिति सदस्य

(१) श्री राजेश पोद्दार
(२) श्री गौरीशंकर सिंघानिया
(३) श्री जयगोविन्द इंदौरिया
(४) श्री कैलाश टिबड़ेवाला
(५) श्री डूंगरमल सुरेका
(६) श्री नथमल बंका
(७) श्री राजाराम शर्मा
(८) श्री शम्भु चौधरी
(९) श्री नरेन्द तुलस्यान
(१०) श्री ओमप्रकाश अग्रवाल
(११) श्री श्रीभगवान खेमका
(१२) श्री विश्वनाथ गुप्ता
(१३) श्री बसन्त कुमार नाहटा
(१४) श्री नारायण जैन
(१५) श्री शांतिलाल जैन
(१६) श्री सुशील ओझा
(१७) श्री मुकुन्द राठी
(१८) श्री प्रदीप ढेड़िया
(१९) श्री बासुदेव यादुका
(२०) श्री पुरनमल तुलस्यान
(२१) श्री मनीष डोकानिया

० सम्मेलन के पदाधिकारी इस समिति के पदाधिकारी हैं।

# ० अखिल भारतीय समिति सदस्य ०

## आंध्र प्रदेश

श्री मुरली नारायण बंग, हैदराबाद
श्री बाबूलाल पवार, हैदराबाद
श्री वीरेन्द्र कुमार अग्रवाल, हैदराबाद
श्री रामरतन झंवर, हैदराबाद
श्री सीताराम बजाज, सिकन्दराबाद
श्री रतनलाल शंकरलाल बंग, हैदराबाद
श्री रतनलाल मारू, हैदराबाद
श्री रामगोपाल अग्रवाल, हैदराबाद
श्री प्रेमचंद शर्मा, हैदराबाद
श्री रामकिशन गुप्ता, हैदराबाद
डॉ. रामविलास साबू, हैदराबाद
श्री रमेश कुमार बंग, हैदराबाद
श्री अजय कुमार साबू, विजयवाड़ा
श्री बालकिशन बरड़िया, विजयवाड़ा
श्री बंशीलाल बालकिशन लोया, विजयवाड़ा
**सुरेश चन्द साबू** विजयवाड़ा
श्री घनश्यामदास तापड़िया, विजयवाड़ा
श्री गोविन्द प्रसाद राठी, विजयवाड़ा
श्री हरिप्रसाद बदुका, हैदराबाद
श्री नरपतराज एफ. जैन, विजयवाड़ा
श्री पुरुषोत्तम दास जाजू, विजयवाड़ा
श्री रामचंद्र साबू, विजयवाड़ा
श्री रामकुमार बंग, विजयवाड़ा
श्री रामानंद रामानुज ओझा, विजयवाड़ा
श्री रामेश्वरलाल गुप्ता, विजयवाड़ा
श्री सत्यनारायण जाखोटिया, विजयवाड़ा
श्री श्यामसुन्दर जाखोटिया, विजयवाड़ा
श्री उत्तमचंद गुप्ता, विजयवाड़ा
श्री बिट्ठलप्रसाद भट्टड़, विजयवाड़ा

## पूर्वोत्तर

श्री मांगीलाल चौधरी, रोहा
श्री देवकीनंदन केडिया, गुवाहाटी
श्री बिमल नाहटा, गुवाहाटी
श्री विजयकुमार मंगलुनिया 'अधिवक्ता', हैबरगांव
श्री बाबूलाल गग्गड़, जोरहाट
श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, शिलांग
श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल, गुवाहाटी
श्री शुभकरण शर्मा, शिवसागर
श्रीमती प्रेमलता खण्डेलवाल, गुवाहाटी
श्रीमती शांता अग्रवाल, कानपुर
श्री विजयकुमार मंगलुनिया 'अधिवक्ता', हैबरगांव
श्री ज्योति प्रसाद खटरिया, नौगांव
श्री माणकचंद नाहटा, नौगांव
श्री प्रह्लादराय तोदी, हैबरगांव
श्री रघुवीर प्रसाद आलमपुरिया, हैबरगांव
श्री बजरंगलाल अग्रवाल, नौगांव
श्री भगवान दास खेमका, रोहा
श्री भंवरलाल दुग्गड़, नौगांव
श्री दिलीपकुमार बागड़िया, एडवोकेट, हैबरगांव
श्री हनुमानमल कोठारी, हैबरगांव
श्री कमलकिशोर सोमासरिया, नौगांव
श्री महेन्द्र पोद्दार, हैबरगांव
श्री महेश कुमार बुधिया, नौगांव
श्री मानकचंद जालान, गुवाहाटी
श्री मातुराम शर्मा, नौगांव
श्री नन्दकिशोर जोशी, हैबरगांव
श्री नरसिंहलाल अग्रवाल, रोहा
श्री पवन कुमार बागड़िया, हैबरगांव
श्री पवन कुमार गड़ोदिया, हैबरगांव
श्री प्रदीप कुमार मोर, हैबरगांव
श्री राधारमण खाटुवाला, नौगांव
श्री सांवरमल खेतावत, हैबरगांव
श्री शंकरलाल वर्मा, हैबरगांव
श्री शंकरलाल चौधरी, हैबरगांव
श्री शांतिलाल बंका, नौगांव
श्री श्यामसुन्दर भीमसरिया, हैबरगांव
श्री सीताराम अग्रवाल, छापरमुख
श्री सीताराम राधेश्याम शर्मा, रोहा
श्री विनोद कुमार मोर, हैबरगांव
श्री विष्णु कुमार खेतान, रोहा

## बिहार

श्री बी० पी० गुप्ता, पटना
श्री मोतीलाल सुरेका, दरभंगा
श्री रामपाल अग्रवाल नूतन, पटना
डॉ० रमेशकुमार कैजड़ीवाल अधि०, मुजफ्फरपुर
श्री बादलचंद अग्रवाल, पटना
श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल, मुंगेर
श्री लक्ष्मीनारायण डोकानिया, भागलपुर
डा० डी० राम, पूर्णियाँ
प्रो० डॉ० रामनिरंजन केडिया, दरभंगा
श्री शिव कुमार पोद्दार, पटना
श्री जगदीश प्रसाद मोहनका, पटना
श्री रामदयाल मस्करा, बेगूसराय
श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल, मुजफ्फरपुर
श्री रामावतार पोद्दार, पटना
श्री बद्री प्रसाद भीमसरिया, पटना
श्री किशनलाल डागा, पटना
श्री रामगोपाल पोद्दार, भागलपुर
श्री श्रवण कुमार जैजानी, पूर्णिया
श्री पवन कुमार सुरेका, दरभंगा
श्रीमती पुष्पा चोपड़ा, पटना
श्री नन्दलाल रूंगटा, चाईबासा
प्रो० विश्वनाथ अग्रवाल, पटना
श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला, पटना
श्री नन्दकिशोर जगनानी, पटना
श्री रामजीलाल भरतिया, मुजफ्फरपुर
श्री किशोरीलाल अग्रवाल, मुजफ्फरपुर
श्री सीताराम बाजोरिया, मुजफ्फरपुर
श्री कमल नोपानी, पटना
श्री द्वारका प्रसाद तोदी, पटना
श्री शिवकरण दूद वेवाला, पटना
डॉ० सुनील अग्रवाल, पटना
श्री सुनील खण्डेलवाल, पटना
श्री हरिकृष्ण अग्रवाल, पटना
डॉ० आर० के० मोदी, पटना
श्री घनश्यामदास जोधानी, पटना
श्री हनुमानमल बोथरा, मुजफ्फरपुर
डॉ० उर्मिला बंका, पटना
श्री सत्यनारायण तुलस्यान, प० चम्पारण
श्री विश्वनाथ केडिया, सहरसा
श्री महेश जालान, पटना
श्री कृष्ण कुमार कानोड़िया, लक्खीसराय
श्री नवल किशोर सुरेका, मुजफ्फरपुर
श्रीमती सरोज गुटगुटिया, पटना
श्री महावीर प्रसाद, प० चम्पारण
श्री हरि महाराज, मधेपुरा
श्री नागरमल बाजोरिया, पटना
श्री काशी प्रसाद हिसारिया, मुजफ्फरपुर
श्री वासु सर्राफ, पटना
श्री अरूण कुमार अग्रवाल, सहरसा
श्री पवन कुमार सुरेका, दरभंगा
श्री अजय कुमार बजाज, पटना
श्री बालमुकुन्द टिबड़ेवाल, कटिहार
श्री बासुदेव सर्राफ, पटना
श्री विश्वनाथ तुलस्यान, मुजफ्फरपुर
डॉ. देवी रामजी, पूर्णियां
श्री गणेश कुमार खेमका, पटना
श्री हरिप्रसाद बृंजराजका, मुजफ्फरपुर
श्री जगदीश प्रसाद तुलस्यान, मुजफ्फरपुर
श्री कृष्ण कुमार भरतिया, रक्सौल
श्री महावीर प्रसाद डोकानिया, कटिहार

श्री नारायण प्रसाद जालान, पटना
श्री ओमप्रकाश बंका, पटना
श्री पुरुषोत्तम प्रसाद दहलान, मुजफ्फरपुर

श्री आर. पी. डोकानिया, पूर्णिया
श्री रामअवतार नाथानी, मुजफ्फरपुर
श्री रामलाल खेतान, पटना
श्री एस. डी. संजय, पटना
श्री संतोषचंद बजाज, पटना
श्री शंकरलाल जैन, भागलपुर
श्री शिशुपाल राम, पटना
श्री शिव कुमार केडिया, भागलपुर
श्री श्यामसुन्दर भरतिया, मुजफ्फरपुर

## झारखण्ड

श्री भागचंद पोद्दार, रांची
श्री देवीप्रसाद डालमिया, जामताड़ा
श्री धर्मचंद बजाज, रांची
श्री गोवर्द्धन प्रसाद गाड़ोदिया, रांची
श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया, देवघर
श्री केदारमल पलसानिया, जमशेदपुर
श्री मुरलीधर केडिया, जमशेदपुर
श्री राजकुमार केडिया, रांची
श्री रामजीलाल केजड़ीवाल, डालटनगंज
श्री त्रिलोकचंद बागला, देवघर
श्री विश्वनाथ नारसरिया, रांची
श्री ओमप्रकाश पार्णव, रांची
श्री सुरेश अग्रवाल, रांची
श्री रतनलाल बंका, रांची
श्री धर्मचंद जैन, रांची
श्री अरुण कुमार बुधिया, रांची
श्री बसंत कुमार हितमसरिया, हजारीबाग
श्री किशोरीलाल लाठ, डाल्टनगंज
श्री प्रकाश पसारी, चाईबासा
श्री अभय कुमार सर्राफ, देवघर
श्री मदनलाल मुंदड़ा, देवघर
श्री ताराचंद जैन, बी. देवघर
श्री किशोरीलाल मोदी, देवघर
श्री आलोक कुमार चौधरी, झरिया
श्री आशीष कुमार अग्रवाल, जुगसलाई
श्री अशोक कुमार चावचरिया, देवघर
श्री ओमप्रकाश भालोटिया, दुमका
श्री परमेश्वरलाल गुटगुटिया, मधुपुर
श्री रघुनाथ प्रसाद चौधरी, धनबाद
श्री शंकरलाल बुधिया, बिष्टुपुर

## मध्य प्रदेश

श्री अनिल शर्मा, जबलपुर
श्री मुकुन्ददास माहेश्वरी, जबलपुर
श्री नरसिंहदास रंगा, जबलपुर
श्री पदम सेठ चौरड़िया, जबलपुर
श्री रमेश कुमार गर्ग, जबलपुर
श्री अनिल कुमार शर्मा, जबलपुर
श्री दीपक सुरजन, जबलपुर
श्री हरिगोपाल राजकुमार चाण्डक, रायपुर
श्री ईश्वरीलाल सिंहानिया, राजनन्दगांव
श्रीमती किरण जैन, जबलपुर
श्री महेश मट्टड़, जबलपुर
श्री मंगलचंद टांटिया, जबलपुर
श्री सत्यनारायण शर्मा, रायपुर
श्री सुरेशचंद डागा, जबलपुर

## महाराष्ट्र

श्री बाबूभाई मेहता, सोलापुर
श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका, जालना
श्री गोविन्दलाल लक्ष्मीनारायण पारीक, लातुर
श्री ललित शंकलचंद गांधी, कोल्हापुर
श्रीमती लता चौहान, कारंजत
श्री महेश कांतिलाल भंडारी, सोलापुर
श्री निकेश गुप्ता, अकोला
श्री नितीन बंग, धुलिया
डॉ. पुरुषोत्तम मुरलीधर दसक, औरंगाबाद
श्री सुभाष मालपानी, इचलकरांजी
श्री भगवानदास लाहोटी, जालना
श्री हेमराज जैन, परभानी
श्री जुगलकिशोर धनपतलाल धूत, नादेड
श्री किशन गोपाल पुरोहित, नागपुर
श्री महावीर झुमरलाल पटनी, औरंगाबाद
श्री शिवप्रसाद धूत, भोकर, नादेड

## उत्कल

श्री अरुण कुमार अग्रवाल, राउरकेला
श्री बनबिहारी अग्रवाल, अंगुल
श्री विश्वनाथ अग्रवाल, मयूरभंज
श्री धनराज अग्रवाल, सुन्दरगढ़
श्री दीनानाथ पसारी, क्योंझर
श्री गजानन्द अग्रवाल, बरगढ़
श्री किशनलाल भरतिया, कटक
श्री ओमप्रकाश लाठ, भुवनेश्वर
श्री प्रभात कुमार अग्रवाल, सम्बलपुर

श्री रामावतार सोंथालिया, सुन्दरगढ़
श्री किशनलाल अग्रवाल, भवानीपटना
श्री सुरेन्द्र कुमार टिबड़ेवाल, भुवनेश्वर
श्री अभिनंदन जैन, बलांगीर
श्री अर्जुन प्रसाद अग्रवाल, बलांगीर
श्री अर्जुन प्रसाद अग्रवाल, बलांगीर
श्री बाबूलाल अग्रवाल, केसिंगा
श्री चंदभान ओमप्रकाश अग्रवाल, केसिंगा
श्री दिलीप कुमार अग्रवाल, सोनपुर
श्री गौरीशंकर जैन, बलांगीर
श्री गौरीशंकर अग्रवाल, बलांगीर
श्री गिरधारीलाल केडिया, बलांगीर
श्री हरिनारायण जैन, बलांगीर
श्री मन्नीलाल अग्रवाल, कांटाबांजी
श्री मोहनलाल अग्रवाल, बलांगीर
श्री नकुल प्रसाद अग्रवाल, एडवोकेट, बलांगीर
श्री ओमप्रकाश कुतिया, बलांगीर
श्री पृथ्वीराज जैन, पटनागढ़
श्री रामकिशन अग्रवाल, चुड़ापल्ली
श्री शंकर प्रसाद जैन, बलांगीर
श्री शिवशंकर अग्रवाल, तरभा
श्री वेदप्रकाश अग्रवाल, बलांगीर

## उत्तर प्रदेश

श्री आशीष अग्रवाल, सुलतानपुर
श्री गोपाल सूतवाला, कानपुर
श्री किशन जोशी, उन्नाव
श्री मदन मोहन तापड़िया, कानपुर
श्री मयंक बजाज, लखनऊ
श्री प्रमोद अग्रवाल, हल्द्वानी
श्री राजकुमार नेवटिया, कानपुर
श्री राजेश कसेरा, कानपुर
श्री रमेश मोरोलिया, कानपुर
श्री सोमप्रकाश गोयनका, कानपुर

## तमिलनाडु

श्री बालकृष्ण गोयनका, चेन्नई

## पश्चिम बंग

श्री विश्वनाथ भुवालका, कोलकाता
श्री दामोदर सर्राफ, कोलकाता
श्री गोपी धुवालिया, कोलकाता
श्री रामअवतार खेतान, कोलकाता

श्री नन्दलाल सिंहानिया, कोलकाता
श्री समनिवास चौटिया, कोलकाता
श्री सांवरमल अग्रवाल, कोलकाता
श्री विश्वनाथ सर्राफ, रानीगंज
श्री विश्वनाथ सर्राफ, कोलकाता
श्री विश्वनाथ सुलतानिया, कोलकाता
श्री बाबूलाल अग्रवाल, कोलकाता
श्री भागीरथ प्रसाद टिबड़ेवाल, कोलकाता
श्री विश्वनाथ प्रसाद कहनानी, कोलकाता
श्री घनश्याम शर्मा, हावड़ा
श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा, कोलकाता
श्री ज्वाला प्रसाद मोदी, कोलकाता
श्री मनीष डोकानिया, कोलकाता
श्री राजेश खेतान, कोलकाता

श्री श्यामलाल डोकानिया, कोलकाता
श्री विश्वम्भर नेवर, कोलकाता
श्री अनिल शर्मा, एडवोकेट कोलकाता
श्री आत्माराम तोदी, कोलकाता
श्री बी. सी. लम्बोरिया, कोलकाता
श्री बद्रीप्रसाद भरतिया, कोलकाता
श्री बंशीलाल बाहेती, कोलकाता
श्री बनवारीलाल श्रीलाल, बराकर
श्री गणेश दास राठी, रानीगंज
श्री गिरधारीलाल अग्रवाला, बराकर
श्री कैलाश प्रसाद पाटोदिया, कोलकाता
श्री काशीनाथ जालान, कोलकाता
श्री किशनलाल महिपाल, कोलकाता
श्री कृष्ण कुमार शर्मा, कोलकाता

श्री ओमप्रकाश केडिया, रानीगंज
श्री रघुनाथ प्रसाद भोजगरिया, बराकर
श्री रामगोपाल बागला, कोलकाता
श्री रामगोपाल खेतान, रानीगंज
श्री रतनलाल सतनालिका, रानीगंज
श्री सांवरमल भीमसरिया, कोलकाता
श्री श्यामसुन्दर केजड़ीवाल, रानीगंज
श्री श्यामसुन्दर पोद्दार, बराकर
श्री सुभाषचंद अग्रवाल, कोलकाता
श्री सुनील कुमार गनेरीवाल, रानीगंज
श्री विनोद सर्राफ, कोलकाता
श्री विश्वम्भरलाल टेकड़ीवाल, बर्द्धवान
श्री विश्वनाथ केजड़ीवाल, बराकर

**० सम्मेलन के पदाधिकारी इस समिति के पदाधिकारी हैं।**
**० सम्मेलन के पूर्व सभापति व महामंत्री तथा प्रादेशिक सम्मेलनों के सभापति व महामंत्री इसके पदेन सदस्य हैं।**

*(उक्त सम्पूर्ण सूची में राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं प्रांतीय सम्मेलनों द्वारा मनोनीत तथा राष्ट्रीय सम्मेलन से आजीवन एवं विशिष्ट सदस्यों द्वारा निर्वाचित तथा पदेन सदस्य सभी शामिल हैं।)*

## अखिल भारतीय समिति के सदस्यों के ध्यानार्थ

**सम्मेलन की सर्वोच्च नीति-निर्द्धारण समिति की सदस्यता के लिए कृपया हार्दिक बधाई स्वीकार करें।**

**सभी सदस्यों से सादर अनुरोध है कि अपना नाम, पता (पिन कोड के साथ) फोन, फैक्स नम्बर आदि 'समाज विकास' में इसी पेज पर प्रकाशित फार्म के अनुसार भरकर शीघ्रातिशीघ्र सम्मेलन के केन्द्रीय कार्यालय में भेजने की कृपा करें।**

**अखिल भारतीय समिति की सदस्यता शुल्क प्रतिवर्ष १०१/- रु. के हिसाब से दो वर्ष के कार्यकाल के लिए २०२/- रु. का शुल्क ड्राफ्ट या मनीआर्डर भी अवश्य भेजने की कृपा करें।**

**महामंत्री**

## अखिल भारतीय समिति सदस्य अविलम्ब सूचना भेजें

नाम : .....

उम्र : .....

पता (निवास) : .....

फोन : .....

पूरा पता (कार्यालय) : .....

पिन कोड : ..... प्रान्त : .....

फोन : ..... मोबाइल : .....

फैक्स : ..... ई मेल : .....

युग पथ चरण

## अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

### केन्द्रीय श्रम व रोजगार मंत्री श्री शीशराम ओला

# बढ़ती बेरोजगारी एवं अन्य गम्भीर समस्यायें

''हिन्दुस्तान में बेरोजगारी की गंभीर समस्या है एवं इसके गम्भीर परिणाम हो सकते हैं। हमने वक्त रहते इसका समाधान करने की कोई चेष्टा नहीं की तो एक समय बहुत विकट आयेगा जब बेरोजगार नवयुवक हमें कपड़े तक पहनने नहीं देंगे। बेरोजगारी को कम करने के प्रभावी कदम यदि शीघ्र नहीं उठाए गए तो समाज में असंतोष फैलेगा तथा देश को एक गम्भीर स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। अत: बहुत जरूरी है कि बेरोजगारी की समस्या का हल कैसे किया जाए यह पूरे राष्ट्र की सोच हो।'' ये उद्‌गार हैं केन्द्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री श्री शीशराम ओला के, जो २८ अगस्त २००४ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित ''रोजगार के बढ़ते अवसर'' विषयक संगोष्ठी को सम्बोधित कर रहे थे। कम्प्यूटर को बेरोजगारी का प्रमुख साधन मानते हुए श्री ओला ने कहा कि- ''कम्प्यूटरीकरण का लाभ मिला तो उसका नुकसान भी मिला है। कम्प्यूटरीकरण ने भारत में सबसे अधिक बेरोजगारी बढ़ायी है।'' भारत में बढ़ती हुई आबादी पर चिन्ता व्यक्त करते हुए श्री ओला ने कहा- ''चाइना के बाद हमारी आबादी सर्वाधिक है। ११० करोड़ की आबादी आज हमारी है। आबादी की यही गति रही तो हम जो योजना लेकर चल रहे हैं वह निर्मूल हो जाएगी। जेनेवा की आबादी ७० लाख है। जबकि तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो अकेले जयपुर जिले की आबादी इसके ज्यादा है। राजस्थान की आबादी ५.७५ करोड़ है। हरियाणा की आबादी १ करोड़ को पार कर गई है। आबादी हमारी तीव्र गति से बढ़ रही है, जबकि रोजगार की व्यवस्था वैसी है नहीं। अत: रोजगार की समस्या भयानक रूप ले रही है। इन सारी स्थितियों को समझते हुए हमें अपनी उत्पादकता में पारदर्शिता लानी होगी। हमें इस तरह के उत्पादन करने होंगे जिनकी गुणवत्ता सर्वश्रेष्ठ हो जिसका मूल्य विश्व के बाजार में सबसे सस्ता हो ताकि उसे बाजार मिले। पहले की चाइना की स्थिति एवं आज की स्थिति में कितनी भिन्नता है। आज कितना बड़ा सार्थक परिवर्तन आया है वहां। इस क्षेत्र में आज बंगाल का भी दृष्टिकोण बदला है। उद्योग-धंधों के वर्तमान हालात के लिए किसे दोषी कहा जाए। मुंबई का सेन्ट्रल एयरपोर्ट होटल ३५-३६ करोड़ में दे दिया गया। वही होटल २० दिन के बाद ७०-८० करोड़ में बेचा गया। बहुत सारे कल-कारखानें जिनकी जमा थी ३००-४०० करोड़ में उन्हें १५००-१६०० करोड़ में दिया गया। इस पर सोचा नहीं गया। जमीन, मकान, फैक्टरी, जेवर अर्जित किए हैं अपनी कमाई से और एक पीढ़ी उसे खर्च करने पर बैठ जाएगी तो आने वाली पीढ़ी के पास क्या होगा। वह भिखारी के रूप में सड़क पर आ जाएगी। इसीलिए बाप-दादा की सम्पत्ति कोई बेचना नहीं चाहता। हमें मिल जुलकर इन समस्याओं का समाधान करना होगा। हम सबको राष्ट्र के विकास में सहयोग देते हुए, उसकी मांगों को मद्देनजर रखते हुए आगे बढ़ने की आवश्यकता है। फैक्टरी में हड़ताल होगी, तोड़फोड़ होगी तो मालिक क्या कर सकता है। मजदूर और मालिक समन्वय बनाकर नहीं चलेंगे तो विषम स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। अच्छा उत्पादन नहीं करने से मालिक मजदूर को तनख्वाह कहां से देगा। इसलिए राष्ट्रहित में जरूरी है कि लेबर और फैक्टरी एक दूसरे का ख्याल रखकर आगे बढ़े तभी उन्नति होगी। इसका लाभ मजदूर हित में, समाजहित में, राष्ट्रहित में निश्चित रूप से होगा। प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह राष्ट्र के बारे में, समाज के बारे में, स्वयं के बारे में गम्भीरता से सोंचे।'' श्री शीशरामजी ने आगे कहा-

''राजस्थान के झुंझनू, जयपुर, बीकानेर, रिवाड़ी, महेन्द्रगढ़, फतेहपुर आदि क्षेत्रों में सुधार एवं विकास के कार्य चालू है। इन क्षेत्र में पानी की समस्या के समाधान किए जा रहे हैं। हरियाणा से प्रचूर परिमाण में सिंचाई एवं उद्योग-धंधे के लिए पानी प्राप्त करने की व्यवस्था की गई है। अंदरूनी २०० गांवों में मीठा पानी के पाइप लगाए गए हैं, पानी उपलब्ध हो रहा है। ३३ करोड़ की योजना से यह कार्य किया गया है। यहां पानी की कमी नहीं आएगी। फतेहपुर में भी पानी की किल्लत को दूर किया जा रहा है। रेलमंत्री के बजट में लुहारू से झुंझनु, बीकानेर, जयपुर को जोड़ने वाली बड़ी लाइन का सर्वे करने का आदेश दिया गया है। सर्वे दो-तीन महीने में हो जाएगा एवं अगले मार्च में बजट के बाद बड़ी रेल लाइन का कार्य प्रारम्भ हो जाएगा। रिवाड़ी से एक बड़ी लाइन महेन्द्रगढ़ आदि के लिए मंजूर हुई है। उत्तर के इन सारे क्षेत्रों को बड़ी लाइन का लाभ मिले इसकी कोशिश मैं कर रहा हूं। मुझसे जो कुछ भी बनेगा बिना किसी भेदभाव के करने की कोशिश करूंगा। झुंझनु में २००० करोड़ रुपये लागत से पावर हाउस लगाने की बात थी लेकिन केन्द्रीय सरकार का राज्य सरकार के साथ समन्वय नहीं होने के कारण वह कार्य नहीं हो सका।

''राजस्थान और हरियाणा में अन्तर नहीं है, होगा भी नहीं। विकास की दृष्टि से आपसी विचार की दृष्टि से हम एक हैं। झुंझनु में, चिड़ावा में कोई मंडी नहीं थी। आज हर कस्बे में मंडी हो गई है। झुंझनु में कम्प्यूटरीकृत रेलवे आरक्षण काउन्टर की व्यवस्था हुई है।

''अपने समाज की एक अच्छी खासियत और परम्परा है कि हम अपनी भाषा के प्रति जागरुक हैं।

*उपस्थिति में - सर्वश्री श्रीकृष्ण खेतान, दयानन्द आर्य, हरिप्रसाद बुधिया, भानीराम सुरेका, मंत्री शीशराम ओला, सीताराम शर्मा, रामअवतार पोद्दार, गौरीशंकर कांया, प्रह्लादराय अग्रवाल, मदनलाल गोयल, किशन महिपाल, रामनिवास चोटिया, किशन महिपाल, लोकनाथ डोकानिया, के.के. शर्मा, सूर्यकरण सारस्वा, ओ.पी. अग्रवाल, एस.एस. खेमका, सत्यनारायण अग्रवाल आदि।*

''आपकी भावनाओं का मैं सम्मान करता हूं। आपका अपनी मातृभूमि के प्रति इतना लगाव है देखकर बहुत खुश हूं। कभी मेरे लायक कोई काम हो जिसे मैं यदि कर सकता हूं तो मुझे खुशी होगी। दिल्ली आएं, पत्र लिखें, कार्य करने में मुझे कोई संकोच नहीं होगा।''

बैठक की अध्यक्षता कर रहे सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने श्री ओला को अपने आप में एक स्तम्भ, एक संस्था बताते हुए कहा कि वे श्रम और रोजगार के क्षेत्र में कुछ ऐसा करके जाएं जिससे समाज का मान बढ़े, हमारे देश का मान बढ़े और हम गर्व से कह सकें कि हमारे समाज के श्री ओला ने यह कार्य किया। हम चाहते हैं कि कोलकाता में एक राजस्थान भवन बने जिसमें श्री ओला केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार पर दबाव डालकर हमारा सहयोग करें। वर्तमान में केन्द्रीय सरकार से यहां (बंगाल में) औद्योगिकरण की सम्भावना है। बंगाल के मुख्यमंत्री भी बंगाल में देशी और विदेशी विनिमेश की अपेक्षा रखते हैं। श्री शर्मा ने सम्मेलन के उद्देश्य एवं कार्यक्रमों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कहा हम समरसता के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।

इसके पूर्व सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने अपने स्वागत भाषण में श्री ओला के राजस्थान में पिछले ३०-४० वर्षों में किए गए प्रशंसनीय कार्यों की जानकारी के साथ-साथ उनकी स्वभावगत विशेषताओं की जानकारी देते हुए कहा कि वे एक सुलझे हुए राजनीतिक एवं अच्छे इन्सान हैं जो व्यक्तिगत मान-सम्मान से कोसों दूर रहते हैं। ऐसे कर्मठ सेवाभावी इन्सान को आज अपने मध्य पाकर हम अभीभूत हैं।

*बायें से - सर्वश्री रामअवतार पोद्दार, सीताराम शर्मा, केन्द्रिय मंत्री शीशराम ओला, भानीराम सुरेका, हरिप्रसाद बुधिया, प्रह्लाद राय अग्रवाल एवं खड़े हुए रतन शाह।*

श्री रतन शाह ने श्री ओला से आग्रह किया कि शेखावाटी में बड़ी लाइन का नहीं होना शेखावाटी की तौहीन है। राजनीति में शेखावाटी का परचम लहराने का श्रेय शीशरामजी ओला को है अत: श्री ओला आज व्रत लें कि शेखावाटी को बड़ी लाइन से जोड़ेंगे।

श्री प्रह्लादराय अग्रवाल ने कहा- शेखावाटी के सभी लोगों को आज विशेष गर्व है कि हमारे समाज के शीशरामजी ओला आज कैबिनेट मंत्री के रूप में हमारे सामने उपस्थित हैं। सबसे प्यार से मिलना, सबका काम कर देना एवं जो पदभार इन्होंने सम्भाल रखा है उस पर बड़ी दक्षता से काम करना उनकी स्वभावगत विशेषता है।

कार्यक्रम के आरम्भ में आज की सभा के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने राजस्थानी पगड़ी पहनाकर श्री ओला का स्वागत किया। श्री ओला के अभिन्न मित्र श्री श्रीकिशन खेतान ने उन्हें शॉल ओढ़ाकर उनका मान बढ़ाया। सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने श्री ओला को पुष्पगुच्छ एवं संयुक्त महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने सम्मेलन साहित्य भेंट की। उपस्थित सभी सदस्यों ने उन्हें माल्याहार से विभूषित किया। श्री हरिप्रसाद बुधिया ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा- जब तक उत्पादकता बढ़ाकर उत्पादन कीमत को कम नहीं किया जाएगा विश्व बाजार में माल बिकना मुश्किल हो जाएगा। आज रोजगार के लिए औद्योगिककरण आवश्यक है।

अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रमुख थे- सर्वश्री लोकनाथ डोकानिया, कृष्ण कुमार शर्मा, गौरीशंकर कायां, ताराचंद पाटोदिया, रामनिवास शर्मा (चोटिया), किशनलाल महिपाल, मदनलाल गोयल, सत्यनारायण अग्रवाल, दयानन्द आर्य, द्वारका प्रसाद डाबड़ीवाल, संदीप डाबड़ीवाल, नथमल बंका, ओमप्रकाश अग्रवाल, सूर्यकरण सारस्वा, सतीश देवड़ा, आत्माराम सोंथलिया आदि।

## धूमधाम से मना रामनिवास मिर्धा का जन्म दिन

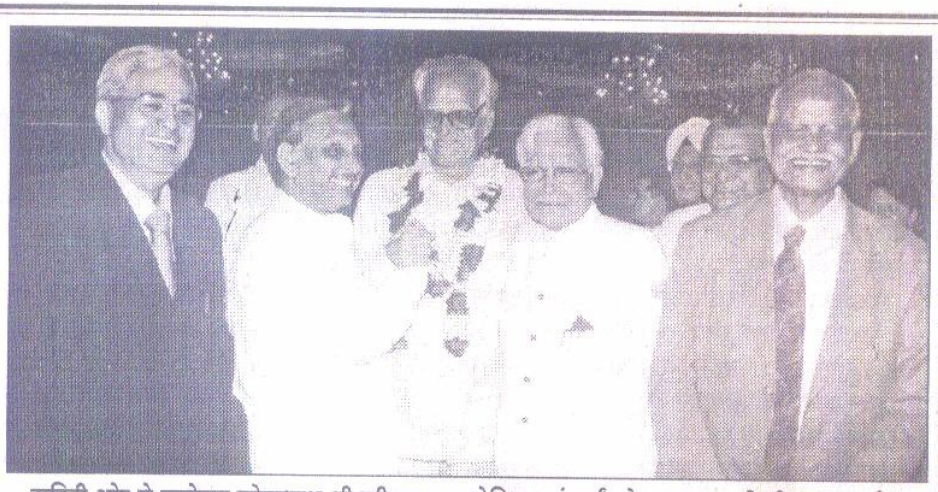

*दाहिनी ओर से सम्मेलन कोषाध्यक्ष श्री हरीप्रसाद कानोड़िया एवं बाईं ओर उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा।*

वरिष्ठ नेता एवं भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री रामनिवास मिर्धा के ८०वें जन्म दिवस के अवसर पर दिल्ली में एक समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में देश के राष्ट्रीय नेता बड़ी संख्या में पधारे। समारोह का आयोजन एवं आतिथ्य सुप्रसिद्ध समाजसेवी हरिप्रसाद कानोड़िया एवं जाने माने समाजिक कार्यकर्त्ता सीताराम शर्मा ने किया। श्री मिर्धा को बधाई देने पधारे मेहमानों में प्रमुख थे-केन्द्रीय गृह मंत्री शिवराज पाटिल, विदेश मंत्री नटवर सिंह, तेल मंत्री मणिशंकर अय्यर, जल संसाधन मंत्री प्रियरंजन दास मुंशी, कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्री आस्कर फर्नाण्डीस, योजना राज्य मंत्री एम.वी. राजशेखरन, राज्यसभा उपाध्यक्ष के. रहमान, के.सी. पन्त, डा. कर्ण सिंह, अशोक गहलोत, ए.आर. अन्तुले, श्रीमती मोहसिना किदवई, सन्तोष बगड़ोदिया, पवन बंसल, एस कृष्ण कुमार, भुपिन्दर सिंह हुड्डा, प्रभा ठाकुर, शशिभूषण आदि। प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने व्यक्तिगत संदेश में कहा कि- 'मैं मिर्धाजी की प्रशासनिक एवं संसदीय क्षमता का बराबर कायल रहा हूँ'।

# बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

## प्रादेशिक पदाधिकारियों का दौरा

प्रादेशिक अध्यक्ष डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल, प्रा. उपाध्यक्ष श्री रामजी भरतिया, प्रा. संगठन संयोजक श्री जयदेव प्रसाद नेमानी एवं श्री बैजनाथ बंका ३१.७.०४ से ४.८.०४ तक आरा, बक्सर, डूमराँव, सासाराम, कुदरा, डेहरी ऑन सोन, औरंगाबाद, गया, जहानाबाद एवं मसौढ़ी शाखा का संगठनात्मक दौरा किया तथा सभी शाखाओं में चुनाव कराया गया।

दिनांक ११.७.०४ को दरभंगा शाखा का चुनाव हुआ। निर्वाचित पदाधिकारी हैं :-

अध्यक्ष - श्री मुरलीधर चौधरी, दरभंगा, मंत्री- श्री विनोद कुमार तुलस्यान, दरभंगा, कोषाध्यक्ष- श्री राज कुमार गोयल, दरभंगा। अन्य दौरों का कार्यक्रम ता. ३१ जुलाई से आरा शाखा की बैठक से प्रारंभ किया गया।

**आरा शाखा :** ३१.७.०४ श्री गोपी राम जसरापुरिया की अध्यक्षता में बैठक हुई जिसमें प्रादेशिक पदाधिकारियों के अतिरिक्त अनेक महानुभाव उपस्थित हुए। प्रा. अध्यक्ष डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि वर्तमान सत्र संगठन सत्र है, इसलिए संस्था को संगठित एवं आर्थिक रूप से ठोस करना हमारा मुख्य उद्देश्य है। जानकारी दी कि अब तक ८० शाखाओं का दौरा कर वहां चुनाव एवं सदस्यता का काम पूरा कराया गया है। सदस्यता अभियान पर विस्तृत जानकारी देते हुए श्री केजड़ीवाल ने अधिकाधिक आजीवन एवं वंशानुगत सदस्य बनाने का आग्रह किया। आपने यह भी जानकारी दी कि नये संविधान के अनुसार सभी वंशानुगत सदस्यों को प्रा. अध्यक्ष के चुनाव में मत देने का अधिकार है। दान पत्र योजना में सहयोग देने हेतु आरा शाखा को धन्यवाद देते हुए इस योजना के द्वितीय पुरस्कार के विजेता श्री श्याम सुन्दर खेमानी को माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया गया।

प्रा. संगठन संयोजक एवं मुजफ्फरपुर शाखा के मंत्री श्री जयदेव प्रसाद नेमानी ने पूर्णिया, कोशी, दरभंगा, तिरहुत प्रमंडल की शाखाओं में दौरे की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि सभी शाखाएं निष्क्रिय हो गई थी, उन्हें जागृत किया गया है। आपने कहा कि उच्च वर्ग वाले व्यक्ति मध्य वर्ग के लोगों को जब तक साथ लेकर नहीं चलेंगे तब तक संगठन नहीं हो सकता। उन्हें तन-मन-धन से सहयोग देकर साथ लेकर चलने की आवश्यकता है। सम्पन्न व्यक्तियों से धन एवं मध्यम वर्ग से समय देने का आग्रह उन्होंने किया। प्रा. उपाध्यक्ष श्री रामजी भरतिया ने संगठन पर प्रकाश डालते हुए सम्मेलन के गठन के उद्देश्य की विस्तृत जानकारी दी। कहा कि १० प्रतिशत लोग सदस्य बने तो बहुत है लेकिन यही कमी है। हम लोग असुरक्षित हो गये हैं। उन्होंने मेलजोल और बढ़ाने का सुझाव दिया। सामूहिक विवाह की महत्ता पर कहा कि अब तो लड़कों की संख्या घट गई है। शादी कराने के लिए पहले लड़की वाले कहते

थे अब लड़के वाले कहने लगे हैं कि मेरे लड़के की शादी कहीं करा दे। श्री बैजनाथ बंका, मुजफ्फरपुर, ने संगठन पर बल दिया और अपनी मानसिकता बदलने का सुझाव दिया।

**बक्सर शाखा :** ०१.०८.०४ को प्रादेशिक पदाधिकारियों के आगमन पर श्री कैलाश प्र. अग्रवाल की अध्यक्षता में बक्सर शाखा की बैठक हुई। निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से हुआ।

१. श्री किशन लाल सराफ, अध्यक्ष २. नारायण प्र. लोहिया, उपाध्यक्ष ३. श्री गिरधारीलाल खेमका, मंत्री ४. श्री रतन लाल अग्रवाल, सं. मंत्री ५. श्री राजकरण कच्छल, कोषाध्यक्ष ६. श्री गिरधारी लाल खेमका, प्र.सं. सदस्य ७. श्री कैलाश प्र. अग्रवाल कार्यकारिणी सदस्य।

शाखा मंत्री श्री गिरधारी लाल खेमका ने प्रादेशिक अध्यक्ष एवं प्रा. पदाधिकारियों को स्वागत करते हुए सुझाव दिया कि ५०/- रु. सदस्यता शुल्क में से २५/- रु. प्रदेश का शुल्क है इसके बदले संस्था शुल्क निर्धारित करना चाहिए ताकि समाज के गरीब वर्ग के लोगों को शाखा से जोड़ा जा सके। आपने सुझाव दिया कि समाज में कोई अप्रिय घटना होती है तो पूरे प्रदेश में सभी लोग उस दिन काली पट्टी लगाकर उस दिन विरोध करे। कोई व्यक्ति का निधन होता है तो सफेद पट्टी लगाकर शोक व्यक्त करें। सभा को सम्बोधित करते हुए प्रादेशिक अध्यक्ष डा. केजड़ीवाल ने कहा कि शाखाओं को सक्रिय करने के निमित्त लगातार दौरा किया जा रहा है। दौरे के बाद शाखाओं में जागृति आई है। शाखा को जागृत रखने के लिए प्रत्येक माह बैठक करने एवं कार्यक्रम करते रहने का उन्होंने सुझाव दिया। श्री केजड़ीवाल ने सेवा पर बल देते हुए राजनीति में सजग होने का आग्रह किया। अ.भा.मा. सम्मेलन के मुम्बई अधिवेशन में राजनीति में आने के लिए प्रस्ताव पास किया गया है। उन्होंने सुझाव दिया कि पहले समाज में स्थान बनावे तब चुनाव लड़े। दूसरों की सेवा जरूर करे। हमारा सामाजिक दायित्व होता है कि असहाय व्यक्तियों को मदद कर उन्हें ऊपर उठाये।

**डूमराँव शाखा :** ०१.०८.०४ को श्री अवध बिहारी खेमानी की अध्यक्षता में डूमराँव शाखा की बैठक हुई निम्न पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से हुआ। श्री अवध बिहारी खेमानी अध्यक्ष, श्री अजीत कुमार अग्रवाल उपाध्यक्ष, श्री चन्दप्रकाश बजाज उपाध्यक्ष, श्री पवन कुमार बजाज मंत्री, डा. नरेश शर्मा सं. मंत्री, श्री शशीकान्त बजाज स. मंत्री, श्री शिवजी खेमानी कोषाध्यक्ष, श्री चन्दप्रकाश बजाज प्रा. सं. सदस्य।

**सासाराम शाखा :** ०२.०८.०४ को श्री रामौतार तुलस्यान की अध्यक्षता में सासाराम शाखा की बैठक हुई। निम्न पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से हुआ। श्री दिनेश चन्द गोयल, अध्यक्ष, श्री बी.एन. सर्राफ अधिवक्ता, उपाध्यक्ष, श्री विजय कु. भिवानीवाल उपाध्यक्ष, श्री रामगोपाल शर्मा, मंत्री, श्री प्रभात किरण केजड़ीवाल सं. मंत्री, श्री विजय कु. तुलस्यान सं. मंत्री, श्री कैलाश प्र. कानोड़िया कोषाध्यक्ष, श्री रामगोपाल शर्मा, प्रा. सं. सदस्य।

प्रादेशिक अध्यक्ष ने संगठन से संबंधित शाखा द्वारा किये जाने वाले कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए १५ विभागीय संयोजक बनाकर सभी विभागों द्वारा कार्यक्रम करने का सुझाव दिया।

**कुदरा शाखा :** श्री रामपाल पालीवाल की अध्यक्षता में कूदरा शाखा की बैठक हुई, निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से हुआ। श्री राम प्र. पालड़ीवाल अध्यक्ष, श्री श्याम सुन्दर सरावगी उपाध्यक्ष, श्री ओमप्रकाश पालड़ीवाल उपाध्यक्ष, श्रीपाल जैन मंत्री, श्री हरि प्रसाद अग्रवाल सं. मंत्री, श्री ओमप्रकाश केजड़ीवाल सं. मंत्री, श्री अशोक कु. केजड़ीवाल कोषाध्यक्ष, श्री ओम प्रकाश पालड़ीवाल प्रा. सदस्य।

**डेहरी शाखा :** ०२.०८.०४ को श्री बनवारी लाल कारीवाल की अध्यक्षता में डेहरी शाखा की बैठक हुई जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से हुआ। श्री बनवारी लाल कारीवाल अध्यक्ष, डा. सत्यनारायण बजाज उपाध्यक्ष, श्री अरूण मारोदिया उपाध्यक्ष, श्री चन्द्र कुमार शर्मा, मंत्री, श्री श्याम अग्रवाल सं. मंत्री, श्री सुभाष कुमार कामदार कोषाध्यक्ष।

**औरंगाबाद शाखा :** ०३.०८.०४ औरंगाबाद शाखा की बैठक हुई, निम्नलिखित पदाधिकारों का चयन सर्वसम्मति से हुआ।

अध्यक्ष- श्री कन्हैयालाल जैन, उपाध्यक्ष- श्री महावीर प्रसाद जैन, उपाध्यक्ष- श्री बाबू लाल दारूका, मंत्री- श्री बाल कृष्ण अग्रवाल, सं. मंत्री- श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, सं. मंत्री- श्री संजीव कुमार अग्रवाल, कोषाध्यक्ष- श्री संजय कुमार सोंथालिया, प्रा. सं. सदस्य- डा. बाबू लाल दारूका।

शिक्षा समिति की ओर से डा. बाबू लाल दारूका ने प्रादेशिक पदाधिकारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए निम्न सुझाव दिया :-

१. सभी आजीवन एवं वंशानुगत सदस्यों को परिचय पत्र देना चाहिए।

२. सभी आजीवन एवं वंशानुगत सदस्यों को सुरक्षा प्रदान करने तथा उनका सामूहिक बीमा कराने का सुझाव दिया।

३. पटना में सदस्यों के लिए गेस्ट हाउस बनाना चाहिए।

प्रादेशिक अध्यक्ष डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल ने श्री दारूका के सुझाव की सराहना की।

**नवीनगर शाखा :** ०३.०८.०४ श्री काशीनाथ कारीवाल की अध्यक्षता में शाखा की बैठक हुई, निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से हुआ।

अध्यक्ष- श्री कैलाश नाथ कारीवाल, उपाध्यक्ष- श्री सुशील कुमार बैरोलिया, उपाध्यक्ष- श्री अशोक कुमार चौधरी, मंत्री- श्री

शिव कुमार चौधरी, सं. मंत्री- श्री सज्जन कुमार कारीवाल, सं. मंत्री- श्री नरेश कुमार अग्रवाल, कोषाध्यक्ष- श्री रमेश कुमार केडिया, प्रा. सं. स. - श्री कैलाश नाथ कारीवाल।

प्रादेशिक अध्यक्ष ने कहा कि बराबर बैठक करने से शाखा में सक्रियता बनी रहती है। समाज के अगर कोई गरीब भाई हो तो सब मिलकर उनका मकान बनवा दें, उनकी लड़की की शादी करा दे, ताकि वे आपसे जुड़ सके और संगठन मजबूत हो सके।

**गया शाखा :** ०३.०८.०४ को श्री रूढ़मल जी की अध्यक्षता में बैठक हुई, जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से हुआ।

अध्यक्ष- श्री शिव राम डालमिया, उपाध्यक्ष- श्री सज्जन कुमार सुल्तानिया, उपाध्यक्ष- श्री रूडमल अग्रवाल, मंत्री- शिव कुमार अग्रवाल, मंत्री- शिव कुमार अग्रवाल, सं. मंत्री- श्री राज कुमार पचेरीवाल, सं. मंत्री- श्री मोहन कुमार झुनझुनवाला, कोषाध्यक्ष- श्री सुरेन्द्र कुमार मोर, प्रा. सं. स.- श्री राज कुमार पचेरीवाला।

**जहानाबाद शाखा :** ०४.०८.०४ को श्री निरंजनलाल खेतान की अध्यक्षता में जहानाबाद शाखा की बैठक हुई। प्रादेशिक अध्यक्ष डा. केजड़ीवाल ने कहा कि आजीवन एवं वंशानुगत सदस्यता शुल्क की राशि पहले ट्रस्ट में जमा किया जाता था, उसके ब्याज की दर तेरह प्रतिशत से घटकर छः प्रतिशत हो चुकी है, जिससे सम्मेलन का कार्य सुचारू रूप से चलाना संभव नहीं है। इस घाटे को पूरा करने के लिए दुगुनी राशि कोष में जमा करानी होगी। इसके लिए इस वर्ष यह निर्णय लिया गया कि नये आजीवन एवं नये वंशानुगत सदस्यों से प्राप्त राशि का आधा हिस्सा सम्मेलन कार्य में तथा आधा हिस्सा ट्रस्ट में जमा किया गया। अतः सम्मेलन को चलाने के लिए अधिक से अधिक वंशानुगत एवं आजीवन सदस्य बने।

**मसौढ़ी शाखा :** ०४.०८.०४ को श्री रामौतार प्रेमराजका की अध्यक्षता में मसौढ़ी शाखा की बैठक हुई, जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से हुआ।

अध्यक्ष- श्री रामौतार प्रेमराजका, उपाध्यक्ष- श्री भोलानाथ प्रेमराजका, उपाध्यक्ष- श्री कृष्ण कुमार कारीवाल, मंत्री- श्री शंकर प्रसाद टेकरीवाल, सं. मंत्री- श्री अजय कुमार प्रेमराजका, सं. मंत्री- श्री बद्री प्रसाद डालमिया, कोषाध्यक्ष- श्री विनोद कुमार डालमिया।

**श्री रामौतार प्रेमराजका ने जानकारी दी कि श्रीकृष्ण राईस मील के मैनेजर श्री रामचन्द्र जी भरतिया के आग्रह पर मील के मालिक द्वारा ४ कट्ठा जमीन सम्मेलन को दी गई है। जमीन का कागज मेरे पास है।**

समाज की गरीब लड़की की शादी कराना प्रथम दायित्व परिवार का है। उसके बाद समाज का है। राजनीति में भागीदारी निभाने के लिए संगठनात्मक ढांचा सुधारने का सुझाव दिया।

**स्थायी समिति की बैठक :** दिनांक ०८.०८.०४ को बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन स्थाई समिति की बैठक उपाध्यक्ष श्री किशन लाल डागा की अध्यक्षता में हुई। सभापति के उद्‌बोधन के बाद गत बैठक की कार्रवाई की सम्पुष्टि की गई। गहन विचार-विमर्श के पश्चात सर्व सम्मति से दो लाख रु. का मियादी राशि स्थायी कोष में स्थानान्तरित करने का निर्णय लिया गया तथा प्रस्ताव पास किया गया।

भावी कार्यक्रमों पर विचार : भावी कार्यक्रमों पर श्री रामपाल अग्रवाल 'नूतन', श्री महेश जालान, श्री कमल नोपानी, डा. सुनील अग्रवाल ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

## पटना : मतदाता सूची प्रकाशित

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, पटना द्वारा सत्र २००५-०७ के अध्यक्ष पद के चुनाव हेतु मतदाता सूची प्रकाशित की गई जिसमें राज्य से ३१५ एवं राज्य से बाहर के २५ मतदाताओं के नाम हैं। नामांकन की अन्तिम तिथि १० सितम्बर '०४ है एवं चुनाव सम्भवतः ३ अक्टूबर २००४ को होगा ऐसा चुनाव अधिकारी श्री बद्री प्रसाद भीमसरिया ने ज्ञापित किया है।

## मुजफ्फरपुर : गोपी कृष्ण मोर का अपहरण एवं विरोध

०२.०८.०४ मुजफ्फरपुर से व्यवसायी ७० वर्षीय गोपी कृष्ण मोर का अज्ञात अपराधियों ने अपहरण कर लिया। अपहरण की सूचना मिलते ही डी.आई.जी. रवीन्द्र कुमार सिंह ने श्री मोर के निवास स्थान पर पहुंचकर वस्तु स्थिति की जानकारी प्राप्त की। नगर विधायक विजयेन्द्र चौधरी की उपस्थिति में नगर थाना प्रभारी ने अपहृत मोर के पुत्र के बयान पर प्राथमिकी दर्ज की है। श्री मोर के अपहरण के विरोध में उत्तर बिहार वाणिज्य परिषद एवं बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन नगर शाखा द्वारा ७.८.२००४ को सामूहिक रूप से समाहर्त्ता कार्यालय के समक्ष दो घंटे का धरना दिया गया। जिसके अन्तर्गत प्रान्तीय अध्यक्ष डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल (अध्यक्ष बि.प्रा.मा. सम्मेलन) ने अपहरण, हत्या इत्यादि का कड़ा विरोध करते हुए व्यापारियों को एकजुट होने का आह्वान किया एवं प्रशासन पर त्वरित रूप से दबाव डालने की सलाह दी।

श्री हनुमान मल बोथरा (अध्यक्ष उत्तर बिहार वाणिज्य परिषद) ने ०९.०८.२००४ को मुजफ्फरपुर की सभी दुकानों के बंद का आह्वान किया।

# पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

## लखिमपुर : बाढ़ राहत शिविर में तीन मंचों का संयुक्त अभियान

८ अगस्त २००४। पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन, पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन एवं युवा मंच लखिमपुर शाखा द्वारा स्थानीय विद्यालय में बाढ़ राहत शिविर केन्द्र लगाया गया, जिसके माध्यम से बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में पशुओं को चारा, महिलाओं के लिए मेखला, चादर तथा ब्लाउज का सेट साथ में चीनी, चायपत्ती, मोमबत्ती, मच्छर भगाने की टिकिया, माचिश, ब्रेड, बिस्कुट, खाने का तेल, नमक इत्यादि वितरित किए गए। शिविर में सहायक थे स्थानीय सर्वश्री घिरुद सैकिया, तुशील चैतिया, हाई स्कूल के हेडमास्टर तथा कई गांवों के मुख्य। तीनों मंच के सहायक के रूप में उपस्थित थे सर्वश्री नारायण प्रसाद पारिक, प्रह्लादराय अग्रवाल, हीरालाल जैन, शंकरलाल राठी, बलवीर शर्मा, मारिकलाल दम्मानी, महावीर अग्रवाल, महिला मंच की अध्यक्षा श्रीमती लीला देवी पटवारी, उपाध्यक्षा श्रीमती पिस्तादेवी जैन तथा सदस्या श्रीमती मंजु जैन, मारवाड़ी युवा मंच के उपाध्यक्ष श्री सुशील शर्मा, सचिव अमित राठी, राजू भट्टड़, दीपेश अग्रवाल, उमेश बाहेती, राजू शर्मा, पायल बैद, निर्मल शर्मा आदि। राहत कार्य सामग्री ढकेड़ागुड़ी, आमगुड़ी, हिलोदारी, देवोलिया, गुआल, कोपोहुआ, पुथिखायी, गोविन्दपुर, हासोतियाल, सेतिया, सापोरी आदि गांवों के कुल ६०० परिवारों को प्रदान की गई।

## लखिमपुर : स्वाधीनता दिवस पर कारागार के कैदियों को मिष्टान्न वितरण

१५ अगस्त २००४। सम्मेलन की लखिमपुर शाखा द्वारा स्वाधीनता दिवस पर लखिमपुर जिला कारागार के २६० कैदियों को बिस्कुट व मिष्टान्न वितरण किए गए। शाखाध्यक्ष श्री नारायण प्रसाद पारिख ने उपस्थित सभी लोगों को व कारावासियों को स्वाधीनता दिवस की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर उपस्थित अन्य पदाधिकारीगणों में थे सर्वश्री हीरालाल जैन, सचिव, बलवीर शर्मा, कोषाध्यक्ष, बलवान शर्मा, संयुक्त सचिव, शंकरलाल राठी, सह सचिव एवं कार्यकारिणी के विनोद हरलालका, माणिकलाल दम्मानी, बाबूलाल तोषनीवाल तथा युवा मंच के उपाध्यक्ष सुशील शर्मा। अन्य सहायकों में थे जेल अधीक्षक सर्वश्री रमणीकांत नाथ, जेलर विद्याधर सैकिया, सहायक जेलर दिलीप सैकिया, श्रीमती अनिला बोरगोहांई, गोपाल कुटुग व निपेन दास।

## नगांव : शाखा की त्रैमासिक रिपोर्ट

शाखा द्वारा अप्रैल से जुलाई २००४ तक निम्न कार्य किए गए - ● अप्रैल में नगांव जिले में आए विनाशकारी तूफान से रूपही अंचल में व्यापक क्षति हुई। गरीब तबके के अनेक लोग बेघर हुए। प्रशासन एवं अन्य संस्थाओं की आवाज पर सम्मेलन की नगांव शाखा ने प्रभावितों के बीच २८ प्लास्टिक त्रिपालों का वितरण किया। ● गत चुनावों के दौरान एक राजनीतिक नेता द्वारा एक सभा में मारवाड़ी समाज के प्रति अशोभनीय एवं गैर जिम्मेदाराना टिप्पणी पर नगांव शाखा द्वारा कड़ा प्रतिवाद किया गया। बढ़ते दबाव के कारण उक्त नेता ने क्षमा याचना की एवं सम्बन्धित नेता के प्रति अनुशासनात्मक कार्यवाही की गई। ● असमिया संस्कृति के प्रतीक रूपकुंवर ज्योतिप्रसाद अग्रवाला की जन्म तिथि १७ जून को इनकी आगम प्रतिमा पर फूल माला चढ़ाई गई एवं दीप प्रज्वलित किए गए।

# उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

## राउरकेला : अखिल भारतीय समिति की बैठक में बलांगीर शाखा की भागीदारी

२२ अगस्त २००४। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की नये सत्र की प्रथम बैठक राउरकेला में हुई, जिसमें बलांगीर, कालाहांडी और सम्बलपुर से निम्नलिखित २३ सदस्यों ने भाग लिया- सम्बलपुर से सर्वश्री डॉ. राधेश्याम अग्रवाल, प्रांतीय उपाध्यक्ष, दिनेश अग्रवाल, शाखाध्यक्ष, बनवारीलाल अग्रवाल, हजारीमल ओझा। सोनपुर से सर्वश्री श्यामसुन्दर अग्रवाल, शाखाध्यक्ष, दिलीप कुमार अग्रवाल, शाखा सचिव। कैसिंगा से सर्वश्री नेकीराम अग्रवाल, जगदीश प्रसाद अग्रवाल। भवानीपटना से श्री किशनलाल अग्रवाल, प्रांतीय उपाध्यक्ष, कांटाबांजी से श्री मौजीराम जैन। सैंतला से श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल। लोइसिंगा से सर्वश्री रामावतार अग्रवाल, शाखाध्यक्ष, श्यामसुन्दर अग्रवाल। टिटिलागढ़ से सर्वश्री सूरजभान जैन,

शाखाध्यक्ष, मामराज जैन, शाखा सचिव, गोपाल लाठ, जगदीश प्रसाद अग्रवाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष। बेलपाड़ा से श्री शंकर प्रसाद जैन। बलांगीर से सर्वश्री गौरीशंकर अग्रवाल, शाखाध्यक्ष, रामकुमार अग्रवाल, शाखा उपाध्यक्ष, वेदप्रकाश अग्रवाल, शाखा सचिव, नकुल प्रसाद अग्रवाल एवं प्रदीप कुमार मित्तल।

उक्त अवसर पर प्रांतीय अध्यक्ष श्री विश्वनाथ मारोठिया द्वारा यह घोषणा कर कि उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का आगामी अधिवेशन बलांगीर में होगा, हमारे उत्साह एवं मान को बढ़ाया है।

# अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

## जूनागढ़ : तीज समारोह आयोजित

१९ अगस्त २००४। जूनागढ़ मारवाड़ी महिला समिति द्वारा सामाजिक एकता की प्रतीक तीज मेला का आयोजन किया गया। इस वर्ष समारोह में मेंहदी प्रतियोगिता व नाना प्रकार के स्टाल का आयोजन किया गया, जिसमें जूनागढ़ की २०० से अधिक महिलाओं व युवतियों ने भाग लिया। इसके पूर्व १५ अगस्त को मारवाड़ी महिला समिति द्वारा गायत्री मंदिर में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। इसी दिन युवा मंच द्वारा सरकारी अस्पताल में रोगियों को फल वितरण किए गए। युवा मंच द्वारा १२ एवं १३ अगस्त को गायत्री मंदिर में ही एक शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें प्रज्ञा राठी द्वारा महिलाओं व युवतियों को साड़ी पहनने के २८ स्टाइल व मेंहदी लगाने के नये-नये तरीकों के विषय में प्रशिक्षण दिया गया।

## बलांगीर शाखा : श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ सम्पन्न

२ अगस्त २००४। मारवाड़ी महिला समिति की बलांगीर शाखा द्वारा सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ आयोजन बलांगीर में किया गया जिसमें भद्रवती पुरी धाम, भरोड़ा, गुजरात से पधारे श्री श्री १०८ आचार्य टहल किशोरजी ने भागवत कथा का वाचन किया। इस अवसर पर कलश शोभायात्रा निकाली गयी। शोभा यात्रा में समिति की सभी सदस्याओं के साथ-साथ मारवाड़ी युवा मंच के सदस्यों ने भी हिस्सा लिया। समिति की अध्यक्षा श्रीमती मीरा केजड़ीवाल ने बलांगीर के सभी भागवत प्रेमियों के प्रति आभार प्रकट किया।

# अखिल भारतीय मारवाड़ी युवामंच

## मोतीपुर : बाढ़ पीड़ितों को राहत सामग्री प्रदान

मारवाड़ी युवा मंच, मोतीपुर शाखा द्वारा १३ जुलाई से १ अगस्त तक लगातार बाढ़ पीड़ितों के बीच राहत के रूप में चिउड़ा, गुड़, बिस्कुट, मोमबत्ती, दियासलाई, वस्त्र, वर्तन एवं रोटी-सब्जी आदि का वितरण किया गया। जरूरतमंदों को नि:शुल्क चिकित्सा की भी व्यवस्था कराई गई।

बिहार युवा मंच के प्रांतीय सहायक सचिव सह जिला प्राकृतिक आपदा समिति के सदस्य चौधरी संजय अग्रवाल, बाढ़ राहत समिति के संयोजक एवं शाखा अध्यक्ष रमेश अग्रवाल के नेतृत्व में राहत कार्य किया गया।

### बाल-बाल बचे

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में राहत वितरण कर लौट रहे मारवाड़ी युवा मंच के सदस्य नदी में डुबने से बाल-बाल बच गये। सदस्य दल चुल्हाई विशुनपुर गंडक नदी से नाव से राहत वितरण कर लौट रहे थे। दल में दीपक जालान, राजकुमार साह, जगदीश कानोड़िया सहित अन्य लोग नाव पर थे।

## लडुगांव शाखा : स्वाधीनता दिवस समारोह एवं तीज मिलन समारोह सम्पन्न

१५ अगस्त २००४। मंच की लडुगांव शाखा के सचिव श्री पुनमचंद गोयल द्वारा प्राप्त सूचनानुसार शाखा द्वारा स्वाधीनता दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। ध्वजोत्तोलन स्थानीय स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के शाखा प्रबंधक श्री रघुनाथ पटनायक ने किया। राष्ट्रीय गीत के पश्चात् उपस्थित सभी युवा बंधुओं ने राष्ट्रीय ध्वजा को पुष्पांजलि अर्पित कर उनके प्रति सम्मान प्रकट किया। शाखाध्यक्ष श्री बजरंगलाल गोयल ने युवाओं में उत्साह का संचार करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

१९ अगस्त २००४। लड्डुगांव शाखा द्वारा तीज मिलन समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें गांव की सभी महिला एवं युवतियों ने एकत्रित होकर झुला झुलने का आनन्द लिया। शाखा के उत्साही युवकों ने व्यवस्था एवं सुरक्षा की दृष्टि से पूर्ण सहयोग देकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

# अन्य संस्थायें

## कद छोटा पर काम बड़ा

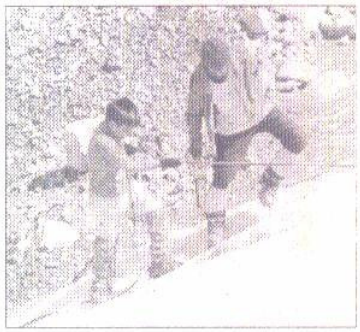

'होनहार बीरवान के होत चिकने पात' कहावत को चरितार्थ किया है अपने समाज के प्रांजय झुरिया ने १८,३०० फुट ऊंची पर्वतमाला को अपने नन्हें पैरों से लांघ कर। १ अगस्त २००४ को अपनी उम्र के ९ वर्ष पूरे करने वाले प्राजय ने १८,३०० फुट ऊंची पर्वत की चोटी पर चढ़ाई कर इस नन्ही सी उम्र में यह उपलब्धि हासिल करने वाला देश का पहला और विश्व का सम्भवत: दूसरा पर्वतारोही बन गया है। प्रांजय ने पर्वतारोही दल के मुखिया अपने पिता अशोक झुरिया एवं तीन अन्य सदस्यों के सात १७,२३८ फुट ऊंचे सेतुधर और १८,३०० फुट ऊंचे लद्दाखी शिखर पर चढ़ाई करने में सफलता हासिल की है और अब उसका नाम 'लिमका बुक ऑफ वर्ल्ड रिकाईस' तथा अन्य रिकाईस पुस्तिकाओं में दर्ज किए जा रहे हैं। गुवाहाटी के मारिया पब्लिक स्कूल में तीसरी कक्षा में पढ़ने वाले प्रांजय का पांच वर्ष की उम्र में ही असम माउन्टेनियरिंग क्लब में विधिवत रॉक क्लाइम्बिंग और ट्रैकिंग की ट्रेनिंग दी गई। १८ जुलाई को सोलंग नाला से शुभारंभ हुए ट्रैकिंग के इस अभियान का सिलसिला सेतुधर शिखर होते हुए २४ जुलाई को लद्दाखी चोटी पर तिरंगा फहराने तक चला। ३१ जुलाई को प्रांजय का अपने पिता के साथ वापस आने पर गोपीनाथ बरदलोई हवाई अड्डे पर असम माउन्टेनियरिंग क्लब के अधिकारियों व अपनी माता एवं बहनों व अन्य परिजनों द्वारा भारी स्वागत किया गया।

'लिमका बुक ऑफ रिकाईस' २००४ के मुताबिक बदोदड़ा के ११ वर्षीय प्रार्थना एस. वैद्या ने १७ जून २००१ को २०,०७९ फीट ऊंची कालिंदी चोटी को जय किया था एवं दिल्ली की सात वर्षीय साक्षी अपने पांच वर्षीय भाई आक्षांश दोगरा के सात ३१ मई २००२ को १२,७७० फीट ऊंची उत्तरांचल के गोमुख को अतिक्रम किया था।

## श्री ओम लड़िया द्वारा रक्तदान करने का रिकार्ड

ओम लड़िया जो अपने मित्रों तथा परिचितों में ओमजी या 'खूनी दोस्त' के के नाम से मशहूर हैं तथा जिनका मानना है कि जरूरतमंद की जरूरत पूरी करना सच्ची सेवा है। सन् १९६७ में २६ वर्ष की आयु में जब इन्हें रक्त तथा स्वेच्छया रक्तदान के महत्व का एहसास हुआ। ६३ वर्ष की आयु तक ये ८६ बार स्वेच्छया रक्तदान कर चुके है और कहते हैं कि जरूरत हुई तो रक्तदान के लिए अभी भी प्रस्तुत हूं। हालांकि ६० वर्ष की आयु के पश्चात डाक्टर रक्तदान को निरूत्साहित करते है।

लायन्स क्लब की विभिन्न सेवामूलक गतिविधियों में ओमजी लगभग २८ वर्षों से सक्रिय हैं। परिवार-नियोजन के क्षेत्र में भी सक्रिय रूप से काम कर चुके हैं। इन दिनों ये मरणोपरांत नेत्रदान के प्रचार-प्रसार कार्य में यथासाध्य जुटे हैं। अब तक ये आठ व्यक्तियों से मरणोपरांत नेत्रदान करा चुके हैं और उन नेत्रदाताओं में तीन इनके परिवार के सदस्य थे। इनका कहना है कि मरणोपरांत मृत व्यक्ति को नेत्रों सहित या तो गाड़ दिया जाता है या जला दिया जाता है। क्रांतिकारी विचारधारा के व्यक्ति ओम लड़िया रूढ़ियों को तोड़ने के पक्षधर है। इनका कहना है कि सामाजिक परिपाटियों तथा प्रचलित परम्पराओं में युगानुकूल संशोधन एवं परिवर्तन होते रहना चाहिए तथा लकीर के फकीर बन कर रूढ़ियों का अंधानुकरण नहीं करना चाहिए।

# शोक संवेदना

श्री रामनिवास शर्मा (हैदराबाद) का स्वर्गवास तारीख ७ सितम्बर को हो गया। एक तरह से आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के जन्मदाता एवं उसे काफी प्रभावी बनाने में उनकी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। रामनिवास जी अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष एवं आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष के अलावा राजस्थानी प्रगति समाज, राजस्थान ब्राह्मण सभा आदि कई महत्वपूर्ण संस्थाओं के अध्यक्ष एवं विशिष्ट कार्यकर्त्ता रहे। उनके अथक प्रयासों से हैदराबाद के मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय की स्थापना हुई। महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए वे निरंतर प्रयत्नशील रहे। स्वाधीनता संग्राम में भी उनकी काफी महत्वपूर्ण भूमिका थी। तारीख १२ सितम्बर को हैदराबाद में हुई शोक-सभा में आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री राभाकिशन गुप्ता, मंत्री श्री रमेश कुमार बंग एवं अनेकानेक विशिष्टतम सज्जनों ने इनके प्रति अपनी शोक संवेदना प्रकट की।

# हंसते मुस्कराते हुए जिन्दगी गुजारिये

हिम्मत न हारिये, प्रभु न विसारिये।
हंसते मुस्कराते हुए जिन्दगी गुजारिये।।
हंसते मुस्कराते हुए जीना जिनको आ गया।
टूटे हुए दिलों को सीना जिनको आ गया।।
ऐसे देवताओं के चरणों को पखारिये
उनकी तरह नेक बन के जिन्दगी गुजारिये... हंसते
काम ऐसे कीजिये कि जिनसे हो सब का भला
बातें ऐसी कीजिये जिनमें हो अमृत भरा
मीठी बोली बोल सबको प्रेम से पुकारिये
कड़वे बोल बोल के न जिन्दगी गुजारिये... हंसते
मुश्किलों मुसीबतों का, करना है जो खात्मा
हर समय कहिये तेरा शुक्र है परमात्मा
गिले शिकवे कर के अपना हाल न बिगाड़िये
जैसे प्रभु रखे वैसे जिन्दगी गुजारिये... हंसते
शुभ कर्म करते हुए दु:ख भी अगर पा रहे
पिछले पाप कर्मों को भुगतान वो भुगता रहे
आगे मत उठाइये पिछले बोझ उतारिये
गलतियों से बचते हुए जिन्दगी गुजारिये... हंसते
दिल की नोट बुक पे बातें नोट कर लीजिए
बनके सच्चे सेवक सच्चे दिल से अमल कीजिए
करके अमल बनके कमल, तरिए और तारिए
जग में जगमगाती हुई जिन्दगी गुजारिये... हंसते

# धर्म सदा आलोकित है

धर्म जगत् की रक्षा करता ज्ञान से,
मानव धन्य हुआ है इसके दान से।
धर्म हमें जीने का ढंग सिखाता है,
धर्म हमें उन्नति का पथ दिखलाता है,
धर्म बुराई से हर समय बचाता है,
धर्म हमारे जीवन का निर्माता है,
धर्म हुआ है अब वंचित सम्मान से,
मानव धन्य हुआ है इसके दान से।
कहता धर्म, जगत में सबको प्यार करो,
सेवा करो सदा सबकी, उपकार करो,
हर प्राणी से प्रेमभरा व्यवहार करो,
ये शिक्षाएं ऊंची है हिमवान् से,
मानव धन्य हुआ है इसके दान से।
हिंसा, द्वेष, घृणा फैलाता धर्म नहीं,
आडम्बर, पाखण्ड बढ़ाता धर्म नहीं,
भेदभाव का जहर पिलाता धर्म नहीं,
कभी नाश का पथ दिखलाता धर्म नहीं,
धर्म सदा आलोकित है विज्ञान से।
मानव धन्य हुआ है इसके दान से।

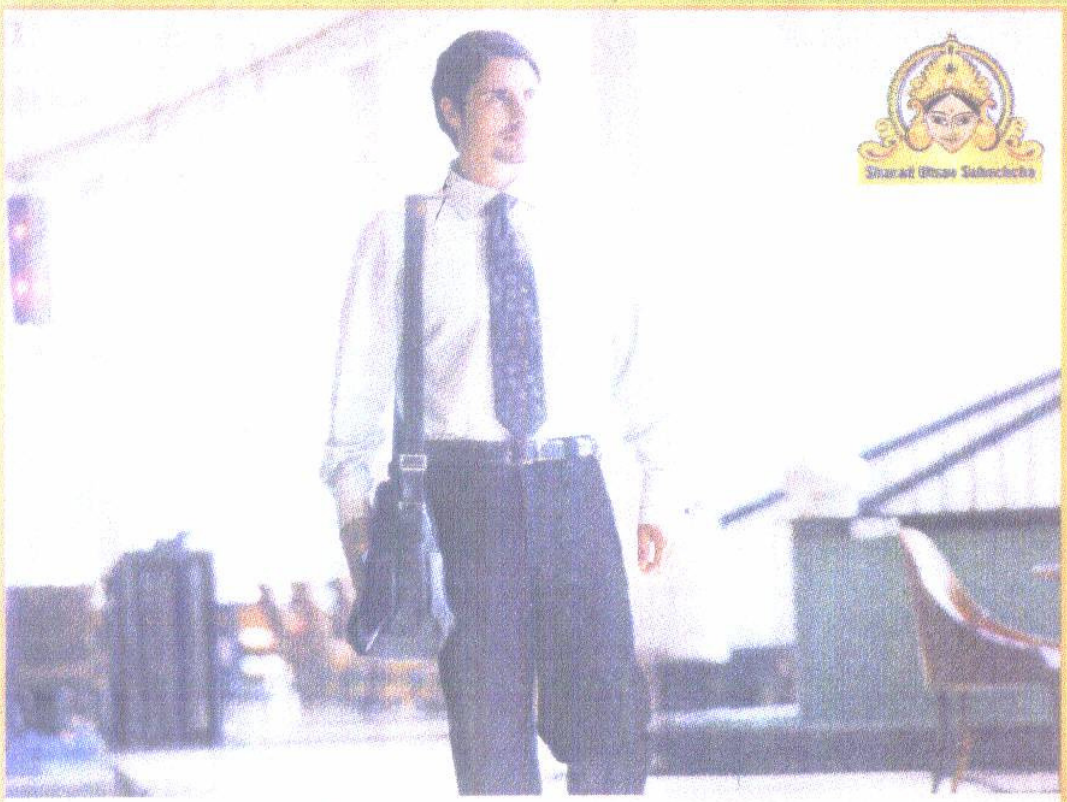

Trouser fabrics
for every mood.

The Complete Man
Raymond
SINCE 1925

**Selling Agents**
B.M.A. Trade & Holdings (P) Ltd.
36, Kohinoor, 105, Park St. 7th Floor, Kolkata- 700016
Phone : 2226-9995/3849, E-mail : purityasc@hotmail.com

**From :**
**All India Marwari Federation**
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

**To,**